बजरंग बली संगठन

इंदा छोई गांव की रामायण

इ तहास

PARDEEP GHORELA;ANIL KATIWAL;SUNIL HODKHASIYA

1/1/2017

इंदा छोई गांव की रामायण

AUTHOR

इंदा छोई गांव की रामायण का इतिहास

ग्राम इंदा छोई में रामायण का प्रारंभ सन 1979 के से प्रारंभ हुआ |

तीन अलग-अलग स्थान से लिखी गई रामायण को लाया गया, इन तीन के लेखक अलग-अलग श्री यशवंत सिंह जी, श्री राधे श्याम जी और श्री जग नाथजी थे

इन तीन रामायण को आधार रखकर इन में से शुद्ध वर्तनी करके प्रजापति श्री प्रभाती राम ज ड़यावर्मा जी व उनके सहयोगी मित्र गण ने मिलकर रामायण को संशोधित कर फिर से लिखा |

हिंदुत्व के अनेक पूर्वज ने रामायण के लिए मिलकर काम किया जिनमें गांव इंदा छोई के भी पूर्वज शामिल है एक पूरी मंडली ने मिलकर रामायण को लिखा और उसके किरदार निभाए|

रामायण को फिर से संशोधित और शुद्ध करने में उनको 6 महीने से अधिक का समय लग गया |

रामलीला के आयोजन से होने वाली धनराशि से हनुमान मंदिर बनवाया गया जो कि आज भी गांव के पूर्व दिशा में विराजमान है

इसके बाद समय-समय पर दान मिलता रहा और गांव में उनसे प्रा प्तहुआ धन गौशाला, बाबा निहाल गिरी समाध, भूमिया खेडा और स्थान पर लगता रहा|

आज 2017 में इस रामायण को डिजिटलकिया गया

"हिंदुत्व के अनेक पूर्वज ने रामायण के लिए मिलकर काम किया जिनमें गांव इंदा छोई के भी पूर्वज शामिल है

- नंबरदार श्री राजें बरथलिया वर्मा जी,
- श्री मूलचंद होदखासिया जी,
- श्री कृ ष्णहोदखासिया जी,
- मास्टर श्री गुलाब होदखासिया जी,
- श्री कृ ष्णकांटीवाल जी,
- श्री बीरबल रावण गुरी जी,
- श्री भीम देमीवाल जी,
- श्री वीरू नांदवाल जी,
- सेठ श्री सत्यनारायण,
- श्री अमरनाथ नांदवाल जी,
- श्री धर्माराम किरोड़ीवाल जी,
- श्री सतबीर किरोड़ीवाल जी,
- श्री राजें बरथलियाजी,
- श्री प्रभाती राम जड़ीया जी ,
- श्री बलिया राम बरथलियाजी

आदि एक पूरी मंडली ने मिलकर रामायण को लिखा और उसके किरदार निभाए"

Member Of Indacchoi Ramayan

Pardhaan	Director	Stage Secratory	Cashier
Samsher Jailwal	Anil Katiwal		Anil Katiwal
9416122124	9812237711		9812237711

Sr No.	Name	Gottar	Son Of Shri	Contact No	Role
1	Anil kumar	Katiwal	Karishan Ram	9812237711	Ram, Sharwan
2	Bunty	Hodkhasiya	Karishan Ram	7700019298	Sita, Angad, Bhilni ,Vedpati
3	Sunil	Hodkhasiya	Harichand Singh	9812384132	Ravan, Kevat
4	Jagdeep	Kirodiwal	Satish Kumar	7357212510	Lakshman
5	Rinku (Tony)	Kundalwal	Surajbhan Singh	9067273575	Bharat
6	Rajbir	Birthaliya	Om Parkassh Singh	7900051330	Satru Ghan, Janak, Kumbhkaran
7	Mangal	Kaloia	Inder Singh	9468428108	Kaikayi, Vishvaa Mittar
8	Vinod	Jadiya	Rohatash Singh Bobali	7700033211	Hanumaan, Kaushalyaa
9	Rakesh	Parmwal	Dleep Singh	9068139861	Meghnath, Taara , Dooshan , Mantri
10	Samsher	Jailwal	Pooran Singh	9416122124	Dashrath, Sugreev
11	Ranvir (Rana)	Jadiya	Pyaare Laal Singh	9416671323	Maarich, ParshuRam
12	Ravi	Jadiya	Ramkishan Singh	-------------	Jataayu , Akshay Kumar, Soorpan Khaa, Naraantak
13	Sandeep	Kirodiwal	Lilu Ram Singh	------------	Khar, Sampaati, Makr Dhavaj
14	Rajesh	Kirodiwal	Changu Ram Singh	------------	Kaal Nevik, Mantri , Jaamvant,
15	Pardeep (Deepu)	Ghorela	Sunder Singh	9812595472	Vasisth, Sabaahu, Dadhibal, Lankini
16	Sonu	-------------	-----------------	-------------	Sumitraa , Dancer
17	Kuldeep	Birthaliya	Rajkumar Singh	98122556553	Gahoo, Baali, Ahi Ravan, Shringi Rishi, Ravan Mantri, Kevat
18	Parveen Kumar	Birthaliya	Rajkumar Singh	8685861371	Manthraa,
19					
20					

रावण और वेदपति

वेद पति अपने दिल में :- अहा! जबसे पिता मेरे कुश वज ऋषि ने यह प्रण किया कि मेरे पति वि णु भगवान ह बसे उसी दिन से उनके यान में अपना जीवन बता रही हूं .. परंतु प्रभु ने अभी तक मेरी कोई खबर नहीं ली है हे स्वामी ज दी आओ और मुझे अपने साथ ले जाओ..

रावण का पद के अंदर से आना और वेद पति को देखना

रावण :-ठंडी सांस में मन में हंस कर

दोहा :- निर्जन वन में सोमती ऐसी सुंदर नार

जैसे मोती कींच में चमकत है हर बार

नहीं नहीं यह तो उससे भी सुंदर है

दोहा :-इस निर्जन स्थान में तो कामिनी का वास

य अंधियारी रात में चं देव का वास

वेदवती रावण से:- या विचार कर रहे हो महाराज

रावण वेदवती से:- हे देवी म इसका या जवाब दूँ आपकी सुंदरता ही दुनिया से निराली है

वेदवती रावण से :- हे ानी पुरुष विचार की उलझन को छोड़ो और अभिप्राय प्रकट करो

रावण वेदवती से :- हां-हां देवी भूल गया, हां देवी तु हारा नाम या है और तुम कौन हो ?

वेदवती रावण से :- म कुश ऋषि की क या हूं मार्ग से भटकी हुई जोगन हूं .

रावण वेदवती से :- या अभी तु हारा विवाह नहीं हुआ

वेदवती रावण से :- हो चुका है

दोहा :- जिसे 14 भवन और 3 युग के भगवान कहते ह

उसी को बस मेरा जीवन पति प्राण कहते ह

रावण वेदवती से :- क पना ! झूठ बात ! मृगतृ णा के पीछे दौड़ने वाली मृग नैनी, या धूप को अपनी मु ी में बंद करने का इरादा कर रही हाे औ भोली नादान इस इरादे को छोड़ दाे .

दोहा :- तुझको सर्वदा तड़पाती रहेगी आस तेरी

हो नहीं सकती कभी इच्छा यह पूरी तेरी

वेदवती रावण से :- दोहा :-

इच्छा पूरी हो ना हो परंतु ,अब म विचार को छोड़ नहीं सकती

एक बार जिस को पति मान लिया है ,उस से मुंह मोड़ नहीं सकती

रावण वेदवती से :- निस्संदेह ! तू अपने यान्में है देखो यह

सुख बार-बार नहीं आते जब योवन कि यह झलक चली जाएगी तो इन

दिन को याद करके बड़ा पछताओगी

दोहा :-

पड़ा जो धूल है मनहरण अनमोल मोती है

हे सुंदर फूल तू यपांव तले पाल होती है

वेदवती रावण से :- ोधसे औ! घमंडी तू इस वासना का मैल चढ़ाकर

मुझे मारना चाहता है

दोहा :-

मिले जो राज दुनिया का वचन पर वार दूंगी म

तेरी सोने की लंका को एक प्रण पर वार दूंगी म

रावण वेदवती से :- यासे सुंदरी होश कर

आंखें खोल तेरे ानको काहे का पर्दा पड़ा है

जानती नहीं तेरे सामने कौन खड़ा है

दोहा:-

तेरी कोमल जुबान से जो कड़वे निकलते ह

यह तेरे तीखे बाण है जो प्रेम की पर चलते ह

वेदवती रावण से :-दोहा:-

समय आने पर ानीभी पाप के रास्ते चलते ह

अनोखी बात यह है वजर भी मु ्में गलती ह

रावण वेदवती से :- ोधसे समझा अरी अभागिन बाला तू अपनी

बुद्धि से लाचार है

जो रावण का कहना मानने से इनकार है

दोहा:-

ोधको मेरे समझकर ,खेलती है खेल तू

बोलकर कड़वे वचन अि ्नमर डाले तेल तू

बैर कर रावण से जग में कौन रहने पाएगा

पुकार अपने सहायक को तुझ को कौन बचाने आएगा

वेदवती रावण से :- ोधसे

कर हीय के अंधे कुछ तो कर

दोहा:-

रावण दु खयको मत दुखा म खुद ही बेकार हूं

जीवन आशा कुछ नहीं अपने ही आप भार हूं

रावण वेदवती से :- ोधमें बस बस अब आगे मत बोल

दोहा:-

बहुत सुन चुका हूं बंद कर अपनी कहानी को

इस अभिमान में खो दोगी आ खरिजंदगानी को

वेदवती रावण से :- ोधसे याजिंदगी का मोह दिखाकर अपने वश में करना चाहता है

औ चंडाल यहां से चला जा

और कुछ है तो अपनी ना दिखा

दोहा:-

देखना पाप का भी एक भारी पाप है

इसलिए ही मेरे मन में और पश्चाताप है

मन दुखा कर दिन का याहाथ तेरे आएगा

याद रख तुझको मेरा यह पाप ही खा जाएगा

रावण वेदवती से :- ोधमें हो इतना अभिमान देवताओं के राजा का इतना अपमान

दोहा:-

जो हुआ अच्छा है वह यान्ही बेकार है (पकड़ कर)

देख मेरा हाथ ही तेरे गले का हार है

वेदवती रावण से :- ोधमें औ अ यायीहाथ लगा कर तूने मेरी काया ही कर दी | तेरे छूने से यह शरीर अशुद्ध हो गया| अब यह शरीर भगवान को नहीं पा सकता | इसलिए म इस शरीर को त्यागकर नया रूप धारण करूंगी और उसी से तेरी मौत का कारण बनूंगी |

दोहा:-

बना है सामने मेरे तू विकराल की मूरत

जनकपुरी से उठूंगी बनके तेरे काल की मूरत

पद में जाना वेद पति का सीन समा त

दशरथ दरबार

दशरथ वशि ष्ठसे:- हे गुरुजी! रघुवंश की समाि प्तके कलंक का टीका मेरे ही मनहूस माथे पर लगना था, वैसे तो मेरे भंडार में किसी भी मौज की कमी नहीं है

गुरु वशि ष्ठदशरथ से :- वैसे तो मनु ष्यदिल के घोड़े दौड़ाता रहता है लेकिन अपनी यह कहानी किसी के समझ में नहीं आती | आपके चेहरे के ऊपर यह उतार चढ़ाव कैसे हुआ ? कृपा करके आप इस कहानी को हल कीजिए ताकि सब के दिल को धैर्य हो|

दशरथ वशि ष्ठसे:- हे गुरु जी ! यह तो की कृपा है प्रजा खुशहाल है बैरी पायमाल है

परंतु हे गुरुजी एक ख्याल है जो मुझको तड़पाता रहता है

हे गुरु जी ! म अब तक औलाद से खाली हूं अगर एक पुत्र भी हो जाता तू इस रा यको इसका पालनहार मिल जाता | हां किसी ने सच ही कहा है:-

चाँद चढ़े ,सूरज भवै ,दीपक जले हजार

जिस घर में बालक नहीं वह घर निपट अंधियार

गुरु वशि ष्ठदशरथ से :- हां महाराज वह घर-घर नहीं होता बि ल्कएक तरह का श्मशान हो जाता है जिस घर में बच्चा खेलता दिखाई ना दे| औलाद जिंदगी का सहारा और आंख का तारा होता है | हे महाराज आप शी घ्र ही श्रृंगी

ऋषि जी को बुलाइए और की तैयारी कीजिए आशा है आप की कामना पूरी करेंगे|

दशरथ वशि ष्ठ से:- हां उनकी शोहरत की चर्चा तो म भी सुनी है और आप के कहने से और भी तस्दीक हो गया है

मंत्री जी आप ज दी जाइए जिस तरह हो सके श्रृंगी ऋषि को साथ ले आइए

मंत्री दशरथ से महाराज की आ ा का सदा पालन हो म आज ही जाता हूं और ऋषि जी को अपने साथ ले कर आता हूं और आप की तैयारी करें

मंत्री का जाना नृत्य का आना

दशरथ का दरबार

महाराज दशरथ और योग गुरु वशि ष्ठ का साथ में विराजमान होना

दशरथ वशि ष्ठ से:- ऋषिवर मंत्री जी को गए हुए बहुत दिन हो गए ह लेकिन अभी तक लौटकर नहीं आए ह और ना ही कुछ खबर ही लाए | मालूम नहीं श्रृंगी ऋषि जी मिले ह या नहीं | बड़ी गलती की मंत्री जी को भेज दिया असल में मुझे स्वयं ही जाना चाहिए था |

संदेशवाहक का दशरथ के दरबार में आना

दूत महाराज दशरथ से :- महाराज की जय हो ! मंत्री जी व श्रृंगी ऋषि जी तशरीफ ला रहे ह और डयौढ़ी पर विराजमान ह उ ह ने दास को खबर करने के लिए भेजा है.

महाराज दशरथ दूत से :- या कहा ! श्रृंगी ऋषि जी तशरीफ ला रहे ह !

वारपाल दशरथ के दरबार में सभी विराजमान सभा पत्तिय से :-

सुनो सुनो सुनो ! महाराजाधीराज दशरथ के दरबार में

तपस्विय में महातपस्वी मुनिय में महामुनि विषय में महर्षि वै य में महा वै य महामुनि श्रृंगी जी डयौढ़ी पर विराजमान होकर पधार रहे ह |

महाराज दशरथ दूत से :- अहोभा य सौभा य म स्वयं ही उनके स्वागत के लिए चलता हूं|

गुरु वशि ष्ठ दशरथ से :- म भी आपके साथ चलता हूं |

दोन का स्वागत के लिए चले जाना

कुशल `मवशि ष्ठ पूछेंगे श्रृंगी ऋषि से

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :- प्रणाम मुनिवर!

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- आनंद करते रहो राजन! कहो किस तरह हमें याद किया ?

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :- दोहा:-

बहुत दिन से ऋषि जी लगी हुई थी आस |

करके आपके मीटा सकल दुख: त्रास ||

मिटा सकल दुख: त्रास मुनि जी धन-धन भाग हमारे

दशरथ का घर हुआ पवित्र जब से आप पधारे

दो कर जोड़ नमस्ते करता चरण पड़ूं तु हारे

हुई बहुत तकलीफ आपको उठाके पधारे

नाटक

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :-हे मुनिवर ! कई दिन से आपके की अभिलाषा थी और मुझको पूर्ण आशा थी की आप देंगे चलिए दरबार को सुशोभित कीजिए और दरबार में सबको दीजिए|

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- दोहा:-

य की इतनी तकलीफ यहै असल मुराद

किस कारण हम को किया राजन तुमने याद

राजन तुमने याद किया यअटका काम तु हारहै

विपत बड़ी तुम पर भारी कहे अनुमान हमारा है

हम वनवासी सं यासी यदेंवे तु हेंसहारा

मेरे लायक काम जो हो किजौ जरा इशारा

नाटक

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- हे राजन् प्रस न्न आनंदित रहो

कहो याकारण है जो हमको याद किया ?

जो बात कहनी है ज दीकहो ?

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :- हे ऋषि वर! दशरथ बहुत दु खयऔर लाचार है

बि कजिंदगी तक बेजार है

चार तरफ से निराशा छाई हुई है

केवल आपके दर्शन ने ही धीर बंधाई है

यदि कुछ हो सकता है तो कुछ इमदाद कीजिए

वरना अपने हाथ से मुझे संयास दीजिए

म सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूं

केवल आपकी आ ाका इंतजार है

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- राजन ! कैसी बातें करते हो | तु हारेयह है उ देसीधे फिकरे मेरी समझ में नहीं आते ह , समय गवाने से यालाभ है इसलिए पहले तौलो और फिर मुंह खोलो

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :-गाना

बहरे तबील हे ऋषि जी गई उ सारी गुजर

1. आज तक मेरे घर में पिसर ना हुआ|
यही रहती है चिंता मुझे रात दिन||
है जिनका कोई तख्ते जिगर न हूआ||

2. कोई इस के बराबर बीमारी नहीं |
पेश चलती मगर कुछ हमारी नहीं ||
हाय! विधाता ने बगड़ीवारी नहीं |
मेरी आहाेंं का कुछ भी असर नहीं||

3. राज का कोई वारिसन वाली नहीं |
कोई मुझसा जमाने में खाली नही ||
कोई मुझ सा बढ़ कर सवाली नहीं ||
यान्दयालु लेकिन इधर ना हुआ ||||

वार्तालाप

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :- हे ऋषिवर जी ! लेकिन उमर का बहुत सा हिस्सा बीत चुका है | जवानी के दिन एक एक करके ढलने लगे है | बुढ़ापा आने लगा है | लेकिन आज तक औलाद से खाली हूं और म अपने तमाम उपाय कर चुका हूं | यहां तक कि लगातार तीन शादियां कर चुका हूं और दुनिया में भी बदनाम हो चुका हूं | गुरु जी !अब तो इस घर की रौनक थोड़े दिन की मेहमान है | बस आप आ गए ह कृपया करके पुत्रेि ट करके मुझे पुत्र के लिए आशीर्वाद दीजिए |

नाटक

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- हे राजन ! जो कुछ आपने कहा है म अच्छ तरह से सुन लिया है , य इस तरह आहे ना भरो ,बि क्शी ही की तैयारी करो | यदि को बात मंजूर है तो उसे करने में देर यहै |

नाटक

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :-हे मुनिवर ! का सामान तो पहले से ही तैयार है बस आपकी आ ाका इंतजार था |

ऋषि का का रचना

यहां पर दशरथ वशि   श्रृंगी ऋषि व मंत्रीगण आदि सब साथ में

ओम भूर्भुव स्वाहा तत्सवितुर्वरेंयं भग देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात्

ओम शांति ही शांति ही शांति ही

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- हे राजन ! यह शेष   आहुति से प्रा   त फल महल में ले जाओ | इसके 3 भाग करके तीन रानिय को   खलाइए

जब   ह   आप पर दयाल

पल में करेंगे तु   हें निहाल

दशरथ का महल में जाना पर्दा बंद और नृत्य का आना

अगला दृ य

दशरथ का दरबार

महल से बांदी का आना

बांदी दशरथ से:- महाराज बधाई हो ! यह दासी अभी-अभी महल से आई है और ऐसी खुशखबरी लाई है , जिसके सुनते ही आपका दिल मसरूर होगा |

जय हो ! महाराज की जय हो ! आप के महल म चार कुंवर पैदा हुए ह | ने बहुत मु त के बाद यह दिन दिखाया है | हे महाराज !आप को रा नय ने याद किया है |

नाटक

दशरथ बांदी से :- हे दासी तुमने खुशखबरी सुनाई है जिसे सुनकर मेरा दिल बहुत खुश हुआ है | म किस तरह से भगवान का ध यवाद करूं | हम यह शुभ समाचार सुनकर अ त स हुए , इस शुभ समाचार के ल ए आप को मेरी ओर से नौ ल खा हार भ द देता हूं | आप जाइए म शी आता हूं |

नाटक

दशरथ बांदी से :- म अभी महल म जाता हूं ,मं वर आप सारे शहर म ढिंढोरा पिटवा द, आज स ता ह भ सूरे शहर म खु शय व आनंद का हो और घर बार म मंगलाचरण हो |

नाटक

दशरथ गुरु से :- हे गुरु जी ! आप साथ चल और चलकर ब च का नामकरण सं कार कीजिए |

पर्दा झुकता है

दरबार म तीन रा नय व चार लड़क के साथ महल म जाकर दशरथ की भगवान से विनती |

दशरथ ब च को उठाकर :- हे! तुम हो तु हारी कुदरत का कौन भेद पा सकता है | आपकी शरण ना ली हो, ऐसा कौन मनु य हो सकता है | हे गुरुवर ! आप ब च के नाम रख दीजिए |

गुरु का नाम रखना

जो नत सुखदायक सुखराशी सुख सागर की तरुवर है |
उस कौश या के नंदन का "राम" नाम ही सुंदर है ||
कैकयी के सूत है वि भरण रखता हूं "भरत" नाम उस नंदन का |
जग को सुमाग दिखलायेगा काम उसका ||
दो ातसूत है मात सु म के "श ुघन" वितीय कहलाएगा |
यह धाम जो थम है वह " " कहलाएगा ||

नामकरण सं कार समा त सदा गरत है

गुरु व श के वारा चार राजकुमार की श   ा

गुरु व श राम से:- राधे याम
कट सकता नहीं स   से वह,जवाला भी जला नहीं सकती
और उड़ सकता नहीं पवन से वषा भी बहा नहीं सकती
राम का :- हे गुरुवर इसका है यह एक ऐसी चीज है ना कोई जला सकता है
नहीं कोई उड़ा सकता है ना ही कोई बहा सकता है
गुरु व श भरत से:-
उ प ि कारण सब क ि पत है उनका उसम है लेस नहीं
आनंद रूप वह वयं सदा उसको वरुप म कलेश नहीं
भरत का :- हे गुरु जी इसका है कि भगवान का रूप एक ऐसा रुप है जिसम एक मा भी लेश नहीं होता और हर समय आनंद ही रहता है
गुरु व श ल   मण से सवाल :- राधे याम
उसम है विविध शरीर सदा बनते हुए मटते जाते ह
जिस कार पुराने होने पर व आदि बदले जाते ह
  का है:- गुरुजी शरीर भगवान की देन है, शरीर के अंदर भगवान रहते ह, जिस यह शरीर रह जाता है और उसका जिव भगवान अंदर से चला जाता है और इस कार जीव को एक नया चोला मल जाता है
गुरु व श ल स ुघन से सवाल :-
म की घड़े कई ह सब के सब जल से भरे हुए ह
वह एक जगह या कई जगह या बहुत जगह चले हुए ह
श ु न का जवाब:- है गुरु जी ! सब जीव जंतुओं म विधाता यापक है , भगवान तो हर जगह है लेकिन दु नया म जितने भी जाने ह सब उस की नगाह के नीचे है उसकी महिमा म बसे ह
गुरु व श चार राजकुमार से :-तुम चार राजकुमार एक से एक बढ़कर हो , तुम श वि या म नपुण हो तुम महाराज दशरथ का नाम रोशन करोगे
जाओ अब वि ाम करो

5 महा रा स की खर मस्तियां

रा स का गाना

खर :-

टेक 1. हम तो आनंद ही अपना बनाएंगे,

पिएंगे यहां बैठकर याले शराब के,

और बूंद-बूंद खाएंगे टुकड़े कबाब के,

सब को उ लू में चु लू बनाएंगे ,

हम तो आनंद ही अपना बनाएंगे...............

सबाहु:-

टेक 2. जब तक मेरे हाथ में तीर कमान है ,

सारे जमाने की मु ी में जान है ,

सबको रास्ते आदम के दिखाएंगे ,

हम तो आनंद ही अपना बनाएंगे...................

टेक 3. रा य के राजा का ना हम को ख्याल है

आए मुकाबले पर किसकी मजाल है

टुकड़े एक एक दो दो बनाएंगे

हम तो आनंद ही अपना बनाएंगे

टेक 4. दुनिया सारी कांपती है मेरे ही नाम से

राजा तलक को न बैठने दूं आराम से

सारे जमाने में हलचल मचाएंगे

हम तो आनंद ही अपना मनाएंगे

टेक 5. राही मुसाफिर जो इस जगह आएगा

पंजे से छूटकर ना हरगिज़ जा पाएगा

उसे मारेंगे और लूट लूट कर खाएंगे

हम तो आनंद ही अपना मनाएंगे

मारीच रा स से :- अरे नालायको ! आगे पीछे या ख्याल है,

और सारा दिन खेलकूद में ही यान है,

वह देखो सामने से शिकार निकला जा रहा है,

और तुम शराबी शराब पी पी कर मजे लेते हो

पहला रा   सहंसकर:- हा हा हा हा !!!!!   याकहा शराब का पयाला आगे पहले थोड़ी सी डाल और फिर नशा और भी तेज हो जाएगा

खर सबाहू से :- अरे तेरा सत्यानाश जाए ! बराबर का हिस्सा लेता है और हमारी ही खुशामद करता है

मारीच रा   स से :- जोश में अरे तु   हारबेड़ा   हो, कुछ मेरी भी सुनते हो या शराब का ही मजा लेते रहोगे.

रा   सजोर से हंस कर:- हा हा हा हा हा कहिए उस्ताद जी   याबात है ?

मारीच रा   स से गुस्से में:- पूछते हो या मुझे सिखलाते हो ?

रा   समारीच से:- हैरानी में तो कुछ बात भी बताते हो

मारीच :- अरे अच्छा वह देखो सामने से शिकार आ रहा है

शिकार की   पकड़ कर

रख दे यहां जो कुछ भी तु   हारेपास में है ?

यात्री :- महाराज दशरथ ! तेरी दुहाई हाय हाय हम गरीब तेरे रा   यमें इस बेरहमी से लूटे जाते ह

रा   स:- अरे मूरख दशरथ   याचीज है?   यावह खाने की चीज है ?

दूसरा रा   स:- यदि दशरथ कोई नमकीन चीज है तो ले आना, शराब के साथ खाने में बड़ा मजा आएगा

मारीच :- अरे दशरथ वह है ना ,अयो   यका रहने वाला जिसको लोग राजा भी कहते ह ?

रा   सहंसकर :- हाहाहाहाहा !!!!!अच्छा तो यह लोग अपनी सहायता के लिए पुकार रहे ह जिसके मुंह में दांत है पेट में ना आंत है , वह बुढा खुंसट हमारा   यामुकाबला करेगा, ऐसे तो खोल तो म 20 खा जाता हूं, डकार तक नहीं लेता

यात्री :- हमारी दशा पर रहम करो

मारीच :- अरे ओ नामाकूल हम स्त्रियां नहीं है खबरदार ऐसी चीज का नाम लिया तो ?

यात्री :- कुछ तो तरस खाओ हम ऐसी गली सड़ी चीज नहीं खाया करते नहीं

सबाहु मारीच से:- भाई मारीच लात के भूत बात से नहीं माना करते,

य खराब करते हो मारीच :- अच्छा इन   बात को छोड़ो

चलो जंगल की सैर और इन को साथ ले जायेंगे

रा   स:- चलिए महाराज

मारीच का आगे की ओर चलना

विश्वामित्र की रचना

मारीच रा स से:- अरे नालायक वह देखो सामने से दुआ नजर आ रहा है

सुबाहू मारीच से:- हां भाई कुछ तो है सही

मारीच :-चलो उधर ही आज मौज मेला करेंगे

पद के पीछे विश्वामित्र का करना

रा स का

खर :- यह देखो नया तमाशा पागल घी को आग में डालकर कैसे जला रहा है ?

दूषण :- है तो कोई दीवाना

रा स:- हमें याचाहिए बनी बनाई आग मिल गई मजे में मांस भून कर खाएंगे

अगला रा स:- अरे एक यालइस बूढ़े को भी दे दो, बेचारा गम दूर कर लेगा

अगला रा स:- यह ले बु ढेमीले शराब

विश्वामित्र ऋषि चुप है

मारीच :- औं! बु ढेम से ऐसी बेरुखी य? हम और तुम तो भाई भाई है

तुम वनवासी हम वनवासी,

तुम स यासीहम सत्यानाशी

विश्वामित्र का आंख खोलना और रा स से वार्ता

विश्वामित्र रा स से:- अरे मलच्छाे ! हमने तु हारा या बगाड़ा है ?

यहां आकर के का सामान उजाडा है,

मांस आदि डाल कर तमाम को कर दिया,

दिखता है तुम जिंदगी से बेजार हो ,

सच जब चींवटी के दिन निकट आते ह तो उसको पांव पैदा हो जाते ह

अरे कायर लड़ाई का इरादा है तो हम तपस्विय से लड़ने का या

फायदा अ यथासमझता कि तु हारीजिंदगी के दिन निकट आ रहे ह

और त्रवंश का खंजर तेज हो रहा है भाग जाओ वरना य

में जीवन गवाते हो ?

मारीच ऋषि विश्वामित्र से:-

वाह ! बु ढेखूब सुनी तेरी ऑफसानिया ,

और खूब घड़ी बेतुकी कहानियां ,

तेरे जैसे हमने बहुत देखे भाले ह

अरे भ द्दू किसको पढ़ा रहा है

किस पर अपना गुस्सा दिखा रहा है

हम तो पहले ही मलंग और रंगीले ह

ना कि तेरी तरह हाथ पांव ढीले ह

तू जोग करता है

और जोगी बनके फिरता है

चं वंशीसूर्यवंशी वह वंशी ऐसी बंसी बजाऊंगा

उसका वंश दुनिया से मिटआऊंगा

जाओ अपने हीमाती को बुला ला

म भी मारीच नहीं अगर उसका कचूमर ना निकाला

मारीच का हंस कर भाग जाना

महाराजा दशरथ का दरबार

दशरथ मंत्री से:- सब सलाहकार आए और अपनी-अपनी सूचनाएं दें ?

मंत्री दशरथ से:- महाराज के आश्रय में प्रजा खुशहाल है और बैरी पायमाल है

दशरथ मंत्री से:- यासौमित्र रात से मेरी तबीयत पर कुछ मलाल है, रात को म सपने में ऐसा श्य देखा,

जैसे कोई शेर गाय को सता रहा है, म उसको मारने का उछला ,

मगर इतने में आंखें खुल गई, तब से मेरा मन उदास है

अब भी मुझे सपने वाली बातें नजर आ रही है

वारपाल दशरथ से :-अयो यापति महाराज की जय हो ! मुनि विश्वामित्र जी योढी पर विराजमान है

दशरथ वारपाल से:- या कहा ! मुनि विश्वामित्र जी पधारे ह .

वारपाल दशरथ से:- हां पृ वीनाथ!

दशरथ वारपाल से:- अच्छा तो हम स्वागत के लिए चलते ह

दशरथ विश्वामित्र के चरण में गिरकर:- मुनि जी आपका तुच्छ सेवक आपके चरण लगता है

विश्वामित्र दशरथ से:- खुश रहो राजन ! आनंद करते रहो !

दशरथ विश्वामित्र से :- हे मुनि जी ! मेरे भाग है जो आपने अपने पवित्र चरण से इस स्थान को शोभित किया आइए विराजिए और आसन ग्रहण कीजिए ,

हे मुनिवर ! आपके चेहरे पर उदासी छाई हुई है , और आपका एक एक अंग फर-फर काप रहा है, आंख का रंग पलटा हुआ सा प्रतीत होता है ऐसा या कारण है ?

विश्वामित्र का गाना बहरे तबील दशरथ से :-

1.ऐ महाराजा दशरथ दुहाई तेरी,हम फ़क़ीर का यहां पर गुजारा नहीं

मिलता है हमें रात दिन इस कदर ,कि हमसे जाता सहारा नहीं

2. कोई अपराध ना हमने तेरा किया ,एक किनारे पर जाकर बसेरा किया

त्याग बस्ती को जंगल में डेरा किया,रहना वहां भी हमारा गवारा नहीं

3. किसी प्राणी तक को हम सताते नहीं,रहते ह जंगल में बस्ती में आते नहीं

उस जगह भी रहने पाते नहीं,कोई रहा हमारा नहीं

4. रा सआकर हमें तंग करने लगे, ऋषिय का भंग करने लगे

मु तमें छेड़खानि हम संग करने लगे,हमने उसका कभी कुछ बगाड़ नहीं

नाटक

विश्वामित्र का नाटक राधेश्याम :-

म जिस समय करता हूं, दु:ख मुझको निशाचर देते है

पूजा सामग्री हवन कुंड सब कर देते ह

असुर के अत्याचार से अकुलाया घबराया हूं म

र ा के लिए दो चीज तुझसे लेने आया हूं म

तू अपने पुत्र राम- दे सोप मुझे कुछ दिन को

इसमें है तुमको पु यसुवश क याण उन दोन को

दशरथ का गाना विश्वामित्र से बहरे दबील :-

1.हे मुनि जी यासुनाई दास्तान

रा स को रहा भय हमारा नहीं

वंश का अंश जाता रहा

जाता हमसे सहारा नहीं

2. ोधमेरा उबलने लगा

कलेजा हाथ में उछलने लगा

हाथ ऋषिय पर दु टका चलने लगा

राजा का भय जरा भी विचारा नहीं

3. देर याहै अब बस चढ़ाई करूं

पापिय की पलक में सफाई करूं

बेईमान की ऐसी मनजाई करूं

नाम लेंगे इधर का दोबारा नहीं

दशरथ का नाटक विश्वामित्र से:- हे !हे! मेरे रा यमें यह अंधेर,

चोरी नहीं ब कसीनाजोरी ,

अभी चढ़ाई करता हूं ,

और आपके देखते देखते ही पापिय की सफाई करता हूं

उनके दिल में याहवा समाई है, साधु स यासीको तंग करने लगे ह

हे मुनिवर ! यही कारण था रात में मेरा मन उदास था

और मुझे पूरा पूरा विश्वास था

कि जरूर कुछ दाल में काला है

विश्वामित्र का नाटक दशरथ से:- हे राजन ! आपको करने की या

जरूरत है ,

नहीं ऐसी खतरनाक सूरत है,

आप राम और को मेरे साथ भेज दीजिए ,

रा स कामलिया मेट करना उनके लिए साधारण सी बात है,

और निश्चय ही उनकी मौत राम के हाथ ह,

ने चाहा तो बहुत शी ही आपके पास पहुंचा दिए जाएंगे,

और आपके वंश के यश की कीर्ति को चार चांद लगाएंगे

दशरथ का नाटक विश्वामित्र से:- राधेश्याम

हे मुनिवर ! है दोन बालक भोले भाले नादान नीरे

रण वि यानहीं जानते ह लड़ने में अभी अनजान नीरे

लो राज ताज सारी सेना यह सब होना दूस्सार नहीं

आ ाहो तो म चला चलू लो इसमें भी कुछ इनकार नहीं

वैसे तो चार मेरी बु ढीआंख के तारे ह

लेकिन राम और दोन प्राण से भी यारेह

फिर राम सदा सुखदाम मेरा , कब उसका विरह गवारा है

जब घर वही चांदना है जीवन का वही सहारा है

विश्वामित्र दशरथ से नाटक :-

ोधमुझे है हैरानी की रघुकुल में ऐसे कायर कहां से पैदा हुए

अरे कायर ! तेरे पूर्वज म किसी ने सहायता से इनकार नहीं किया

अपनी प्रजा के लिए आज तक देने के लिए इंकार नहीं किया

जुबान का कॉल सिर के साथ था

इसलिए परमेश्वर का उनके सिर पर हाथ था

अरे बुजदिल यारोहतास हरिश्चं का नहीं था

अगर वह भी तेरी तरह टालमटोल करता तो उसके पास नहीं था

तुमने तो राजा दिलीप की को खाक में मिला दिया

जिसने अपने शरीर का मांस काट-काट कर भूखे जानवर को खलादिया

विश्वामित्र दशरथ से :-राधे श्याम

ऐ दशरथ तुझ जैसे ानीको, इतनी बच्च की ममता है

जा चुकी जवानी दीवानी, फिर भी माया में भर माता है

यदि आज वि णुसे कहता म , चल देते छोड़ गरुड़ वाहन

शंकर से यही विनती करता, हिल जाता उनका भी आसन

यशवंत सिंह:-

बहुत अच्छा आराम कीजिए

और आखरी मेरा प्रणाम लीजिए

जैसे बनेगी बनाऊंगा

मगर तेरे जैसे कायर के पास कभी नहीं आऊंगा

वशि दशरथ से :- राधेश्याम

यह योगीराज कहते ह , तू इनसे कुछ संकोच न कर

यह बड़े विचारशील मुनि है , तू किसी बात की सोच ना कर

यह तेरे राजकुमार को, रण वि यासीख लाएंगे,

जरंद पच वहां होकर, आनंद सहित घर आएंगे,

वशि दशरथ से :-यशवंत सिंह

राजन आप सोच न कीजिए

और राजकुमार को भेजने से इंकार न कीजिए

हम सब को एक दिन तो मरना है

फिर राज तो इ ह ही करना है

इस मामूली सी बात पर विश्वामित्र को नाराज न कीजिए

दशरथ विश्वामित्र से:- राधेश्याम

लो हाथ में इनका हाथ-नाथ, यह दोन भोले भाले ह

यह फिकरा याद रहे, भगवान मेरे नाजाें के पाले ह

दशरथ विश्वामित्र से:-यशवंत सिंह

मुनि जी जाइए और अपना काम बनाइए

मुझे इनका इंतजार रहेगा

और जब तक इनकी देख ना लूंगा

मेरा दिल बेकरार रहेगा

दशरथ का सीन समा त पर्दा बंद

ताड़का वध

नाटक

राम विश्वामित्र से :- मुनि जी! यह कौन सा मुकाम है?

विश्वामित्र राम से:- मारीच और सुबाहु की माता ताड़का का इसी जगह जंगल में क़याम है

राम विश्वामित्र से :- हे मुनिवर   यावह भी अपने बेट की तरह बदकार है

विश्वामित्र राम से:-वह आला दज की जालिम और बदकार है

राम विश्वामित्र से : चलो तो आगे कदम बढ़ाओ

विश्वामित्र राम से:- नहीं पहले इसकी मिट्टी ठिकाने लगावे...

राम विश्वामित्र से : हे मुनि जी ! स्त्री पर हाथ उठाना तो महापाप है

विश्वामित्र राम से:- यह आपका वृथा पश्चाताप है, वह देखो बदकार किस तरह से मुंह पाड़े आ रही है

राम से:- उसकी मौत ही उसको हमारे सामने ला रही है

ताड़का का चि   लानाग्रा   सीपुकारे हाउ हाउ हाउ हाउ

राम ताड़का से:- आदमिय की तरह बात कर अगर हि   मतहै तो दो हाथ कर

ताड़का राम से:- मालूम होता है तुम जिंदगी से बेजार हो और इतने तेज तक मरार हो

राम ताड़का से:- अरे ओ बदकार होशियार हो जा और मरने के लिए तैयार हो जा

राम का तीर से खींच कर मारना

ताड़का वध

ताड़का राम से:- हाय हाय !!! म मर गई कोई पानी तो पिला दो ?

ताड़का से :- बस एक ही बाण में लंबी पड़ गई

सुबाहु का मरना और मारीच का भागना

नाटक

राम विश्वामित्र से:- हे मुनि जी अब थोड़ी देर आराम कर लो

विश्वामित्र राम से :- या है हम भी विश्राम कर ले (उंगली का इशारा करके) लो! संभल जाओ वह देखो बेईमान आंधी मेंह की तरह आ है |

राम विश्वामित्र से: उसकी मौत ही हमारे सामने ला रही है

मारीच राम से :- दोहा

एक औरत को कर,उछल रहा रण बीच

बच कर कहां जाएगा,आ पहुंचा मारीच

चौबोला:-

आ पहुंचा मारीच अब,संभलकर कदम बढ़ाना,

खबर नहीं शायद तुझको जाने सारा जमाना,

नामुमकिन है आज तु हार,यहां से जिंदा जाना,

मिल लो जुल लो जिस से मिलना खा लो जो कुछ खाना,

राम का मारीच से:-दोहा

य यादा बकबक करे, रख जुबान को बंद

मां तो तीर चला चुकी अब आए फज द

चौबोला:-

अब आए फज बहुत , कुछ शेखी जतलाता है

बेईमान हट पीछे य सिर पर चढ़ता आता है

हट पीछे मरदूत मु तमें, य बदबू फैलाता है

अब भी आजा बाज जान से, खैर जान की चाहता है

नाटक

राम मारीच से:-अरे ओ ! कायर, य यादा जुबान से निकलता है

मारीच राम से :-राधेश्याम

एक औरत को मार कर इतना अकड़ता है

राम मारीच से:- इसने तो अपनी करनी का फल पा लिया

तू भी अब अपनी मां के पास जिंदा जा लिया

राम मारीच से:- होशियार हो जाओ

मारीच राम से :- अरे ओ ! कायर अब मरने के लिए तैयार हो जा

दोन का युद्ध

सुबाहु   से :- जरा जुबान कि लपा लपी छोड़ दे

सुबाहू से :-अगर खेर जानकी चाहते हो अब भी हाथ जोड़ दें

सुबाहु   से :- चुप रहो नादान

सुबाहू से :- पीछे हट जा बेईमान

सुबाहु   से :-अरे बुजदिल मुंह से कच्ची बात ना निकाल

सुबाहू से :- अरे बेईमान तू भी अपनी जुबान को संभाल

सुबाहु   से :-अभी तो तेरे दूध के दांत भी नहीं टूटे अ   यथभाग जा नहीं तो नींबू की तरह छोड़ दूंगा

सुबाहू से :- मेरे दांत तो नहीं टूटे मगर तेरे जरुर तोड़ दूंगा

सुबाहु   से :- शरारत से बाज नहीं आता उ   लूके प `

सुबाहू से :-दोहा

बस बस म सुन चुका, बहुत तेरी बकवास

अब   यादाबोला अगर, लूंगा जुबान तराश

चौबोला:-

लूंगा जुबान तराश अगर , कुछ मुंह से बात निकाली

बेईमान बदकार बता तो , अब के दे तो गाली

खबरदार हो जा , वार हमारा न जाएगा खाली

फिर ना कहना   से, धोखे से जान निकाली

सुबाहु   से :-अरे ओ कायर होशियार हो जा

सुबाहू से :- तू भी मरने के लिए तैयार हो जा

दोन की लड़ाई सुबाहु की सफाई

मारीच से :- दोहा

ओ कायर ! अब भागकर, नहीं बचेगी तेरी जान

अब जाने नहीं दूंगा , बुजदिल बेईमान

चौबोला:-

बुजदिल बेईमान कहां जाएगा जान बचा कर

छुप जा कहां छूपेगा , म भी आया तीर उठा कर

लानत है जीना तेरा भाई को करा कर

अरे बेईमान मारीच ठहर जाओ, जरा जाना हाथ दिखा कर

राम से :- दोहा

भागे पीछे भागना है, नामद का काम

भाग गया जो रण में, मर गया मौत हराम

चौबोला:-

मर गया मौत हराम युद्ध में , जिसने पीठ दिखाई है

ऐसे कायर को यमारना, इसमें कौन बड़ाई है

या तो इतना उछले था, या भाग के ही बन पाई

यमारोगे मरे हुए को, करो समाई

मारीच का भाग जाना

विश्वामित्र राम की पीठ ठोक कर :- शाबाश बहादुर ! खूब किया जो इनका काम तमाम किया

राम विश्वामित्र से: हे मुनिवर यह आपका ही आशीर्वाद है

विश्वामित्र राम से :- हां बेटा तुम सूर्यवंश के चिराग हो चांद में दाग है पर तुम बेदाग हो

दूसरा दिन शुरु

राजा जनक के दूत का आना चि लेकर विश्वामित्र जी के पास

जनक दूत विश्वामित्र जी से:- यामुनि विश्वामित्र जी यही पर रहते ह ?

विश्वामित्र जी दूत से:-हां हां कहिए याकाम है ?

दूत विश्वामित्र जी से:- हे ऋषि वर आपके नाम राजा जनक का संदेश है

विश्वामित्र जी दूत से:- वह यासंदेश है?

दूत विश्वामित्र जी से:-लीजिए मुनिवर यह पत्रक संदेश

संदेश वाहक दूत का वापस चले जाना

मुनि विश्वामित्र का पत्रक संदेश पढ़ना

विश्वामित्र जी दूत से:- वाह वाह यह भी खूब मौके पर आया

राम विश्वामित्र से: मुनिवर जी यह पत्रक संदेश कहां से आया है

विश्वामित्र जी राम से :-बेटा मिथिला पुरी के राजा जनक ने अपनी पुत्री का स्वयंवर रचाया है और हमें भी उसमें शामिल होने के लिए यह संदेश पहुंचाया है राजा के वहां एक बड़ी कमान है और उनकी यह उ घोषणाहै कि जो त्रउस कमान पर चि लाचढ़ाएगा वही जानकी सीता का पति कहलायेगा

राम विश्वामित्र से:हे गुरुजी कुछ संदेह ना हो तो हमें भी साथ चलने की आ ादीजिए

विश्वामित्र जी राम से :- हां हां बड़ी खुशी से तैयारी कीजिए आप ही लोग के लिए स्वयंवर रचाया है हमें तो देखने के लिए बुलाया है

विश्वामित्र जी का राम के साथ जाना व रास्ते में अहि याकी मूर्ति को पांव लगाना

विश्वामित्र जी राम से :- राधे श्याम

बेटा कभी गौतम स्त्री थी अब शीला श्राप की मारी है

सबसे प्रेम तुम रखो यही आकां ातु हारीहै

इस पाप पर पी   ड़ा पत्थरी को पद रजका चेतन चरण दो

वह पतिता है पावन पद दो जीवन मृत को संजीवन दो

राम का पांव लगाना अहि   या का संजीव होना

अहि   या राम से :- प्रणाम भगवन ! आपने मेरा उद्धार किया है म स्वर्गलोक में जाती हूं और अपने पति के   पाती हूं

राम विश्वामित्र से:- हे मुनिवर यह देवी कौन थी और इसका   या कारण था जो   की मृत मूर्त थी

विश्वामित्र जी राम से :- प्रिय शि   य राम यह गौतम ऋषि की अद्धा   गिनी थी और यह पतिता के आरोप में आ गई थी गौतम ऋषि ने श्राप दिया था कि जब त्रेतायुग में भगवान वि   णु के अवतार अवध   बहार आएंगे तो आप का क   याण होगा

तब से यह   की शीला के रूप में रह रही थी आपके चरण के से इसका उद्धार हो गया

स्वयंवर

विश्वामित्र ,राम,   का जनक से मिलना

जनक विश्वामित्र जी से :- प्रणाम मुनिवर !

विश्वामित्र जनक से :-आयु   मान्भव !

जनक विश्वामित्र जी से :- राधेश्याम

मुनिवर मेरी खुली रह गई, आंख से ऐसा नेह हुआ

कहते ह मुझे विदेह सभी पर, म तो आज विदेह हुआ

विश्वामित्र जनक से :-

म कहता हूं राजन तुमको, ठ   क्हुआ आभास

हमनि   क्री नजर में , सब रहता पास

दोन है पुत्र अवध नृप के, नाम राम   इनका

यह बली गुणी उत्साही है, किस विधि से दूं   इन का

पूरा ठ   क्कराया   कार्य ,रा   सदल इ   ह   म्मेरा है

गौतम की नारी अहि   यान्का, पद राज श्राप निवारा है

अब धनुष महोत्सव के कारण , यह दोन भाई आए ह

राजन तेरे आनंद हेतु, हम इ   हेंसाथ में लाएं ह

दुनिया   का मेला है, जीतना अच्छा हो अच्छा है

आगे तो वही होता है ,जो विधाता ने लिख रखा है

जनक का चले जाना

विश्वामित्र राम   से:- जाओ   ! आराम करो, म भी विश्राम करता हूं

विश्वामित्र का चले जाना

श्री राम से:-   ाताजी ! मिथिला पुरी भी एक प्रसिद्ध शहर है

राम   से:- हां भैया !   मगर उससे तु   हारा   या प्रयोजन है

श्री राम से:- यही कि आज इस नगरी को देखकर अपना मन बहलाएं

राम   से:- चलो भैया ! आज तु   हेंमिथिला पुरी दिखला लाए

दूसरा श्यआरंभ सीता की आरती उतारना

जय जानकीनाथ

आरती की टेक जय गौरी माता जय जय गौरी माता

मोहिनी जननी विश्व मोहिनी

जगदंबा का प्रस न्होना

जगदंबा :- राधेश्याम

हे सीते कुछ संदेह नहीं , अभिलाषा तु हारीहै

नारद का वचन होगा, ऐसी आशीष हमारी है

छिपकर जि हेंअपनाया है, प्रत्य उ हेंअपनाओगी

बस इस समय अंबर में, सीता मन चीत तुम वर पाओगी

श्री राम से:- ाताजी ऐसी सुंदर स्त्री कौन थी ? जैसे कोई देवी से आई

उसके आते ही सारे बाग में नई बहार आ गई है

राम से:-गाना

ओ याभैया यह बाग की बहार है

ओ यारे यह जनक दुलार है टेक

याजब से यह बाग में आई चली

सारे फूल की खलाई है सुंदर कली

इसके आने से गुलशन गुलजार है

ओ याभैया...........

यह कितनी है सुंदर हे जाती

उसके स मुखल जतहो जाए रति

इसके मुखडे पर चंदा लाचार है

ओ याभैया...........

पर मेरे तो दिल का सही है सुभा

गेर नारी पर हरगिज़ न देना निगाह

इसका कारण तो जाने करतार है

ओ याभैया...........

जो रचता स्वयंवर यह राजा जनक

इसका म ही करूंगा यह पूरा पनक

ऐसा कहते श्री चं पुकार है

ओ याभैया............

यह जनक दुलार है..........

नाटक

राम से:- चलो भैया हमने तो यही पर देर कर दी,

मुनि जी ाधितहो जाएंगे

श्री राम से:- चलो ाताजी मुनि जी हमारी राह देख रहे ह गे

महाराजा जनक का दरबार

सब राजा अपने अपने आसन पर विराजमान ह धनुष का आयोजन है

महाराजा जनक का दरबार में बोलना :- राधेश्याम

जो धनुष - में शिव ने अशुर गण के लिए उठाया था
नीव नंदन देवराज जी ने जो धनुष धरोहर पाया था
दस शीश सहस्त्रबाहु तक तिल भर न जिसे सरकाया है
सीता ने खेल-खेल में जिसको एक दिवस उठाया है
राजा की सब सौगंध शपथ धनवा वारापूर्ण होगी
जो वीर धनुष तोड़ेगा सीता उसको होगी
है कौन वीर जो मिथिलेश्वर का जमाता है
है कौन भा यशालीऐसा जिससे सीता का नाता है

पहला योद्धा

बौ से धनुष पर इतना गुमान है
भारी हुआ तो यहुआ आ खकमान है
कहो तो एक हाथ से तोड़ दूं इसे
मेरे लिए तो यह तुच्छ सामान है
अरे बाप रे यह तो किसी गरीब की छत का स्थिर है

दूसरा योद्धा

चि लाचढ़ा दूं एकदम ही 5-7 का
फकत मेरे बाएं हाथ का
मुश्किल ही यहै काम, यह है हैरानी मुझे
लकड़ी का है ना किसी और धातु का
यह तो कोई धोखा है वास्तव में यह तो कोई प्रोप गंडा है

तीसरा योद्धा

बस बस जनाब सब की ताकत हुई

बैठे ह सिर झुकाए सब की शिकायत हुई

अब दे खचि लाचढ़ता है कमाल का

लो देख लो सब की हिमाकत हुई

नहीं मुझे तो सिर्फ देखना था चि लाचढ़ाने का तो विचार ही नहीं था

चौथा योद्धा

सब ने लगाया जोर जो लाचार हो गए

ना उठ सकी कमान शर्मसार हो गए

उठने की मेरी देर है बस आने में

देखेंगे टुकड़े तीन चार हो गए

इसको धनुष कहता कौन है यह तो जनक ने हंसी का जरिया बना रखा है

रावण

कर लेंगे छोकरे ..., हर एक काम को

दुनिया में कौन जानेगा,... रावण के नाम को

मेरे बनमह काम,....कर सकता नहीं कोई

दिल से निकाल दीजिए ख्याल ए! ख्याम को

रावण का हाथ धनुष के नीचे आना और आकाशवाणी का होना

आकाशवाणी :-अय ! रावण तू यहां आया हुआ है तेरी लंका में आग लगी हुई है

रावण:- बेटा मेघनाथ कहां गए हुए ह ?

आवाज:- वह लड़ाई में गए हुए ह

रावण:- भाई कुंभकरण कहां गए हुए ह ?

आवाज:-वह 6 महीने की नि में सोए हुए ह

रावण:-बहन शूर्पणखा कहां गई हुई है ?

आवाज:-सूर्पनखा जंगल में सैर सपाटे के लिए गई हुई है

रावण:- बेटा कुमार कहां गया हुआ है ?

आवाज:- कुमार बाग की देख रेख के लिए गया हुआ है

रावण:-और अफसोस इतने वीर के होते हुए भी आज लंका में इतना बड़ा हो गया

ओह ! बड़ा गलत काम किया,हमने जो बना बनाया भरम खो बैठा

धनुष के नीचे से रावण हाथ निकाल कर

रावण:-हंसकर हाहाहाहाहाहा !!!!!!! अब तो लंका में जाता हूं

हाय राम !

सीते आज तो स्वयंवर में तू नहीं जीती गई

मगर याद रख सीते ! तुझे एक ना एक दिन लंका जरुर दिखलाऊंगा

और अपनी पटरानी बनाऊंगा

रावण का हंसकर पद के अंदर जाना

जनक राजा से:- राधेश्याम

हे वीप वीपके राजगढ़ हम किसे कहें बलशाली ह

हमको तो विश्वास हुआ पृ वीवीर से खाली है

पहले ख्याल होता अगर बेबसी ना होती

हम करते नहीं प्रति ायह

तो ऐसी हंसी नहीं होती

आसरा छोड़ प्रस्थान करो दुख हमें दिया है दाता ने

सीता सुकुमारी का विवाह लिखा नहीं विधाता ने

जनक से:- राधेश्याम

सच्चे योद्धा सच्चे त्रअपमान नहीं सह सकते ह

जिनको सुनने का ताडव नहीं वह चुप कैसे रह सकते ह

रघुवीर राम जी के होते अनुचित वाणी कह डाली है

यह व से लगते ह , पृ वीवीर से खाली है

नेतृत्व ढ़तापूर्वककहता हूं है बलवान की पृ वीयह

जिस दिन बलवान नहीं ह सेस रोज न रहेगी पृ वीयह

विश्वामित्र से:- बेटा जरा धीरे से काम लो

और थोड़ी देर के लिए गुस्से को थाम लो

और तु हारातेजी में आना ठ कनहीं य किजनक ने स्वयंवर का आयोजन किया है हुआ है लेकिन उसने युद्ध का ऐलान किया है यह तो खुद नीरस हो रहा है परंतु तु हारीबहादुरी में कैसे आ गया राम जी के होते हुए तु हाराबोलने का कोई हक नहीं

विश्वामित्र जी से:- राधेश्याम

मेरा स्वभाव ही ऐसा है अपमान ना मुझको गवारा है

है कृपा गुरु के चरण की बल और प्रताप तु हारा है
अभिमान त्याग कर कहता हूं आदेश तु हारा पाऊं म
तो धनुष की या बसा है सारा मांड उठाऊं म
फिर कच्चे घड़े समान उसे दम भर में फोड़ फाड़ डालूं
या गाजर मूली की भांति चुटकी में तोड़ ताड़ डालूं
थल को जल जल को थल कर दूं लाऊं उतार सितार को
सुरमें की तरह पीस डालूं पृ वी और पहाड़ को
फिर धनुष पुराना घिसा-पिटा तिनके-सा किस गिनती में है
सैकड़ कोश तक ले जाऊं इतना बल मेरी उंगली में है

राम से :- गाना

लड़ना अच्छा नहीं भाई
टुक करो समाई
बेमौका तेजी करना और बन बात ही लड़ना
नहीं इसमें कोई बढ़ाई .. टुक करो....
जो करोगे तुम नादानी तो कुल की होगी हानि
दुनिया में होत हंसाई
जिस बात को मुंह से बोलो पहले मुंह में तोलो
है इसमें ही दनाई. . ..टुक करो...
अगर पिताजी सुन पाएंगे हम तुमको धमकाएंगे
हो दोन की रुसवाई ..टुक करो....
तुम कुछ तो सोचो ऐ नहीं जनक हमारे दुश्मन
य इनसे करो लड़ाई .. टुक करो करो.....
नहीं खुशी से हम आए मुनि विश्वामित्र जी लाए
रहो इन के ही अनुयाई .. करो
वह काम करो ातायशवंत रहे यश गाता
है अच्छ नहीं मुर्खताई.. टुक ...

नाटक

राम से:- मेरे बहादुर भाई तु हारा यह केवल ख्याल है
तुमको कायर बताने की किसकी मजाल है

विश्वामित्र का गाना राम से:-

राम चलो मत देर करो तुम ही यह धनुष उठाओगे
और किसी की नहीं है ताकत चि लातुम ही चढ़ाओगे टेक
सब जोर लगा कर हारे ह बैठे मनमार बेचारे ह
इसी इंतजार में सारे ह कुछ तुम ही बल दिखलाओगे
राम.............
यह धनुष य यपिभारी है तो तु हें यादुश्वारी है
निश्चय ही विजय तु हारीहै तुम ही सीता को प्रणावोगे
राम ....
अब चलो ना यादाशाम करो
इस काम को अंजाम करो
रघुकुल का रोशन नाम करो दशरथ का यश फैलाओगे
राम उठो.............

विश्वामित्र का नाटक राम से

विश्वामित्र राम से हे रघुकुल भूषण अब किस बात का इंतजार है और तो जोर लगा चुके आ खसु हारामार है जाओ अपनी वीरता का जो हर दिखाओ
राम का गाना विश्वामित्र से मुनि जी आ ।आपकी सिर माथे मंजूर
अब तक तो म चुप रहा था म भी मजबूर
टेक
आशीर्वाद है आपका अगर राम के साथ
फिर तो यह मेरे लिए है मामूली सी बात
लेकर तेरा आसरा चला यह करने का आज
हे मेरी राखी हो आज भरी सभा में लाज

नाटक

राम का
धनुष उठा कर यायह वही कमान है जिसके वास्ते राजा जनक को इतना अभिमान है
जिसके हाथ लगाते ही हर राजकुमार डरता है
दे खइस कमान का चि लाचढ़ता है

राम धनुष कहीं करती होगी तोड़ देते ह सीताराम को वरमाला पहनाते है

सीता का चले जाना

राम विश्वामित्र से :- नाटक मुनिवर अब तो आप की मन की मुरादें पूरी हुई

विश्वामित्र राम से :- गले लगाकर हां बेटा तुमने त्रवंश की लाज रख दिखाई

विश्वामित्र का चले जाना

परशुराम से मुठभेड़ संवाद

परशुराम जनक से :- राधेश्याम

हे जनक ! कहो यकारण है यह भारी भीड़-भाड़ यहै ?

यह भी सोचा कैसा था वीर में छेड़छाड़ यहै?

परशुराम का धराशाई धनुष को देखना और धिमें होना

परशुराम धिमें राधेश्याम :-

औ ! जनक जनक ज दीबतला, यह धनवा किसने तोड़ा है ?

किसने इस भरे स्वयंवर में सीता से नाता जोड़ा है,

अत्यंत शी बतला उस को, वरना चौपट कर डालूंगा

जितनी भी पृ वीहै तेरी, सब उलट-पुलट कर डालूंगा

राम परशुराम से राधेश्याम :-

शिव धनुष तोड़ने वाला,... कोई शिव यारही होगा

जिसने ऐसा अपराध किया, वह दास तु हारही होगा

कृपापात्र है गुरुओं की ,....वह कब किससे डर सकता है

जिस पर दया हो ा मणकी, यह काम वही कर सकता है

परशुराम राम से धिमें राधेश्याम :-

म कहता हूं सेवक वह,.. जिसका सेवा ही जीवन है

जो वेरी जैसा काम करें वह इस परसे का भोजन है

परशुराम से:- राधेश्याम

बोले सुख का संवाद कभी,..... दुख का विवाद बन जाता है

मीठ बोली के कारण ही, तोता पिंजरे में आता है

भाई ने मीठे वचन कहे तो , धिऔर बढ़ आया है

सबसे पहले यह बोल उठे, इसीलिए चोर ठहराया है

अच्छा अपराधी हम ही सही , हमने ही जहर निचोड़ा है

जो कुछ करना करलो आप ,शिव धनुष हम ही ने तोड़ा है

परशुराम धिमें से:- राधेश्याम

ओ ! राजा के लड़के मुंह नहीं संभाल रहा तू

मुझ जैसे धीके आगे आंखें निकाल रहा तू

परशुराम से:- राधेश्याम धिमें :-

श्रीमान तपस्वी ा मण ,....इसलिए मुझे यह कहना है

ा मणका भूषण धिनहीं,.... जो महाराजा ने पहना है

यह गहना है राजपूत का ,जो पहना जाता है रण में

अपराध   माहो महामुनि, चाहिए शांति   ा   मण्में

परशुराम   ोधमें   से:- राधेश्याम

अरे बालक   यहुआ ?,.. जो बात काटता जाता है

या   योताधारी   ा   मपामझा ?.... जो मुझे डांटता जाता है

मुझको सीधा   ा   मण्म जान,... म   कुल   ोहिहूं

बाल   हमचारीअति   ोधीहूं, निम   हीं

मेरे इस लोहे कै कु   हाड़ेने,... लहू की नदी बहा दी है

इस   भूमि में बहुत बार,...   त्राणीरांड बना दी है

परशुराम से:- राधेश्याम   ोधमें :-

अरे पं   डत्जी देखना,..... नजर नहीं लग जाए

दबा लीजिए कांख में ,....हवा नहीं लग जाए

बस एक ही वार से , असुर का   वाखुला

ह   दीकी एक गांठ पर परस   `का बाजार खुला

य बु   ढाफरसा दिखलाकर   कुमार को डरा रहा

बलीहारी आप तो फूंक से, उदयाचल   उड़ा रहा

परशुराम   ोधमें   से:- राधेश्याम :-

दूध मुंहे बड़ से हंसी छोड़,... अ   यथाफलाएगा परसा

कर देगा खट्टे दांत अभी,... वह स्वाद चखाएगा परसा

बच्चा है बच्चा ही रह,....   य मेरे कर से मरता है

मुझ जैसे   ोधीके आगे,.... किस कारण बचपना करता है

राम परशुराम से:- राधे श्याम

भगवन ! बच्च की बोली में,... कुछ गलत ठ   काहीं रहता है

यह तो गंगा का बहाव है ,...जो आए सो बहता है

ा   मकी भांति आप आते,... तो सह लेता लाते भी

वीर का भेष देख कर ही,... इसने की इतनी बातें भी

जो दंड आप देना चाहें,... उसका अधिकारी तो म हूं

यह सब प्रकार निद   षहै ,...सच्चा अपराधी तो म हूं

परशुराम राम से :-   ोधमें यशवंत सिंह

अरे ओ !   ,...तेरे सिर में यह   यहवा समाई है

मालूम होता है तेरी मौत ही मेरे सामने लाई है

बड़े-बड़े बहादुर मेरी धाक मानते ह

परशुराम से:- राधेश्याम ोधमें :-

अपराधी तो तुम हो साहब,... जो बगाड़ने आए हो

भाई ने दही बलोली,... तुम घी निकालने आए हो

मालिक था उसने इसको,... अपने हाथ तुड़वा डाला

अब कहो कौन होते हो तुम ,...जो करते हो गड़बड़झाला

यामरे धनुष के स्या पें,.. तुम ा मपोने आए हो

यादेख त्रका समाज,.. यूं ही सिर होने आए हो

परशुराम से :-यशवंत सिंह दांत पीसकर

सा ातशरारत की मूरत अब तू इतना उछलाने लगा

और मेरी को खाक में मिलाने लगा

परशुराम प्रशा उठाकर

खबरदार हो जा !

मरने के लिए तैयार हो जा !

तेरे मरने में अब ब कुकलाम नहीं ,

अगर तेरी ह डका सुरमा ना बना दूं,.. तो मेरा नाम परशुराम नहीं

राम परशुराम से :-

जब आपको इसके कसूर वार होने से इंकार है

तो इसमें फजूल त ारहै

राम से :-

भैया ! तुम इधर को आ जाओ

और इनको अधिक ना सताओ

राम परशुराम से :- महाराज ! जरा गुस्से को थाम लीजिए

और मेरे साथ कलाम कीजिए

परशुराम राम से :-पहले इसको मेरे आंख से दूर कर दो

और और यहां से काफूर कर दो

परशुराम से :-

इसका इलाज तो म पहले ही बता चुका हूं

आप अपनी आंख को बंद कर लीजिए और कान में उंगली दे लो

परशुराम राम से :-

देखो वह फिर बोलता है

और नाहक रस् में विष घोलता है

राम से:- पीछे हटा कर

अब यह कदापि नहीं बोलेगा,.. कहिए याआ ाहै

परशुराम राम से :- यावास्तव म ही तु हारकसूर है

राम परशुराम से :-बेशक जो दंड आप दे,... मुझे मंजूर है

परशुराम राम से :- मुझे शक है कि यह धनुष तुमने ही तोड़ा है

राम परशुराम से :- महाराज ! तो आपने मेरे बल को कब आजमाया है

परशुराम राम से :-धनुष आगे करके

लीजिए इस धनुष का चि लाचढ़ाकर

और मेरा इत्मीनान कीजिए

राम परशुराम से :-चि लाचढ़ा कर लीजिए महाराज ! चि लाचढ़ गया

परशुराम राम से :- सहम कर बस भगवन ! उतार लीजिए मेरा इत्मीनान हो गया है

राम परशुराम से :- मगर मेरा तो इत्मीनान नहीं हुआ

परशुराम राम से :- हे भगवन ! आपका इत्मीनान कैसा ?

राम परशुराम से :- मेरा इत्मीनान ऐसा कि मेरा तीर कमान पर चढ़ता है तो बनाकिसी की जान लिए वापस नहीं आता

परशुराम राम से :- तो भगवान यह किसकी जान लेगा

राम परशुराम से :-यह जान तु हारीलेगा और किसकी ?

परशुराम राम से :- कांपकर ना महाराज ! ऐसा नहीं करना म मर जाऊंगा

राम परशुराम से :-हे ! ा मणकुमार यह तीर तो तु हेंसहना ही पड़ेगा

मगर घबराओ नहीं दूसरा कदापि नहीं चलाऊंगा

परशुराम राम से :-नहीं महाराज ऐसा ना कीजिए य मेरी जान आधी तो अब भी नहीं रही

परशुराम से:- पं डतजी बस हो चुके ठंडे,.. कुछ तो अपनी वीरता के जोहर दिखाओ

राम परशुराम से :- तुमको तो अपनी बात की नहीं

मगर शरण में आए हुए शत्रु पर वार करना,.. का नहीं

मगर एक पर छोड़ता हूं कि कभी किसी के मुकाबले पर ना आना

परशुराम राम से :- हे भगवान ! आपकी आ ास्वीकार करता हूं

और अब विं याचल पर जाकर भगवान का भजन करूंगा

राम परशुराम से :- जाइए कृपा निधान !

परशुराम से:- मिश्र जी भोजन तो करते जाना कभी हमारा भी भोजन कर लिया करो

परशुराम मुठभेड़ का सीन समा त

राजा दशरथ का दरबार और राम के राजतिलक की तैयारी

नाटक

दशरथ सभा से :- राज् सभा के `त्रीवीरोजिस बात के लिए म ोआज दरबार लगाया

उस बात को तुम को कह सकूं

आपकी राय हो तो यह रा यबड़े बेटे रामचं को स पन्नाहता हूं

य ोमेरी उ का चौथा पर आ गया है वैसे भी पिता की हैसियत के मुता बक्षा यभी बड़े बेटे का ठ कहेगा आप इस बात पर गौर से सोच लें

सभासद दशरथ से:- है पृ वीराजहमें यह फैसला मंजूर है आप इस शुभ समय की तिथि निश्चित कर लें

दशरथ सभा से :- मेरी राय में तो कल 10:00 बजे का समय निश्चित रखता हूं मंत्री जी आप महल में से श्री रामचं जी को बुला लाओ

मंत्री दशरथ से:- जैसी आ ाहो महाराज आपकी आ ास्वीकार करता हूं

दूसरा श्यप्रारंभ चालू रहता है

राम दशरथ से:- हाथ जोड़कर पिता जी प्रणाम ! आपका सेवक आपकी आ ानुसारहाजिर है

दशरथ राम से :- पुत्र राम राज् सभा की सर्वस मतिके अनुसार कल तुमको राजतिलक दिया जाएगा

यह अमानत तु हेंविश्वास पात्र जान कर दी जाती है जब तुम शाही ताज पहनोगे तो रघुकुल की रसम की हर प्रकार से लाज व मर्यादा रखोगे

राम दशरथ से:- सिर झुकाकर पिता जी ! आप का आदेश मुझे हर तरह से मंजूर है

दशरथ सभा से :-इस दरबार बर्खास्त किया जाता है और कल सुबह राम का रा यभिषेककिया जाएगा

सभा का श्यसमा त

रंग में भंग

कैकई का महल

मंथरा कैकई से :-रानी जी आप   याबना रही हो ?

कैकई मंथरा से :- दासी मंथरा आज तूम बड़ी देर से आई हो ?   या रास्ते में कोई सहेली मिल गई थी या दरबार में चली गई थी ?ब

मंथरा कैकई से :- रानी जी   याबताऊं आज एक ऐसी बात सुनकर आई हूं जिसको सुनते ही मेरे तो पांव तले की जमीन ही   खसकाई

कैकई मंथरा से :- जरा हमें भी तो सुनाओ ऐसी   याबात सुनकर आई हो

मंथरा कैकई से :-अजी   यासुन अाई हमारी तु   हारीतो शामत आ गई

कैकई मंथरा से :- राधेश्याम

अरे हमने शीश गुंथ आए ह पर तूने   य बाल   बखेहे

तू जो रो रही है ऐसे   या   तेरे ह

या कहीं झगड़कर आई हो भूखी अथवा   यासीहो

है सौगंध बता ज   दीदासी   य तुझे उदासी है

मंथरा कैकई से :- राधेश्याम

खुल गए भाग कोश   याके हे दया उसी पर विधना की

अभी की रानी किस घोर नींद म हो अब लोक चाल निज राजा की

तू सदा जीतति थी चौसर पर अब तो हार खा रही है

ले देख गोट रानी किस घर पर मार खा रही है

वे रंग में है बदरंग में है तू   यापासे नृप के   याहे

तेरे छ   केछूट जाएंगे अब उनके तो पोबारह ह

तुमको प्राण समझते थे निशि वासर तेरे रहते है

याभरत को करते ह आंख का तारा कहते ह

वे ही राजा वे ही दशरथ जड़ तेरी काटे जाते ह

हकदार राम को माना है उसको ही मुकुट पहनाते ह

कैकई मंथरा से :-   ोधमें राधेश्याम

चल निकल यहां से चंडालिनी किसने तेरी मति मारी है

जो रुई की ढेरी में बनकर आई चिंगारी है

अब के ऐसे वचन कहे तो मुंह तेरा नुचवा दूंगी

अगर राज राम को होगा तो मुंह मांगा इनाम दूंगी

मंथरा कैकई से :- गाना

कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो टेक

रानी तू है भोली-भाली अपने श्रंगार पर मत वाली

तू तो रह गई ब कुखाली

सो रही बांह सिरहाने दे

कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो ....

बेशक तेरा दिल है पाक अपना समझ उसे तू लाख

मेरी कटवा दीजिए नाक तुमको पास अगर आने दे

कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो ....

जब तक नहीं था कुछ मुख्तियार

तब तक था फरमेदार

जिस दिन होगा मुख्तियार तुझे रोटी तक भी न खाने दें

कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो ....

उड़ाना तुम महल में काग

फूटे उधर भारत के भाग

तू अब भी अपनी जि को त्याग

उसको मत पैर फैलाने दे

कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो ....

मंथरा कैकई से :-राधेश्याम

या पड़ी ऐसी मेरी

जो अपना मुंह नोचवाऊंगी

दोन में कोई राजा हो तो

म दासी ही कह लाऊंगी

म ने अदा कर दी अब तलक नमक जो खाया है

इसलिए भरत का है ख्याल ,वष तक गोद खलाया है

यदि इस रण में हार गई, तो भरत रहेगा दांस में

रखेगी तुमको कौश या, दासी समान रनिवास में

कैकई मंथरा से :- राधेश्याम

दासी तुमने ठ कहा

अब यान्मुझे भी होता है

अपना अपना ही होता है

और गैर गैर ही होता है

मेरा भला चाहती है तू तुमको पहचान लिया म ने

निश्चय ही कपट झूठ में है यह सब जान लिया म ने

तो बुद्धिमती है बु ढी है तू ही मारग दिखला मुझको

हो भरत लाल को राजतिलक वह सरल उपाय बता मुझको

कैकई मंथरा से :-गाना

बांदी बता कोई तदबीर अब म कैसे बनाऊ टेक

मुझको नहीं था ब कुख्याल बेशक हो जाती पायामाल

तूने कर दिया नमक हलाल नहीं तेरा एहसान बुलाओ

बांदी बता कोई तदबीर अब म कैसे बनाऊ ....

अगर तू ना करवाती याद ,में तो हो जाती बर्बाद.

तेरी हमदद की दाद ,देती हुई सदा गुण गांऊ

बांदी बता कोई तदबीर अब म कैसे बनाऊ ....

हुई खबर पर सारी ,तूने खूब करी होशियारी

तू है मुझे यारीले हार तुझे पहनाऊ,

बांदी बता कोई तदबीर अब म कैसे बनाऊ ....

लेकिन इतना और बतादे ,करना बहाना कुछ सिखा दे

ऐसी कोई नेक सलाह दे ,जिससे काम पार हो जावे

बांदी बता कोई तदबीर अब म कैसे बनाऊ ....

अगर यह बन गया मेरा काम, तुझको दूंगी खूब इनाम,

बैठ पलंग पर कर आराम तुझसे ना कुछ ना काम बनवाऊ

बांदी बता कोई तदबीर अब म कैसे बनाऊ ....

नाटक

कैकई मंथरा से :- यारिद्दासी मुझे यह बता म किस तरह राजा को समझाऊं

वह तो रा यसभामें ही सबको कह चुके ह

मंथरा कैकई से :- राधेश्याम होगा यह याद तु ह्रैंरानी दोवर राजा पर धाति है

यह घर युद्ध जीतने के लिए दो ही तीर काफी है

नृप जब महल में आए,... तिरछ भवै कमांनो को

पहले दिखाओ त्रयचरित्र ,... फिर मांगो वरदानो को

मांगना खूब चतुराई से,.. जो मांग सफलता पा जाए

उस समय मांगना जब राजा,.... सौगंध राम की खा जाए

कहना दो वचन मांगती हू,... राजा श्री भरत लाल जी हो

चौदह वष को रामचं ,... तपस्वी बनकर बनवासी हो

कैकई मंथरा से :-राधेश्याम

म कहती यारिद्दासी ,..तेरी मती की बलिहारी है

है अब भरत ॠ प्येरा,... तू ही उसकी महतारी है

मुझ भोली ने यासमझा था,.. याराम भरत की जोड़ी है

यारिसुम पर वारी जाऊं,... दीवार कपट की तोड़ी है

मंथरा कदापि नहीं होगी,... कौश याकी मनमानी अब

राज् करेगा भरत लाल ,...यह हठ म ठानी अब

मंथरा कैकई से :-राधेश्याम

सब समझ गई सब जान गई,... अब आग लगाओ कोप भवन में तुम

वह देखो संधा होती है,...... अब जाओ कोप भवन में तुम

कैकई के महल में दशरथ का प्रवेश

दशरथ कैकई से :-राधेश्याम

हे प्राण प्रिय ! यह यबोलो ढंग-बेढंग यहै ?

सूरजमुखी फूल से मुखडे का, हो रहा मलिन रंग यहै ?

दशरथ कैकई से :-गाना बहरे तबील

यमुसीबत पड़ी तुम पर हे प्रिय जी

हाल यहै मुझे सुना तो सही......

सिरहाने खड़ा हूं बड़ी देर से

जरा को ऊपर उठा तो सही

मेरी यारीयु हारीदशा यहुई

होश अपने ठिकाने पर ला तो सही

छोड़कर य पड़ी पर

पास मेरे ए ! यारीआ तो सही

हो गया आन की आन में रोग या

अपनी मुझे दिखा तो सही

आ उठाऊं पलंग पर बैठाऊं तुझे

हाथ अपना इधर को बढ़ा तो सही

यासताया दुखाया किसी ने तुझे

नाम उसका मुझे बता तो सही

करूं टुकडे जब चैन आवे तभी

तू जबा को जरा सी हिला तो सही

हो गई मुझसे नाराज यइस कदर

जरा मुंह पर से आंचल उठा तो सही

रोग हो तो बुलाऊं अभी वै यको

बात को ठिकाने लगा तो सही

नाटक

दशरथ कैकई से :-राधेश्याम

जिन आंख ने ही तराश दिया,. वह आंखें ही फुड़वा दूंगा म

जिसने जीवा कड़वी बोली हो,... वह जिंदा कटवा दूंगा म
यो क भवन बैठ हो,.. य भारी तुमको पल पल है
जो तु हारा प्राण से यारा है,... उसका अभिषेक दिवस कल है
उठो सोलह सिंगार करो,..... य धूलि धूसरित हो रानी ,
या संकट या पीड़ा है,..... या इच्छा है मांगो रानी
कैकई दशरथ से :- गाना बहरे तबील
मुझ नसीब जली की न पूछो यथा..जाओ आनंद अपना मनाओ
बलम
न जियूं न मरू यूंही आहे भरूं,..दोष किस पर धरू मेरे फूटे
कर दिया मुझको बर्बाद बस आप ने,..मेरे जीने का कुछ भी रहा ना

आज रानी से बांदी हुई कै क ,...कौन पूछे भला मेरे दिल का म
दे दिया राम को राज बस आपने,..भरत को कर दिया बेनबा एकदम
या नहीं भरत बेटा रहा आपका,...ऐसा करते हुए भी न आई
Page no 41 Rama 37
कैकई दशरथ से :-राधेश्याम
म कौन तु हारी होती हूं,.... य मुझे सताने आए हो
मन में रखते हो स्वार्थ भाव,...मुझे मनाने आए हो
इस जग में कौन हुआ किसका,...सब मुंह देखी की चाहत है
है वही प्राणप्रिय जिससे पूरी अपनायत है
तुम कहते हो मांगो रानी , वह जान मांग पर मिटती है
ब मांगे मोती मिलते ह मांगे से भीख न मिलती है
अच्छा जो मांग शीश पर है दे ख मांग या देती है
ब खोल को मांग सदा हाथ से बंधवा देती है

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम
ऐसे वैसे से मत मांगो मांगो उससे जो पूरा हो
जो सदा मांग का प्रेमी हो जो सदा बात का सच्चा हो
अच्छा ये बात जाने दो बतलाओ तो य रुठ हो
तुम तो फूल सी हंसती थी इस समय य रोती हो

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम

यासुम मेरे स्वामी हो मेरा मन रखने वाले हो
रघुवंशी हो सत्यवादी हो प्रण पालन करने वाले हो
चाहे हो जाए मित्र शत्रु चाहे संसार पलट जाए
शीश कट जाए तो कट जाए वचन न जाने पाए

कुछ यान्तु हैहै तुम पर है मेरे दे दो वरदान प्रभो
वह ही धन मुझको दो बनते हो यदि धनवान प्रभो

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम

दो वर तो कोई चीज नहीं जितने भी चाहे ले लो रानी
म सौखी है नहीं नहीं जो भी मन भावे ले लो रानी

गरजे ना बादल बरसे न बूंद यह सब धोखा मेघ में है
म सौखी है नहीं नहीं बस एक बात मद में है

Page no 42 Ram 38

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम

कुछ ोधनहीं अपमान नहीं करती हूं म उपवास नहीं
सच तो यह है मुझको तो अब मद का विश्वास नहीं

चिकनी चुपड़ी बातें कहकर मुझ अबला को मत बहकाओ
सच्चे हो तो रघुवंशी सौगंध राम की खा जाओ

दशरथ कैकई से:- कसम

परमात्मा गवाह है मेरा अनुचित नहीं होगा रानी
अयो यापतिनरेश से विचलित नहीं होगा रानी

है पहली मर्तबा उस पाक नाम की
खाता हूं तेरे सामने सौगंध राम की

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम

लो सुनो प्राणपति प्राणनाथ यह रानी आज मांगती है
कोश यमंदन के बदले निज सूत को रा यमांगती है

वचन दूसरा जो है मेरा सो सुन लो कम पर मत होना
अयो यमरेश कहलाते हो तो सत् विचलित मत होना

राजा जो राम हो रहा है वह राजा नहीं वो दासी है
कल ही से 14 वष को तपस्वी बनकर वनवासी है

नरेश यासच्चा हो तो यारके स मुखखोलो
रणवीर अगर कहलाते हो तो बोलो एवमस्तु बोलो

दशरथ कैकई से:- गाना रंजिश में

ऐ री बेवफा मुझे सच बता तुझे राम से याबैर है टेक
यभारत बेटा आपका रामचं बलगैर है

जहां राम दिल का सुरूर है वहां भरत आंख का नूर है
हां इतनी बात जरूर है वह मुश्तक बलौर है

Page 43 Ramayana 39

मुझे दोन एक समान है दशरथ के दोन प्राण ह
म जिस्म हूं वह जान है नहीं चैन उनके बगैर है

देकर दगा मत प्राण ले मेरी इस तरह मत जान ले
हट छोड़ कहना मान ले इसमें ही सबकी खैर है

कुल तेरा हो जाएगा याहाथ तेरे आएगा
तुझे खुद ना जीना आएगा य खा रही खुद जहर है

नाटक

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम

सब पुत्र पिता को समान है तू भी यह बात जानती है
है मुझे एक से रामभरत वह भगवान मेरा सा ीहै

पहला वर जो मांगा तुमने वह हुआ नहीं है आभास मुझे
मिल जाए राज भरत को सभी स्वीकार मुझे

रानी रानी यह तेरा पति जो तेरा पू यदेवता है
इस समय पांव पकड़कर तेरे बस इतनी भीख मांगता है
तपसी होकर दूर न हो मुझको आनंद धाम मेरा
मेरी इन बुढ़ी आंख के आगे ही रहे राम मेरा

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम

दो वर जो मांगे है म अेब उन को बदल नहीं सकती
पड़ गई रेखा जब पर धोने से निकल नहीं सकती

यदि दय आपका दुखता हो तो एक सुझाव सुझाती हूं
बुढी आंख के आगे ही यह रहे उपाय बताती हूं

अवधेश बात घर में ही है कुछ पंथ में अपमान नहीं
तुम अपने मुख से यह कह दो दूंगा पिछला वरदान नहीं

40 44. page

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम ोध

औ दु टबुद्धि नारी उच्चे से हमें गिराती है
जो हमारा जीवन है उससे तू हमें डगाातीहै

हम सूर्यवंशी की चादर में कालीमा नहीं आने देंगे

सुनती है देंगे हम पर वचन नहीं जाने देंगे

यउलझन है वरदान न दें तो हमारा जाता है
उस और राम वन में जाता है तो प्राण सिधारा जाता है

रानी रानी तू यकहती है मेरा तो प्रण पर है
म यातू यसंताने यबलिदान सब कुछ पर है

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम
सत्यवादी था नरें हरिश्चं जिसने सत जान दी जान संकट में
जिसकी सच्चाई का चिराग जगमगा रहा है मरघट में

म तुमसे हरिश्चं जैसा मरघट का वासना मांग रही
म तुमसे शीवी दधीचि जैसा ह डीया माँस न मांग रही

| म मांग रही अपना कर्जा देना तुझ को वाजिब है
तू हरिश्चं के कुल में हो तो दे यही मुनासिब है

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम
मेरा कुछ नहीं बगड़ताहै तू जो मुझको ललकार रही
रानी तू अपने पांव में है आप कु हाड़ीमार रही

आज नहीं है आपे में जिस दिन आपे में आएगी
उस दिन अपनी करनी को सिर धुन धुन कर पछताएगी

रानी रानी अांचल पसार कर्जा भी ले और दान भी ले
ले राज और बनवास भी ले , वर भी ले और प्राण भी ले

यहां पर वचन देते हुए राजा दशरथ का मूर्छित होना

अगला श्य

मंत्री दशरथ से :- महाराज राजतिलक का सब सामान तैयार है और आपका इंतजार है

Pege no 44   ram 41

कैकई मंत्री से :- हे मंत्री ! महाराज राज के कार्य में सारी रात जागते रहे मंत्री जी आप रामचं को यहीं पर भेज दीजिए

मंत्री कैकई से :-जैसी आ ाहो ! रामचं को आप का संदेश पहुंचाता हूं

राम दशरथ से :- पिता जी प्रणाम आपका सेवक आपकी आ ाके अनुसार आपके चरणो में हाजिर है

दशरथ राम से:- आंख खोलते हुए बेटा ! केवल तु हेंदेखने के लिए आ साथी अब तो हमारी अंतिम यात्रा की तैयारी है

राम दशरथ से :-रो कर पिताजी ! खैर तो है चेहरे पर यह कैसी उदासी प्रतीत हो रही है

दशरथ राम से:- आंख में रो कर आ बेटा जरा गले से लगा लूं अब मेरा यह आखरी आशीर्वाद है

राम दशरथ से :-गाना बहरे तबील

यहुकम है मुझे आप आ ाकरो टेक
हाथ में बांधे खराब ताबेदार हे पिता
मेरे जीते जी हो कोई   आपको
मेरे जीने पर है धि कारहे पिता

आपको देख इस दशा में मेरा हो रहा सीना फिगार हे पिता
कुछ वजह बेअ लीकी बताओ मुझे

पूछता हूं म बारंबार हे पिता

जान मेरी निकलने को तैयार है

नजर आते ह खोटे आसार हे पिता

कोई दुख सुख का साथी रहा ना बजआपके

कौन मुझको करेगा याहे पिता

Page 46 42

कोई मुंह से आप इशारा करो

यारहा है मेरा ऐतबार है पिता

जो कहो सो करने को तैयार हूं

जान कर दूंगा निसार है पिता

नाटक

राम दशरथ से :- पिताजी आप की हालत देखकर कलेजा मुंह की और आ रहा है

है पिता जी यह है कि यागजब है

और आपको परेशान होने का यासबब है

हे पिता जी आपकी आंखें पत्थरा रही है और अंदर को धंसी जा रही है

आ खकोई बात तो बताओ ना मालूम आज के दिन ऐसी याआफत आ गई जो आपकी आत्मा इतना सह रही है

कैकई राम से :-राधेश्याम

तुम बार-बार यासोच रहे हो

किस दुख ने इ हेंदबाया है

इसका कारण बतलाने को

म ही तु हेंबता बुलाया है

2 वर देने का वचन मुझे राजा ने दे रखा था

जब समय आया तो मांग लिया जो कुछ भी मुझे मांगना था

मांगा यह राज तिलक भारत को 14 वष का बनवास तु   हें

 यह सुन नृप मूर्छित हुए

इच्छा थी रखें पास तु   हें

पर हुआ वही जो होना था

पूरी न हो सकी इच्छा यह

 तुम अपना   समझते हो तो

शीश चढ़ाओ आ   ।यह

राम कैकई से :-राधेश्याम

बड़भागी वह बेटा है जो मात-पिता का आ   ।कारीहै

माता यदि यही आ   ।तो जिंदगी पवित्र हमारी है

यशवंत सिंह

माता जी यह तो मामूली सी बात है

जब तक आ   ।का पालन न कर दूं

तब तक प्रति   ।करता हूं किसी बस्ती में भी पांव नहीं रखूंगा

Page no 47 43

कैकई राम से:- हां बेटा   ब   कुछ   कहै मेरे लाल अभी रवाना हो जाओ

और अधिक देर ना लगाओ

  य   ि आपको देख कर इनको संताप हो रहा है

कैकई राम से :-राधेश्याम

है अंतिम आ   ।और एक

फिर लौट यहीं पर आना तुम

म भगवे वस्त्र मंगवाती हूं

वह पहन वन में जाना तुम

राम कैकई से :-राधेश्याम जैसी आ   ।हो माता जी !

राम का चले जाना पद के पीछे

नाटक

दशरथ कैकई से:-

ओ बेहया ! वैसे तो तूने सब जलाकर खाक कर दिया

हाय हाय भगवान यह कैसी स्त्री है जो एक और दोष एक पर धर रही है

कुछ तो का भय कर मगर याद रख दु खयके साथ हंसी करना मुनासिब नहीं और किसी के पर नमक छिड़कना ठ कनहीं

दशरथ का बेहोश हो जाना

श्यसमा त

कौश   याका महल

राम कौश   यासे :-प्रणाम माता जी !

कौश   याराम से :- माथा कम कर खुश रहो मेरे लाल आसन की ओर इशारा करके यहां पर बैठो मेरे म अभी जाती हूं और खाने के लिए कुछ मिठाई लाती हूं

राम कौश   यासे :- माताजी बस रहने दीजिए और जाने की आ   ा दीजिए

कौश   याराम से :- न बेटा अधिक देर नहीं लगाऊंगी मगर थोड़ा सा भोजन तुझे जरूर   खलाऊंगी य   ाआज तु   हेंराजतिलक की रसम होती है

राम कौश   याजय माताजी राजतिलक के लिए जो वचन निकलना था वह तो कभी का निकल गया मुझे बाजाय अयो   याके जंगल का राज मिल गया है

कौश   याका समेत भोजन गिर जाना

राम कौश   यासे :- माताजी ! जो बात म   नेकही है वास्तव में वह सही है

राम कौश   यासे :- गाना लावणी में

राज के बदले मुझको माता हो गया हुकम फकीरी का

खड़ा मुंतज़िर है माता तेरे हु   मअ   खरका टेक

दीया भरत को राज् पिता ने मुझे हु   मबन जाने का

चौदह साल रहूंगा बन में हु   मनहीं घर आने का

हु   मनहीं रहा अब मुझे इस घर का खाना खाने का

नहीं किसी का दोस है माता बदला रंग जमाने का

राजपाट का गम नहीं मुझको ना कुछ फिकर अमीरी का

राज के बदले माता मुझको ....

कौश   याराम से :- लावणी

बैठ थी खुशी में बैटा इन बात का शाान गुमान नहीं

 सुन कर तेरि बात लाडले रही बदन में जान नहीं

तूने की बन कि तैयारी कौश   यकी खैर नहीं

प्राण त्याग दू अभी रहूगीं जिंदा तेरे बगैर नहीं

दे दे राज खुशी से उसको .उससे मुझे कोई बैर नहीं

वह भी बेटा तू भी बेटा. भरत मुझे कोई गैर नहीं

    बनराज के बेटा मेरी घटती कोई सान नहीं

सुन कर तेरी बात कर ....

राम कौश   यासे :- हुकुम पिता का साथ जान के जब तक दम में दम

माता

ठाट-बाट और राज पाठ का मुझको नहीं है गम माता

वचन पिता का पूरा कर दूं दीजिए आप हु   ममाता

रघुवंश की आन न जाए सिर हो चाहे कलम माता

फिर नहीं कुछ फि   फि   फकत पिता की पीरी का

राज के बदले री माता हो गया हुकम फकीरी का.............

कौश   याराम से :- मिला भरत को राज मुझे .... इसका नहीं है गम

बेटा

मेरे वास्ते भरत राम दोन ही एक सम बेटा

नहीं किसी का कुछ भी   बगड़ाफूटे मेरे   बेटा

जाने से तू पहले कर जा सिर को मेरे कलम बेटा

तुझ   बन्मेरे लाल मुझे जिंदा रहना आसान नहीं

सुन कर तेरी बात लाडले रही बदन में जाना नहीं

राम कौश   यासे :- चंद रोज की बात है थोड़े दिन तक करो सबर माता

रोने धोने का नहीं है मौका

दिल पर करो जबर माता

प्राबंध के में होते शेर जबर माता

न जाने यहोगा कल को किस को याखबर माता

किसी पर गिला फैसला हुआ अमर तकदीर का

आज के बदले माता मुझको हो गया हुकुम फकीरी का

कौश याराम से :-मेरे दिल कि म ही जानू और को नहीं खबर बेटा

तुझको करके दूर नजर से कैसे करूं सबर बेटा

बेशक दे दे राज भारत को मेरा नहीं उजर बेटा

मां बेटा एक जगह बैठ कर कर लेंगे यहीं गुजर बेटा

तू हो मेरे पास मुझे चाहिए और सामान नहीं

सुन कर तेरी बात लाडले

राम कौश यासे :-

14 साल जमाना याहै हो जाएगा

एक दिन घटते-घटते आ खकम हो जाएगा

एक रोज सब अदना आला एक ही सम हो जाएगा

आ ाके आगे सब का सिर खम हो जाएगा

नहीं रहेंगे भेदभाव कुछ शाही और बजीरी का

इसके बदले माता मुझको हो गया हुकम फकीरी का

कौश याराम से :-14 साल शादी का हिस्सा कहने को मामूली है लेकिन

मुझको तो है बेटा एक एक दिन भी सूली है

तुम तो हो खुद वि वानबात न तुमसे भूल ही है

भूकंप पिता का मानोगे तो मेरा हु मअधूरी है

मेरा हक है उनसे यादा यातू मेरी संतान नहीं
तेरी बात लाडले रही बदन में जान नहीं

राम कौश यासे :- ऐसे मौके जिंदगी में मां बार-बार नहीं आते ह दुख सुख में जो रहे एकरस वही मनु यकहलाते ह

रंग मुसीबत गर्दिश गम इंसान पर ही आते ह मुसीबत देर पुरुष नहीं पीछे कदम उठाते ह
नहीं मुझे अफसोस जरा नहीं कारण कुछ दल गिरी का

रा यके बदले मुझको माता हो गया हुकम फकीरी का

कौश याराम से :-और बेटा याम तुमको इसलिए ही पाला था
यही दिखाने को यातूने होश संभाला था
इसलिए म अपने को सो सो विपदा में डाला था

खूब बुढ़ापे में की सेवा करना यही उजाला था
यासमझाऊं यादातुमको तु कोई नादान नहीं
सुन कर तेरी बात लाडले रही बदन में जान नहीं

कौश याराम से :-हे बेटा तुम तो यह अच्छ तरह से जानते हो की पिता से यादामाता का हक संतान पर होता है
राम कौश यासे :-NISANDEH बेशक माता इसमें याशक है

कौश याराम से :-तो स्वामी जी की अपे ातुम पर मेरा हक यादाहै
राम कौश यासे :- जब म मान चुका हूं तो इसका दोहराना से फायदा है
कौश याराम से आवाज से या सच्चे दिल से
राम कौश यासे :- दिल से ही नहीं अपितु सच्चे दिल से

कौश याराम से :-दिल ही दिल में प्रस न्होकर तो अब आए काबू में है कि तुम वरना जाओ

Page no 51 Ramayana 47

राम कौश यासे :- माताजी म आपकी दिल की मनसा को समझ लिया मगर यह आप का उ टाख्याल है

कौश याराम से :-बेटा वह किस तरह

राम कौश यासे :-वह इस तरह है कि पिताजी हम दोन के स्वामी है और उनकी आ ा का पालन करना हम दोन का है य कि वह आपके पति है और मेरे पिता ह इसलिए उनकी आ ा विरुद्ध चल ना हम दोन के लिए पाप है इसलिए आपकी आ ा मानने के लिए म तैयार नहीं हूं

कौश याराम से :- रोकर बेटा आप जिस समय वन में गए मेरा तो दम ही निकल जाएगा

राम का गाना कॉपी में रोवे मत ना मां मेरी तू नेट से डाउनलोड करना है

राम कौश यासे :-माता जी आप धैर्य से काम लो

कौश याराम से :-बेटा किसके आश्रय बेटा कोई सहारा भी तो हो

राम कौश यासे :- हे माता जी वह दिन नहीं रहे तो यह भी नहीं रहेंगे

कौश याराम से :- रो कर अच्छा बेटा जिस तरह होगा जान पर जबर सहेंगे मगर उस पराई बेटी को किस तरह से समझाएंगे

सीता का अंदर से आना

सीता कौश यासे:- माता जी प्रणाम कहिए याआ ा है

कौश यासीता से:- रो कर बेटी याबताऊं और कैसे सुनाऊं यह खुद समझा देंगे और सारा समाचार सुना देंगे

सीता राम से :- हे प्राणनाथ माता जी यह याकह रही है और यइस प्रकार आंसू बहा रही ह यदि कुछ ना हो तो मुझे भी समझा दीजिए

राम सीता से:- हे प्रिय जी पिता जी की आ ा से 14 वष के लिए वन में जाता हूं
और तो सब ने आ ा दे दी है अब तुमसे आ ा चाहता हूं

इसमें ना पिता जी का दोष है ना माता केकई का कसूर है
अपितु को इसी तरह मंजूर है

ए ! प्रिय 14 से में एक भी दिन अधिक नहीं लगाऊंगा

म तो हु मपिता का मान जाता हूं आज ही वन में

किसकी कॉपी पता करनी है किसके पास है

Page 52 Ramayana 48

सीता का गाना

रहना यहां नहीं मंजूर आपके साथ चलूंगी पिया में टेक

सुख में रही आप के साथ दुख में कहां अकेले जात
से जिऊंगी तुम बल्साथ त्याग दूं प्राण यही एक में
रहना यहां नहीं मंजूर आपके साथ चलूंगी पिया वन में

अयो यानहीं जहां पर राम यहां रहने का यापरिणाम
करो जो तुम वन में विश्राम काम यहै मेरा मेहलन में

हो गया यामुझसे अपराध करो ना यो मुझको बर्बाद

निशदिन रही आपकी याद भर-भर आए नीर नैनन में
रहना यहां नहीं मंजूर

दीया था माता ने उपदेश चाहे दुख हो चाहे लेश
हो घर में चाहे प्रदेश रहना स्वामी के चरनन में

नाटक

सीता राम से :- हे प्राणनाथ ! जो कुछ पिता की आ है उसके बारे में मुझको
ना कोई ऐतराज है वह तो हर तरह से ही मालिक और मुख्तियार ह

हे स्वामी जी आप उनकी आ का पालन कीजिए
किंतु मुझ दासी को साथ चलने की आ दीजिए

जब आप का जंगल में कयाम है

मेरा अयो यामें याकाम है

राम सीता से :-हे प्रियवर जी तुम जंगल के सहन नहीं कर सकोगी

सीता राम से :- है स्वामी जी आपके चरणो में रहकर सब दूर ह गे

राम सीता से :-वहां जंगली जानवर तुमको सताएंगे

सीता राम से :- जंगली जानवर से अपना दिल बहल आएंगे

राम सीता से :- गाना

परदेसिय से ना अ खयामिलाना

घर बैठो न बन को चलो तुम सिया टेक

पत्ते बछाकभूमि पर सोया न जाएगा

दहाड़ेंगे सिंह जोर से रोया न जाएगा

रात होगी अंधेरी ना होगा दिया

बैठो ना बन को चलो तुम सिया

Page 53 49

वन खंड में हर तरह की मुसीबत उठाओगी

कहो कंकड़ की राह में कैसे चल पाओगी

दुख होगा जब पांव में छाला छिया

घर बैठो न बन को चलो तुम सिया

रखा पलंग से न पांव नीचे उतार कर

वन खंड में बैठ जाओगी कहीं हार कर

पछताओगी पीछे न करना किया

घर बैठो ना बन को चलो सिया

नाटक

राम सीता से :-ठ   के है   यारीतुम मुसीबत के समय काम आती हो यह हर स्त्री का   है

फिर भी म कहता हूं आप का घर में रहना ही उचित है

सीता का गाना बहरे तबील

जो पिता का हु   म है खुशी से करो
कल दूंगी हरगिज म उस में दखल ही नहीं
साथ जाऊंगी म भी बन आपके

इस जगह रहूं म एक पल भी नहीं

साया बनकर रहूंगी संग आपके
न ससुर घर रहूं म रहूं बाप के
देते हो बदले में किस पाप के
देखना चाहते जो मेरी   ही नहीं

तुम पिता का वचन तो निभाने लगे
कॉल अपना मगर   य भुलाने लगे
मुझको उ   टी सीख   य सिखाने लगे
म करूंगी इस पर हरगिज अमल ही नहीं

नाटक

सीता राम से :- स्वामी जी मुझे आपकी आ   ा हर तरह से मंजूर है मगर अपने   से सीता लाचार है स्वामी जी आप अपने को तो कलंक से बचाते हो मगर यह कलंक मुझ पर लगाना चाहते हो

हे प्राणनाथ मरते मर जाऊंगी परंतु पिता जनक तथा माता धरणी को बट्टा नहीं लगाऊंगी

गाना राम और सीता का मिलकर

राम :- तुम अयो   या में रहो मेरी   यारी
सीता :- पिया हरगिज़ नहीं
राम :-वहां दहाड़ेंगे शेर

सीता :- है हम भी दिलेर

राम :-कहना मानो जनक की दुलारी

सीता :-पिया जरुरी नहीं

राम :-वहां कौन होगा सहाय

सीता :-आप के भाई

राम :-हट छोड़ो ना मेरी यारी

सीता :- पिया परवाह नहीं

नाटक

राम सीता से :-अच्छा प्रिय चलो अब मुझे विश्वास हो गया है कि अब तुम नहीं मानोगी अच्छा माताओं को नमस्कार करो

सीता कौश यासे :- पांव पकड़ कर रोते हुए माता जी आपके पांव लगती हूं और आपकी आ ाके लिए प्रार्थना करती हूं

कौश यासीता से बेटी याबताऊं रोते-रोते आंखो का पानी हो गया अब तो अपनी किस्मत को रो रही थी अब तुम भी साथ छोड़ने की को हो अच्छा बेटी किसी पर यागिला है मुझको तो अपने कम का फल मिला है

कौश याका मूर्छित हो जाना

का ाधमें आना इस श्यमें

अब तक खूने जिगर पिया अपने को खूब माताजी हालत देखकर सीना चाक हो गया मेरा जिंदगी और फटकार है

Page 55 Ramayana 51

हाथ से सिर उठाकर

माताजी आंखें खोलो तु हारा तु हारेकदम पर निसार है
अगर न बोलती हो तो

खंजर निकाल कर

भी तुमसे पहले मरने को तैयार है

राम से हाथ पकड़कर भैया होश करो इस कायर पन का या है

राम से में भैया अजब अंधेर है जब खुद राज के हकदार ह तो दूसरे का रा यकरने पर याअधिकार है अगर किसी की हि मत्है तो दो हाथ देखें और अपने दिखाएं ताकि राज करने का मजा भी आ जावे म यहां पर किसी की बेईमानी नहीं चलने दूंगा

राम से यारे तुम किसके हाथ देखोगे और किस को अपने दिखाओगे और किस के स मुख्तलवार उठाओगे

राम से सारे कुल का नाश हो रहा है उधर पिताजी की हालत बदतर है उधर माताजी जान को रही ह नामालूम ाताजी तु हेंकौन सा चावल चढ़ रहा है हां भरत इस तरह रा यकर लेगा और सूर्य वंशी ताज अपने सिर पर धर लेगा

राम से यारे ाताजरा गुस्से को दिल से निकालो इसमें भरत का याकसूर है वह तो यहां से कोस दूर है माता केकई का भी एक यूं ही बहाना है

दरअसल हमारी अजमाइश का जमाना है आप मामूली सी बात पर घबरा गए और य दुनिया को हंसा रहे हो

राम से भैया तुम भी साथ जाओगे तो भारत का याहाल होगा

राम से भैया से कैसा सवाल

राम से इस अवस्था में उसका जीवित रहना अवश्यंभावी है

राम से उससे पहले मरने के लिए तैयार है

राम से भैया तु हारीइस जिद में सारा कुल बेचिराग हो जाएगा

Page 56 Ramayana 52

राम सिंह आपकी आ ाशिरोधार्य ह मगर म इस जगह नहीं रह सकता और आपकी जुदाई के सदमे को नहीं सह सकता अगर आप मुझे यहां छोड़ जाएंगे तो शरीर तो यहां जरूर रह जाएगा मगर प्राण आपके साथ जाएंगे

सुमित्रा अंदर से आकर शाबाश बेटा शाबाश बेटा आज तूने मेरे दूध का हक दे दिया

राम से भइया उचित तो यही था तुम यही पर रहते और भारत का राज कार्य में हाथ बटाते

अगर तु हारछ `श्ययही था तो अब देर करना है अच्छा भैया माताओं को अंतिम नमस्कार करो और वन की राह चलो

नाटक

कौश यराम से :- बेटा दिल तो नहीं चाहता कि तुम को यहां से विदा करूं परंतु याक्करूं मुझे की जंजीर में जकड़ रखा है बेटा तु हें इतनी नसीहत जरूर देती हूं जिस तरह तुम तीनो ने पीट दिखाई है उसी तरह कर तीन अपना मुंह दिखाना

कौश यराम से :-राधेश्याम

अच्छा आ जाओ मेरे लालन अब मन ही तु हेंअयो यहै
आशीष यही है माता की दिन पर दिन मरण प्रति ठहै
कोश या से
देखना लाल मेरे हो तुम तो पर सदा अड़े रहना
14 वष की सेवा में वीर की भांति खड़े रहना
कदाचित भी पीछे हटे लाल तो त्रय मिटा दोगे

जाओ प्रस न्नरखो उनको जो मृद मंगल के दाता ह
अब पिता तु हारेराम चं अब शिया तु हारीमाता है

कौश या-रोकर अच्छा बेटा जाओ भगवान तु हेंहर तरह से खुश रखेंगे

राम सीता परदे से बाहर बातचीत

राम से चलो भैया माता केकई से भी विदा ले ले और पिताजी
के कर ले

राम से हां भैया चलो

कौश याका श्यसमा त

कैकई का महल

दशरथ कैकई और मंत्री

राम और सीता का प्रवेश कौश यसुमित्रा आदि

कैकई राम से :- बेटा यह कीमती वस्त्र तु हारेशरीर पर शोभा नहीं देते

(भगवे वस्त्र आगे करके)

यह भगवा वस्त्र पहनकर वन की राह लीजिए

राम कैकई से :- लाइए माता जी ! आपका आदेश सर्वदा उचित है

57. 53

राम कैकई से :- गाना

राम वन में जाता री माता टेक

यह लो री माता अपने वस्त्र आभूषण -2

पहनेगा भरत मोरा भराता री माता

राम वन में जाता री माता

यह लो री माता अपने किरट और कुंडल

त्याग सभी को जाता री माता

राम वन में जाता री माता

यह लो री माता अपनी मन मोहिनी माला

तार सभी धर जाता री माता

राम वन में जाता री माता

जीते रहे तो री मैया फिर मिलेंगे

अब नाता टूटा जाता री माता

राम वन में जाता री माता

नाटक

दशरथ कैकई से :- ओ बेरहम !

अभी तक तेरा कलेजा ठंडा नहीं हुआ ,

औ जालिम !तू कौन से   के उतारे उतार रही है ?

राम दशरथ से :- पिता जी ! जरा होश कीजिए

और अपनी तबीयत पर कुछ खामोश कीजिए

इस तरह से विलंब ना कीजिए

और हमें आशीर्वाद दीजिए

राम दशरथ से :- गाना

आ   ादीजो हे पिता हम वन जाने को तैयार खड़े टेक

आ   ाज   दीसे पेश करो

दिल बीच रंज मत शेष करो

हमें ऐसा   उपदेश करो

जो रहे   पर सदा अड़े

आ   ादीजो हे पिता हम वन जाने को तैयार खड़े

हम अभी वन में जाएंगे

पितु -माता के वचन निभाएंगे

मुनिय के   पाएंगे

जो वन खंड के बीच पड़े

आ   ादीजो हे पिता हम वन जाने को तैयार खड़े

वहां फल खाएंगे बांट-बांट

पाप से चलेंगे नाट-नाट

पितु भि तके छंद छांट छांट

श्री चंद ने छंद में   जड़े

आ   ादीजो हे पिता हम वन जाने को तैयार खड़े

नाटक

दशरथ राम से :- आंख में जल भरकर

अच्छा बेटा तु हारानिगहबान है

परंतु दशरथ अब चंद पल का मेहमान है

दशरथ मंत्री से :- मंत्री जी ! तुम इनके संग जाना

जिस तरह हो सके वन दिखाकर वापस घर ले आना

मंत्री दशरथ से :- जैसी आ ाहो महाराज !

राम दशरथ से :- दोहा

नगरी मेरे पिता की सुख से बस मुधाम

58. 54

हम वन को चल दिए कर सब को प्रणाम

वन को चल दिए

राम सीता बाहर

समा त

सौमित्र प्रदर्शन

सौमित्र राम से :- भगवान आपके लिए रथ हाजिर है आप इसमें सवार हो जाइए

राम सौमित्र से :- यामंत्री यह वृथा के झमेले हमारे साथ में ना लाइए, कृपया इसे वापस ले जाइए

सौमित्र राम से :- हे युवराज ! आपका इसमें यानुकसान है

राम सौमित्र से :- फकीर के लिए यह बखेड़ा बावले जान है

सौमित्र राम से :-भगवान आप किस प्रकार के मुख से निकाल रहे ह

और वृथा मेरे कलेजे में डाल रहे ह

राम सौमित्र से :-मंत्री जी मेरे इन श दसे लेशपहुंचा हो तो मुझे माकरना

सौमित्र राम से :- राधेश्याम

हो गई कैकई की आ I,...बन में सरकार विराज चुके

बहु तेरे दयगगन में प्रभु ,..वर दान के घर गाज चुके

राधेश्याम

अब महल को चलिए ,...जनता जीवित हो जाएगी

अपने राजा को सभा ,... अब वही मुकट पहनाएगी

राम सौमित्र से :- मंत्री मंत्री बूढ़े मंत्री ,..यदि हम को चाहते ह

तो हम उस चाहत के नाते,.. तुमसे बस यही मांगते ह

राधेश्याम

जितनी ज   दीजा सकते हो,... उतनी ज   दीघर जाओ तुम

चौदह वष के लिए तात ,... इस राघव को बीशराऔ तुम

सौमित्र राम से :- राधेश्याम

वैदेही बेटी को बन मै . रोते हम देख नहीं सकते

पतो और कुशाऔ पर सोते देख नहीं सकते

सीता सौमित्र से :-राधेश्याम

मंत्री सोने की चमक कभी सोने से ,....अलग नहीं होती

चरण की रेखा चरण को धोने से,.... अलग नहीं होती

है   पुरी सी अवधपुरी,... मुझे नहीं ललचा सकती है

हंसिनी मानकर कोट जेवर,... मरुस्थल नहीं जा सकती है

सौमित्र से :- राधेश्याम

कहना माता कैकई से,... घी के चिराग जलाए वह

हम कांटे तो निकल गए ,...निसंकोच राज चलाएं वह

पेज नंबर 59   55 से

राधेश्याम

यह भी कह देना   माकरें ,..हम बैटे ह वह महतारी है

जो कृपा उ   ह   की हम पर,...... हम उसके भी आभारी है

राम सौमित्र से :-

दिल की तख्ती पर छोटे के,.... वचन को लिख मत लेना तुम

सौगंध तु   हेहै वहां पहुंचकर,.... केवल इतना कहना तुम

राधेश्याम

माता दे आशीर्वाद हमें ,....तब   उनके पाएंगे

जब 14   पूरे ह   ग़ो... तब   उनके पाएंगे

सौमित्र राम से :- अच्छा भगवन ! म जाता हूं ,वहां जाकर म किसी

तरह   दिखाता हूं

मंत्री का   श्यसमा   त

राम सीता के वार सरयू नदी पार करना

राम से :- भैया ! म लाह को पुकारो ताकि हमें सूर्य नदी से पार करा दे

:- म लाह! हो म लाह! अरे हमें सरयू नदी से पार करा दो ?

म लाह से :- भगवन म आपको किस तरह पार करवा सकता हूं

राम केवट से:- दोहा

म कहता हूं जो बात हो ,...कहो उसे जी खोल

य घबरा रहे इतने,... य करते टालमटोल

केवट राम से राधे श्याम:-

अच्छा भगवान पूछते हो तो कहता हूं संशय मेरा

भय भंजन मेरे स मुख है फिर य रहने दूं भय मेरा

जानता हूं यह जादू है राजा जी के पद पंकज में

में जान डालने की शि त है आपके चरणरज में

बन गई सिला सुंदर नारी चरण के लगते ही

जड़ में चेतनता आती है उस जीवनपूरी के लगते ही

चरण की रज का यह प्रभाव जन और शीला पर है

तो मेरी लकड़ी की नैया तो छूते ही छूमंतर है

राम केवट से:- यारे म लाह अब किस तरह नदी पार करें ? हमें नदी जरूर पार करनी है

केवट राम से:- राधेश्याम

अपना मेरा दोन का ,..जो काम बनाने वाले राजा जी

चरण की रज पर संशय है,... वह पद रज धुल वाला े राजा जी

मुझ पर कृपा बनी रहे ,.....बाधा न आपके काम में हो

60.   56

है कृपा राम की केवट पर,.... केवट का प्रेम राम में हो

राम केवट से:-   वर ! आपको इतना विश्वास है तो आप चरण धो लीजिए और हमें नदी से पार करा दीजिए

केवट की नाव में बैठकर

केवट से :- हे मांझी ! अब नाव को संभालो ,   यह तो डगमगा रही है,   आप सावधान हो कर नाव चलाएं

केवट राम से:- राधेश्याम

है राम बली जब नौका पर,... बली की कौन जरूरत है

मांझी डर मत मझधार में ,.... जाने की आज ना सूरत है

भय तो उस समय नाव को है जब उसका खेवन हार न हो

बैठा है जब खेवैया बेड़े पर तो कैसे बेड़ा पार न हो

राम सीता से :-   यारिअब आप इसकी मजदूरी दे दीजिए सीता हाथ से अंगूठ उतारती है और अंगूठ राम को देती है राम अंगूठ देते ह

केवट   आपने हमें पार किया है आप इसकी मजदूरी ले लीजिए

केवट राम से :- राधेश्याम

मेरा घर सुरसुरी तट लगता है,... तुम रहते जग जल निधि तट हो

म गंगा का मांझी हूं,... तुम भाव सागर के केवट हो

मजदूर कहीं मजदूर को मजदूरी देते ह भैया

म   लाहकहीं म   लाह से म   लाहीलेते ह भैया

अपने को ऋणी समझते हो तो ,....ऋण तुम वही चुका देना

म   नेतुमको पार किया ,....तुम मुझ को पार लगा देना

राम केवट से:-   यारे   ! तथास्तु ऐसा ही होगा

केवट का   श्यसमा   त

राजा गहूं से भेंट

गहूं राम से :- मेरे भाग जो आपने अपने पवित्र चरण से इस भूमि को पवित्र किया दास के घर चल जलपान कीजिए

राम गहूं से :- आपकी इन बात से मजबूर हूं और बस्ती में पांव रखने से मजबूर हूं

गहूं राम से :- हे भगवान मुझे खुद है आपने यह कैसा भेष बनाया है

राम गहूं से :- पिताजी ने 14 वष तक इसी भेष में फरमाया है

गहूं राम से :- आ खरकोई कसूर तो होगा

57. 61

राम गहूं से :- कसूर हो या ना हो पिता जी की आ ाहर तरह से मंजूर है

गहूं राम से :- भगवान आप ह जो इस अवस्था में भी प्रस न्है बहुत अच्छा म जाता हूं इसी स्थान आपके लिए भोजन पहुंचाता हूं

राम गहूं से :- यारमित्र अगर यह भोजन ही हम को भाते

तो घर से चलकर काहे को आते

यही से कुछ कंद मूल खा लेंगे

और पेट की आग बुझा लेंगे

राम गहूं से :- आपको आए हुए बहुत देर हो गई अब आप आराम कीजिए और हमारा प्रणाम लीजिए

गहूं अपने साथिय से :- यारसाथिय तुम इसी जगह पर तैनात रहो और रामचं जी की सेवा में सारी रात रहो

साथी गहूं से:- जैसी आ ाहो महाराज !

१यसमा त

दशरथ का अंतिम समय

दशरथ, कौस ्या,कैकई, सुमित्रा, वशि ठ

दशरथ कौश ्यासे :-

हे ्यारी मेरा अंतिम समय निकट आ रहा है

निस्संदेह अब काल मेरे सिर पर सवार हो रहा है

इसलिए म हाथ जोड़ता हूं कि मेरा अपराध माफ कर दो

और परलोक का मार्ग साफ कर दो

कोश ्यादशरथ से :- हे प्राणनाथ आप कैसे मुख से निकाल रहे ह

और य मुझे पाप के ग ढ्में डाल रहे ह

आप का दर्जा मेरे लिए परमेश्वर के समान है

म जो कुछ भी सुख भोगा वह आपका ही तो प्रताप है

जो कुछ हुआ है सो हुआ है अब आप तबीयत को संभालिए

और मुझे पाप के ग ढ्में मत डालिए

जिस माता पिता ने दिया है उनके नाम को हरगिज बट्टा नहीं लगाऊंगी

और जब तक दम में दम है तो अपने कुल की लाज बचाऊंगी

दशरथ विधाता से :-हे नाथ ! माना कि आपकी कृपा का पात्र नहीं हूं

किंतु मौत का दरवाजा मेरे लिए य बंद कर रखा है

सौमित्र का आना दशरथ के पास

दशरथ मंत्री से :- हे सौमित्र ! कहो मेरी हंसो की जोड़ी को साथ लाए

सौमित्र चुपचाप खड़ा है

दशरथ मंत्री से :- भाई जो भी आता है ,मेरी जान का शत्रु पाता है, ्यारे सौमित्र कुछ तो मुंह से बोलो

सौमित्र दशरथ से :- रोकर महाराज ! म खूब जोर लगाया ....बहुत समझाया ...मगर उनके धैर्य म कोई नहीं आया और मुझे ही कहने लगे कि तुम तो हमें उ ट्मार्ग पर चलाना चाहते हो

और उ ह कहा:- “ 14 पूरे किए बनअयो यमें कदम रखना

तो यअयो यकी सूरत देखना भी हराम है ’’

महाराज उ ह आने से इंकार कर दिया है और आप को तथा

माताओं को प्रणाम किया है और किसी को कोई तकलीफ ना होने पाए

इसलिए भरत को बुलाकर राजतिलक देने का आग्रह किया है

वशि ठ दशरथ से:-

महाराज ! रोने धोने से काम नहीं चलेगा अब तो रामचं के लिए रोना

धोना दुश्वार है

अब रा यका काम करने के तो आप ही हकदार है

दशरथ वशि ठ से :- गुरु जी ! आपका भरोसा मुझे कुछ लाभ नहीं

पहुंचा सकता

हे गुरुजी ! किसी पर याअफसोस है

केवल अपने ही भा यका दोष है

मुझे जो श्रवण के पिता ने जो श्राप दिया था अब वह समय आ गया है

भाई यारोम यारिकौश याबेटा बेटी जनक नंदनी

मुझे माकरना !

अच्छा म चलता हूं

हिचकी लेकर हाय राम म चला !

कौश या:- ज दीसंभलकर अरे कोई ज दीआओ महाराज के तेवर

ही बदल गए

वशि ठ नाड़ी देखकर

वशि ठ- अफसोस ! तेवर याबदल गए ! महाराज ही दुनिया से चले

गए

सुमित्रा वशि ठ से :- या ब कुल्नाड़ी छूट गई

वशि ठ सुमित्रा से :-दशरथ के सिर पर हाथ रखकर हां महारानी जी

!अब ब कुआप छूट गई है

सुमित्रा कौश यासे:- दहाड़ मारकर हाय रे हमारी किस्मत फूट गई

कौश यासुमित्रा का गाना दोन का विलाप

हाय हमारे प्राण यारेचल बसे

रंजो गम के दुख के मारे चल बसे

किस तरह होगी जिंदगी बसर

जो थे के सहारे चल बसे

मिल गया हमारा सुहाग अब खाक में

आज किस्मत के सहारे चल बसे

आरजू उनकी न पूरी हो सकी

मर कर हाय किनारे चल बसे

वशि ठ- देविय सबर करो

और जितनी ज दीहो सके भरत को खबर करो

श्यसमा त

Page end 63   ramayan 58

केकईपूर में भरत शत्रु   न

शत्रु   न भरत से :-   ाताजी आज तो आपकी तबीयत कुछ सुस्त है

भरत शत्रु   न से :- हां शत्रु   न आपका ख्याल   ब   कुछ दुरुस्त है

शत्रु   न भरत से :-   या कारण है जरा म भी सुनता हूं मुझ से छुपाकर   य रखते हो ?

भरत शत्रु   न से :- कारण हो तो बताऊं ?

शत्रु   न भरत से :-हे भइया ! अफसोस है कि तुम मेरी बात पर इतना ही यकीन रखते हो

पद में से युद्ध जीत का आना

युद्ध जीत:-   या भरत ! अयो   या से एक दूत आया है

भरत युद्धजीत से :- मामा जी !   या कुशलता की भी खबर लाया है

युद्ध जीत भरत से :- वैसे तो ठ   क ठाक बताता है मगर कहता है आपको ज   दी बुलाया है

दूत भरत से :- प्रणाम महाराज !

भरत दूत से :- "अरे ! कुशल तो है "ऐसी ज   दी का संदेशा लाया है

दूत भरत से :- हां महाराज ! वैसे तो ठ   क है किंतु आप को ज   दी बुलाया है

भरत दूत से :- भाई रामचं   व ल   मण जी तो खुश है ?

दूत भरत से :- वैसे तो सब ठ   क है ! परंतु आपको ज   दी बुलाया है

भरत दूत से :-   ोध में अरे तू आदमी है या गधा ? जो पूछता हूं उसका टेढ़ा ही   मिलता है

दूत भरत से :- महाराज ! कह तो रहा हूं आपको शी   बुलाया है

भरत दूत से :- ओह! बड़े मूर्ख से पाला पड़ा है

शत्रु   न भरत से :- भैया ! इस झगड़े को जाने दो और शी   ही अयो   या प्रस्थान की तैयारी करो

भरत शत्रु   न से :- हां भैया ! चलो इस मुर्ख को तो बात करने का ढंग भी नहीं है

अयो   या का   श्य

भरत शत्रु   न से :-तनिक देखो तो अयो   या की ऐसी स्थिति   य है सब रास्ते और चौराहे सुनसान पड़े ह राजमहल पर जिले मंडला रही है ना मालूम आज किस का मातम हो गया जो सूर्यवंशी
अयो   या नगरी का रा   बक्रम हो गया है

64. 60

शत्रु   न भरत से :- बेसक भैया   तो खराब नजर आ रहे ह आप ज   दी महल में चलिए

कैकई का महल

मंथरा कैकई भरत शत्रु   नमद में

मंथरा कैकई से :- महारानी जी सुना है भरत जी आ गए

कैकई मंथरा से अरी मंत्रा ज   दीकर उनको मेरे पास बुला लाओ

मंथरा कैकई से :- इशारा करके यह लो वह सामने ही आ रहे ह

भरत शत्रु   नकैकई के पांव में गिरकर प्रणाम माता जी !

कैकई भरत से :- चिरंजीव रहो ! मेरे लाल बेटा तुमने बहुत दिन लगाए

कहो ! तो तु   हारेनाना मामा सब कुशल मंगल तो है

कैकई भरत से :- हां माता श्री जी ! सब प्रकार से कुशल ह परंतु मुझको अभी

तक पिता जी के   नहीं हुए ह वह कहां पर है

कैकई भरत से :-   पुत्र धैर्य करो पहले तुम यात्रा की थकान उतारो और

विश्राम करो धीरे-धीरे सब हाल बता दूंगी

भरत कैकई से :- मेरी थकान तो पिता जी के   होते ही दूर हो जाएगी

कैकई भरत से :- पुत्र पहले थोड़ा खा पी लो , फिर धीरे धीरे सब हाल बता

दूंगी

भरत कैकई से :- माताजी जो ! म पूछता हूं उसका घड़ा घड़ाया

मिलता है , यह धीरे-धीरे किस बला का नाम है

कैकई भरत से :- वाह बेटा ! तुम तो बड़े ज   दबाजहो गए हो म कह तो रही

हूं कि सब धीरे-धीरे बता दूंगी

भरत कैकई से :-   ोधसे   याखाक बता देंगी ?

आग लगे तु   हारीधीरे-धीरे को

माता जी ! आप शी   बताओ पिताजी कहां पर है

कैकई भरत से :- बेटा अफसोस है कि तु   हारेपिताजी   सिधार गए

भरत कैकई से :- रो कर   याकहा ? पिता जी   सिधार गए, शोक ! कि

म उनके अंतिम समय में भी   नहीं कर सका भाई   में रामचं   ही

भा   यवान्है जिनके हाथ में पिताजी ने प्राण त्याग दिए अच्छा माता यह तो

बताओ उनको रोग   याथा ?

कैकई भरत से :- बेटा ! रोग तो कुछ भी नहीं था बस हाय राम ! हाय
! करते हुए उ ह प्रोण त्याग दिए
भरत कैकई से :- माता जी याभाई रामचं में भी उपस्थित नहीं थे
?

66. 61.

कैकई भरत से :- हां बेटा वह तो पहले ही वन चले गए थे उ हींके कारण तो महाराज ने प्राण त्याग दिए
भरत कैकई से :- सिर पीट कर हाय हाय चार बेट के होते हुए भी अंतिम समय में एक भी पास नहीं था माताजी भाई रामचं ने कौन सा अपराध किया था जो वह वन को चले गए जरा पूरा हाल तो सुनाओ
कैकई भरत से :- बेटा सच बात तो यह है कि महाराज ने रामचं को राज तिलक देने की तैयारी की भला हो इस बेचारी मंथरा का इसने मुझे सब हाल बता दिया है बेटा म किसी समय महाराज से दो वचन पूरे करने का वचन मांगा था अर्थात मौका पाकर म वोन वचन पूरे कर लिए अर्थात रामचं जी को 14 का वनवास और तेरे लिए राजतिलक मांगा

अर्थात हे बेटा इन वचन को टालने के लिए महाराज ने बहुत हाथ पांव मारे परंतु म भी अपनी जि पर अड़ी रही महाराज को तंग आकर रामचं को वन में भेजना पड़ा
सीता तथा भी उनके साथ चले गए तो है बेटा म अेपना वचन पूरा कर लिया अब तू जाने तेरा काम

मंथरा भरत से :- हां महारानी जी सच कहती है, अब जाकर खुशी से राज संभालो और अपने दिल के अरमान निकालो

शत्रु नमंथरा से:- वह नमक हराम बदजात थे तु हारीही आग लगाई हुई है, ठहर म तेरी अभी खबर लेता हूं

भरत शत्रु नसे:-शत्रु नका हाथ पकड़कर
भाई ! जो कुछ होना था सो तो हो गया अब अपनी तबीयत को टिकाओ,

और स्त्री पर हाथ उठाकर कुल को दाग ना लगाओ

भरत मंथरा से :- औ चुड़ैल ! तू यहां से दूर हो जा इसी हमारी आंख के सामने से ओझल हो जाओ

भरत का गाना

हाय फूटी है किस्मत हमारी रे टेक

छोड़कर हमको किसके सहारे
पिताजी किधर को सीधारे
कि अकेले किधर की तैयारी रे
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

मुंह दिखाने के लायक न
हाय सहायक रहा न
बात विधाता ने कैसी बगाड़ी
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

फसी ऐसी जान मुश्किल में
रह गया यह भी अरमान दिल में
कर सके ना खदमत्तु हारी रे
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

हाय हमें भी उठा ले
औ पिता का सपने बुला ले
जिंदगी से हमें मौत यारी
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

राम मेरी ना ब कुसलाह ली
है तूने भी तो वन राह ली

आज गई किस्मत की हारी रे
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

कैकई भरत से :- आंसू पहुंचकर बस मेरे लाल अब अधिक नारो

भरत कैकई से :-भरत कैकई का हाथ फटकार कर बस मेरे सामने से दूर हो जाओ

कैकई भरत से :- बेटा नेकी का बदला आया तो इस तरह भागेगा
भरत कैकई से :- बदला तो उस समय मिलेगा , जब भरत तेरे सामने प्राण त्यागेगा
कैकई भरत से :- बेटा ! अब मेरी तरफ देख, म   तेरे लिए खून पसीना एक किया है

भरत कैकई से :- गीत
रे मा तूने जुलम करे बड़े भारी टेक

तू बन गई नागिन काली

मेरे पिता के तने पापड़ी जब मांगे वरदान

पढ़े नहीं तेरे मुख में कीड़े

तो कब की बैरण मारी

राम   से   ाताहमारे दशरथ जैसे बाप
कुल के अंदर ओके पापणी कर तू ने नाश
तु   हारीनहीं कलिहारी
तू बनेगी
रे मा तूने जुलम करे बड़े भारी

भरत कैकई से :- दांत पीसकर औ ! डायन .... म तुझे एक बार कह चुका हूं ,
तु मुझे बेटा कहकर कलंक का टीका ना लगा
तू बार-बार कह कर मेरी छाती को मत जला

पहले तूने पिताजी के प्राण लिए
मूरत राम   को वनवास दिलाया
ओ पापी ! नछत्र तूने सत्यवती भावज सीता को घर से निकाल दिया

माता सुमित्रा तथा कौश   या के दिल को छलनी-छलनी किया
औ ! कलिहारी दुनिया का मुंह कौन पकड़ सकता है
वह तो मुझे ही धि   कार करेंगे और चार तरफ से मुझे ही मारेंगे

शत्रु   न धाय मारं कर हाय पिता जी ! आपके मरते ही सारा जमाना दुश्मन हो गया है
भाई रामचं   भी यहां पर नहीं है हमारी धीर कौन बधांऐगा

भरत शत्रु   न से :-   या भैया तुम   य रोते हो, तु   हारे लिए तो म रामचं हाजिर हूं रामचं   तो मेरे लिए नहीं है उठो भैया उस दु   खया माता कौश   या तथा सुमित्रा की खबर ले
शत्रु   न भरत से :- हां भैया ! चलो अब यहां रहना ही बेकार है

कौश   याका महल

कौश   यालेटी हुई सुमित्रा बैठ हुई

भरत शत्रु   नकौश   यके पाव लगकर प्रणाम ! माता जी

कौश   याभरत से :- अरे यह कौन है ?

सुमित्रा कौश   यासे :-   यारीबहन उठो और पहचानो तो सही कि कौन है ?

कौश   यासुमित्रा से :- हाय कैसे उठु उठा भी तो ना जाए

सुमित्रा कौश   यासे बहन जरा आंखें खोलो

कौश   यासुमित्रा से :-बहन आंखें होती तो रोना ही   यथा अब आंखें

किसकी लाऊं

दोहा

देखने के थे जो साधन वह तो सहारे चल दिए

खाली गोलक रह गई आंख के तारे चल दिए

शत्रु   नभरत से :- हे भाई तू बता दे कौन ?

भरत कौश   यासे :- रोकर माता जी आपका महानीच अधम बेटा भरत

कौश   याभरत से :- है बेटा भरत चिरंजीव रहो ! कब आए और तो सब ठ   क

ठाक ह

हे बेटा चुप   य हो ? कुछ तो मुंह से बोलो   यमुझसे नाराज हो ?

भरत का रोते रहना

कौश   याभरत से :- गाना बहरे तबील

अब करो चैन से राज बेटा भरत रे

रामचं   जगंलन में पहुंचा ही दिए

तेरे मन की मुरादें तो पूरी हुई

तेरी माता ने यह गुल   खलही दिए

तेरे दिल में कोई खटका ना रहा

रामचं   का कांटा ना अटका रहा

अब   य खामोश होकर ठसक रहा

मेरे सीने पर खंजर चला ही दिए

यदि मेरी सूरत सुहाती नहीं
तो मुझे भी जिंदगी खुद भाती नहीं
यह्करूं मौत भी तो आती नहीं
म अपने यतन सब बना ही लिए

रामचं ने वापिस अब आना नहीं
और ने हिस्सा बटाना नहीं
एक म ही हूं मेरा सो ठिकाना नहीं
कैकई ने तो फंदे फैला ही दिए

ना किसी को मदद के हो मोहताज तुम
बन गए अवध के महाराज तुम
जाओ बेटा खुशी से करो राज तुम
भेद यशवंत सिंह ने बता ही दिए

नाटक

कौश या भरत से :- बेटा ! अब तो तेरे मन की मुरादे पूरी हो गई
और अयो या का कुल राज तेरे नाम हो गया
और रामचं का कांटा भी तेरे दिल से निकल गया है

हां बेटा अब यदि मेरी भी सूरत सुहाती नहीं
तो मुझे भीे जिंदगी खुद भाति नहीं
मगर यह बेशर्म जान भी निकलने में आती नहीं

अगर कुछ खाकर मरती हूं तो आतम हत्या का पाप लगेगा
अगर जिंदा रहती हूं तो तेरी जान को संताप होता है

भरत कौश या से :-गाना बहरेतबील

तेरे चरण की सौगंध है माता मुझे
इस शरारत का ब कुछ पता ही नहीं

यूं ही इ जाम दो तो तु हारी खुशी

वरना इसमें मेरी कुछ खता ही नही
तेरे चरण की सौगंध है माता मुझे
इस शरारत का ब कुम्ता ही नहीं

राम को भेज वन में करूं राज में
मेरे दिल का तो यह मधवा ही नही..2 ं
माता कैसे दिलाऊं मै तुमको यकीन
बना के कोई गवाह ही नहीं
तेरे चरण की सौगंध है माता मुझे
इस शरारत का ब कुम्ता ही नहीं

राम मौजूद होते अगर इस जगह
म समझता पिताजी मरे ही नही..2ं
एक तेरा सहारा था केवल मुझे
हाय तुमको भी आती दया ही नहीं
तेरे चरण की सौगंध है माता मुझे
इस शरारत का ब कुम्ता ही नहीं

य न घायल करो बोलियां मारकर
काट लो शीश मुझको गिला ही नहीं
माता शीश है मेरा और खंजर तेरा
लेना इसमें किसी की सलाह ही नहीं
तेरे चरण की सौगंध है माता मुझे
इस शरारत का ब कुम्ता ही नहीं

नाटक

भरत कौश यासे :- रोकर माताजी !ना जाने भरत से ऐसा खोटा करम हो
गया, जिसके कारण आप भी मुझ पर संदेह करने लगी हे
माता जी इस बात के लिए म जिंदा जल मरने के लिए तैयार हूं
यआप को यह विश्वास है कि म रामचं को वनवास दिलवाऊ
और खुद अयो यामें है ऐश उड़ाऊं
हे ! मुझे मौत की खैर दो
और तो सब शत्रु हो गए मगर आप तो मेरा साथ दो
हाय पिताजी ! मुझे भी अपने पास बुला लो !

भरत का बेहोश हो जाना

कौश यभरत से :- हे हे ! मेरे लाल तुझे यहुआ

बेटा ! म ने ही तेरा दयदुखाया है

और मेरी मूर्खता ने हीं तेरी जान को दुख पहुंचाया है

बेटा ! वास्तव में म बोड़ा पाप किया है

जो निद फो संताप दिया है

बेटा उठो ! म तो पहले ही मेरे भा यको रो रही थी

बेटा जीभा तो हिलाओ

केवल एक बार माता कहकर बुलाओ

देखो ! तेरी माता कितनी देर से तेरे सिरहाने बैठ रो रही है अब तो उठ कर हाथ मुंह साफ करो

71. 66

भरत कौश यासे :- आंखें खोलकर माता जी ! बस माकीजिए मुझे ! अब ना जिंदगी की चाहत है ना मौत की परवाह है

कौश यभरत से :- बेटा ! अब इस रज गम को दूर करो

और जो म कहती हूं उसे मंजूर करो

तुम देखते हो अयो यका सिंहासन ब कुखाली है

इसका कोई वारिस है ना वाली है

बेटा अब रोना धोना बंद करो

और कुछ राज का प्रबंध करो

अगर दूसरे दुश्मन सुन पाएंगे

ही मुंह में पानी भर लाएंगे

भरत कौश यासे :- माता जी ! आप याफरमा रही ह

और मुझे य पाप के ग ढेमें गिरा रही है

म किसी भी अवस्था में आपकी आ ामंजूर नहीं कर सकता

राजा वह कहला सकता है जिसकी प्रजा पर मिशाल हो

माता जी ! म देख रहा हूं सारी प्रजा की निगाहें मुझसे नफरत करती ह

इसलिए भाई की गैर हाजरी में राजग ीपर पांव रखने का मुझे कोई अधिकार नहीं है

म ईसी समय जंगल में जाऊंगा

अगर मेरे कहने से वापस आ गए तो बेहतर है

नहीं तो चौदह वष तक   नहीं दिखाऊंगा

माता केकई को भी हाथ -हाथ बदला मिल जाएगा

जब उसकी आंख के सामने उसका बेटा जंगल को निकल जाएगा

वशि   ठभरत से :- भरत जी ! आपके विचार पसंद है

और पवित्र ह

हमसे बढ़कर कौन भाई है

मगर उनका आना कठिन है और आपका वृथा ही जतन है

अगर वह मानते तो हम ही मना लेते

इसीलिए उन विचार को दिल से निकालिए

और चौदह वष तक आप ही इस राज को संभाल लिए

भरत वशि   ठसे :-गुरु जी !अगर रामचं   जी के निस्बत के प्रति आपका ऐसा विश्वास है

तो चौदह वष के लिए भरत को भी बनवास है

चाहे कितना ही गया गुजरा इंसान हु, मगर उसी पिता की संतान हूं

अगर रामचं   ने अपना   पालन करने में इस तरह सच्ची नि   ठदिखाई है

Page 72 ramayan 67

तो भरत भी उ   हीका भाई है

जान पर खेल जाना मेरे लिए आसान काम है

मगर राज   राज सिंहासन की ग   ीपर बैठ जाना मुझे हराम है

कौश   याभरत से :- अच्छा बेटा अगर तु   हारायदि मेरा यही ICCCHAA इरादा है तो हम भी साथ जाएंगे और नहीं तो हम भी एक BAAAR दफा उनका मुखड़ा ही देख आएंगी

भरत कौश   यासे :- ठ   कहै माता जी ! आप सारे साथ चलें

श्रृंगवेरपुर राजा गंहू से भेंट

मंत्री गंहू से :- महाराज ! आपके मित्र श्री रामचं   का छोटा भाई भरत VISHAAL सेना लिए चित्रकूट की ओर जा रहा है

गंहू मंत्री से :-   याकुछ पता है किस लिए जा रहा है

मंत्री गंहू से :- महाराज ! SAADHAAARN JAN ME तो यही BHRAANTI है कि रामचं   जी को वापस लाने की सलाह है

गंहू मंत्री से :- तो सारी अयो   या   य लाया है

मंत्री गंहू से :- NISANDEH ! यह बात ठ   कहै , कहीं मुंह में राम बगल में छुरी वाला हिसाब ना हो

गंहू मंत्री से :- कोई बात नहीं आ   खकेकई का बेटा है बात प्रसिद्ध है “मां पर पूत, पिता पर घोड़ा ...बहुत नहीं, थोड़ा-थोड़ा ” संभव है, पीछे से BUDDDHI आ गई हो या फिर किसी ने बात सुझाई हो कि रामचं   इधर उधर से सेना इक   फ़रके चढ़ाई न कर दे

मंत्री गंहू से :- संभवत: ! यही बात हो महाराज !

गंहू मंत्री से :- खैर अभी कुछ भय नही , म अभी जाता हूं और इस CHAKKARVYUH का पता लगाता हु तुम अपनी सेना की तैयारी करो और मेरे SANKET की PARTIKSHAA करो

यहां पर DOOT KO थाल में मछली और फूल तलवार लेकर जाना है ,और भरत के सामने करता है भरत का फुल उठाना AUR गंहू को VISHWAAS हो जाना KI BHARAT MITTTAR HAI STROO NAHI

गंहू भरत से :- भगवन ! कहिए किधर की चढ़ाई है और किस   की मौत आई किसकी बुरी घड़ी आ रही और बड़े मुहिम पर जा रही है.

PAGE   73   RAMAYAN 68

भरत गंहू से :- हे   यार्रमित्र ! न तो किसी से लड़ाई है, और न बहार के दुश्मन से लड़ाई है

यह तो काल का है

हे मित्र ! SWYAM मेरी माता ने पाप का बीज बो दिया

भगवान रामचं को वापिस लाने जा रहा हूं

सब माताऐ व गुरु वशि ठनी भी मेरे साथ आए ह

गंहू भरत से :- अच्छा भैया ! हम भी साथ चलेंगे

भरत मिलाप

चित्रकूट का श्य

राम से :- हे भैया ! आज जंगल के सारे जानवर इस तरह से य भागे जा रहे ह ? और इस तरह यों भय खा रहे ह ?

राम से :- शीला पर चढ़कर ताजी ! सावधान हो जाइए !

सूर्यवंशी पताका हवा में लहरा रहा है

और भरत विशाल सेना लिए आ रहा है

राम से :- यदि भैया ! भरत है, तो तु हें किस बात का डर है ?

राम से :- ताजी ! इधर वह ऊपर चढ़ा आ रहा है उधर आप का यह हाल है

राम से :- हे भैया ! भरत से मुझे ऐसी आशा कदापि नही है

राम से :- तो इतनी सेना या खाक छानने के लिए लाया है

राम से :-खैर जाने दो कोई बात नहीं उ हें आने दो

राम से :- हे भैया ! कृपा करो इस भोलेपन को जाने दो

राम से :-भैया पहले भरत को आने दो मृत्यु से पहले बावले जान होना ठ क नहीं

राम से :-बस-बस ताजी बहुत प्रती ा कर ली और अपने मन पर बहुत भरोसा कर लिया

अंततः कब तक ऐसे ही खुने जीगर का पीते रहे

अब आप ही निर्णय ले कर बताएं अगर धैर्य इसी का नाम है तो त्र के लिए डूब मरने का काम है

राम से :- के अस्त्र शस्त्र छ ड़कर

लो देख लो वह तो निहत्था अकेला ही भगा रहा है

भरत का पांव में आकर गिरना राम का उठाकर छाती से लगाना और भरत का विलाप

राम भरत से :- .. या भरत चित त्तो परसंन है

तुम् इस तरह य रो रहे हो

कुछ कारण भी बताओ , कुछ अपना हाल भी सुनाओ

मेरे याभाई मेरी दाई भुजा बताओ तो यह रजं कैसे पहुंचा है

भरत तु हेंमेरी कसम अधिक हैरान ना बनाओ

भरत राम से :- गाना बहर तभील

ऐ ाताभरत से खता याहुई

मेरी नसीहत तुंहें याभरम हो गया

मुझे चरण से अपने जुदा य किया

कौनसा मुझ से खोटा हो गया

ऐ ाताभरत से खता याहुई................

इस शरारत का मुझको पता ही नहीं

आप बैठे कहीं भरत बैठा कहीं

कर लिया आपने किस तरह से यकीन

हाए ऐसा भरत बेशर्म हो गया

ऐ ाताभरत से खता याहुई................

हाय सारी अवध को बयाबानकर

आ गए आप जंगल में याठान कर

एक उस नीचनी का कहा मान कर

आपको घर में रहना कसम हो गया

ऐ ाताभरत से खता याहुई................

मारा भावी ने में दे के मुझे

याकिसी पर गिला याबेचारा करू

तुम अयो याको मेरे हवाले करो

म तुमसे पहले किनारा करू

ऐ ाताभरत से खता याहुई................

राम भरत से :- भैया भरत म तुंहें निश्चय दिलाता हूं कि मुझको तु हारी तरफ से कोई शिकायत नहीं

इसमें ना माता केकई का कसूर है,,

यह तो को इसी तरह मंजूर है

राम भरत से :- यह तो भाई शत्रु नभी भागे आ रहे है

भरत राम से:- हां ाताजी ! शत्रु न या! बि कमाता कौश याजी व सुमित्रा जी और गुरु वशि ठजी व मित्र गुह भी तशरीफ ला रहे ह और मेरे की शत्रु भी साथ आ रही है

शत्रु नराम से:- शत्रु नराम के..पैर में गिर कर प्रणाम भैया !

राम भरत से :-राम शत्रु नको गले लगाकर भरत मुझे खेद है ! तु हंसारे कुल को लेशदेना मंजूर था

भरत राम से :- हां भैया ! किसी का यादोष है को इसी तरह मंजूर है

केकई कौश यासुमित्रा गुरु वशि ठजी मंत्री इनका होना और सीन चालू रखना

BHARAT KAA KHDAAU LEKAR JAANA

राम केकई के पांव पकड़कर :- प्रणाम माता जी ! आपने इस सफर की फजुल ही तकलीफ

75. 70

उठाई

कैकई चुप है.. माता जी आप बोलती नहीं कहिए तबीयत तो ठ कहै

कैकई राम से:- आराम से हां बेटा अच्छ है

राम कौश यासे:- प्रणाम माता जी !

कौश याराम को गले लगाकर चिरंजीव रहो ! मेरे लाल ! बेटा तुम हो ! कि तु हाराचांद सा मुखड़ा दुबारा देखने को मिला ,.... मगर शौक है कि वह तो अंत समय तु हारामुंह भी नहीं देख सके

राम कौश यासे:-हाय माताजी जी यह याकहा पिताजी परलोक सिधार गए

परंतु कब ?

कौश याराम से बैटा उधर तुम वन को पधारे हो उधर वह को सीधारे

राम कौश यासे:-हाय !

ओह फलक आज र तारतू घर से निकाल कर हम को सताता रहा

ओह शोक की पिताजी का साया भी सिर से जाता रहा

सीता :- रो कर हाय पिताजी !आप सदा के लिए मुंह मोड़ गए

और हमें किस के सहारे छोड़ गए

:- रो कर हाय शोक ! परिस्थितियां य हमारे पीछे पड़ी है

जो हमें सत्यानाश करने पर अड़ी है

एक दुख हो तो भी संतोष कर ले दुख का भी तो ठिकाना नहीं

कौश या से :- बेटा ! जो बात होनी है उस पर वृथा शौक करना है

बेटा जो बना है . वह एक दिन टूटेगा , जो घड़ा है वह फूटेगा बेटा जो पैदा हुआ

है उसे आ खसरना है और यह यात्रा तो सबको करनी है

भारत का राम से :- गाना

वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है टेक

बस्ती हुई अवध को सूनी बना गया है

बाबुल की प्राण हत्या मेरे ही सिर चढ़ी है

मुख्य कारण यह है दिसौटा तुमको दिया गया है

वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है

वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है..........

मां मेरी के कई ने मुझको दुख दिया है

टीका मेरे कलंक का चढ़ा दिया है

वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है..........

कृपानिधान भगवन मुझ दीन की है

तुम बद्धे अयो यद्दु खयम्म लेने आया हूं

76. 71

चलो साथ मेरे न तुम बनहा गया है

वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है..........

नाटक

भरत राम से :- ाताजी ! जो कुछ प्रार्थना करनी थी

वह कर चुका हूं, आप अधिक मुझे य मारते हो

म तो पहले ही मर चुका हूं

अब आशा है कि आप मेरे अपराध को माकरेंगे

और अयो यका सिंहासन अपने चरण से सजाएंगे

राम भरत से :- प्यारे भरत ! तुम्हारा प्रेम जो कुछ मेरे साथ है उसे म स्वयं जानता हूं और इस अभिप्राय को भी भली भांति पहचानता हूं परंतु प्यारे क्या करूं शास्त्र की आज्ञा और पिता की बेड़ियों से बंधा हुआ हूं

इसलिए 14 वर्ष के लिए तुम्हारी आंखों से दूर हूं

भरत राम से :- बहुत अच्छा ! भैया यदि आपका यही है

तो भरत के लिए भी सबसे शुभ है

कि आपके चरणो में निवास करूं और

14 स्वयं भी बनवास करूं

राम भरत से :- प्यारे भरत की कृपा से हमारा कुलवंश आज तक निद रहा है

भारी से भारी कार्य भी आए तो अपना प्रण नहीं छोड़ा

भैया ! महाराज रघु ,..जो अयोध्या के बीच में महाराजा होते हुए भी जंगल में कुटिया बनाकर रहते थे और एक गरीब आदिवासी श्री जी द्वारा दी गई चरण पादुकाओं को अपने शीश पर धारण करके अयोध्या में लेकर आए ,और उनको अयोध्या के सिंहासन पर रखकर सुशोभित किया और उन आदीवासी की उन्हीं चरणपादुका को प्रणाम कर उन्होंने अयोध्या का संपन्न खुशहाल राज्यपाठ चलाया

रघुवंशी महाराजा दिलीप गौ माता की रक्षा करने के लिए शेर के सामने अपने आप को खाने के लिए रख दिया

महाराज दधीचि ने अपने शरीर की हड्डियों को तपस्या करके वज्र से भी अधिक मजबूत बना कर दुष्टों का संहार करने के लिए इंद्र देवता को दान में दी

महाराजा हरिश्चंद्र को कौन नहीं जानता जिन्होंने अपना सब राज वह ठाठ बाट सब छोड़कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए अपने बच्चे तक की कुर्बानी दे दी और शमशान भूमि में अपना जीवन बसर किया एक वचन के लिए महाराजा हरिश्चंद्र ने क्या कुछ नहीं किया

एक बाज से कबूतर की रक्षा करने के लिए रघुवंशी महाराजा शिवि ने अपने शरीर को काटकर कबूतर के मांस के बराबर तोल दिया और बाज को अपने शरीर का दान दिया

हम उस सूर्यवंशी रघुकूल की संताने ह जि ह ने के लिए सदैव अपने प्राण को निछावर कर दिया परंतु अपने प्रण और से कभी नहीं डगे

भैया ठ क्तो वह है कि अब तुम अयो यावापस लोट जाओ
इस छोटे से कार्य के लिए रघुवंशी कुल को ल ि जत न करो
भरत राम से :- अच्छा भैया ! जो माताजी कहेंगे वह तो आपको माननीय होगा
राम भरत से :- हां ाताजी , हम कब मना करते ह, माता जी की आ ा हमारे लिए सदैव शिरोधार्य है
कौश याराम व भरत से :- मेरे पुत्र यदि मुझ पर इस कार्य को छोड़ते हो तो दोन यानलगाकर सुनो
14 वष के लिए भरत अयो यामें निवास करें
और रामचं 14 वष के लिए बनवास करें
के युद्ध में कौश याकभी झूठ नहीं बोलेगी
और ही अपनी जान नहीं तोलेगी
भरत कौश यासे :- हाय म याकरूं ! भरत को हर प्रकार से विवश किया जाता है
और ना चाहते हुए भी अपने चरण से दूर किया जाता है
अच्छा भैया आप इतनी कृपा कीजिए
कि आपकी दोन खड़ाऊँ मुझे दे दीजिए
इनको भी अपने साथ ले जाऊंगा
और इ हींसे अयो याका सिंहासन सजाऊंगा
भैया परंतु इस बात का यानरहे
कि 14 से एक भी दिन अधिक लगाएंगे
तो भरत को कदाचित जीवित न पाएंगे

77. 72

राम भरत से :- खड़ाऊ देकर हे याभोरत म तु हाराकहना स्वीकार करता हूं
और इस बात का विश्वास दिलाता हूं
कि 14 यतीतहोते ही म तु हारेपास आऊंगा और उससे अधिक एक भी दिन नहीं लगाऊंगा

राम सीता पद में

भरत मिलाप समा त

भारत का जंगल में चले जाना

श्यसमा त

पंचवटी

राम से:- भैया पंचवटी पर तो प्रकृति ने अपनी यो यताओंका अचरज कर रखा है

राम से :- निसंदेह हि भैया ! गोदावरी के सुंदर और निर्मल जल ने इसको अति सुंदर वह मनमोहक बना रखा है

शूर्पणखा का आना

शूर्पणखा राम से :- अजी ! आप कौन ह यदि कुछ आपत्ति ना हो तो आप का आवास बता दीजिए ?

राम शूर्पणखा से :- देवी !हम अयो यापतिमहाराज दशरथ के जाए ह और 14 के लिए पिताजी के आदेश से वन मणकरने आए ह
यह मेरे छोटे भाई ह और यह सीता जी मेरी धर्मपत्नी है जो हमारे साथ आई ह
और मेरा नाम राम है
कहिए आपको हमसे याकाम है
यदि आप अनुचित ना समझें तो आप अपना निवास का संपर्क बता दीजिए
और आपका शुभ नाम भी बता दीजिए

शूर्पणखा राम से :- जरा मटक कर म लंकापति रावण की हमसीर हूं
और खूबसूरती में मशहूर हूं
भाई खर और दूषण भी इसी जगह रहते ह
और नाम के लिहाज से मुझे सूर्पनखा कहते ह
य यपिबहुत से राजकुमार कि मुझ पर तबीयत आई
मगर म तो किसी को भी खातिर में ना लाई

राम शूर्पणखा से :- हे देवी ! फिर यहां य तकलीफ उठाई

शूर्पणखा राम से :- इसलिए ! कि तुम ने शूर्पणखा के दिल में जगह पाई

राम शूर्पणखा से :- हे देवी ! यह कहानी मेरी कुछ समझ में कुछ ना आई

शूर्पणखा राम से :- गाना

जोगी हम तो लुट गए तेरे यारमें.........

शूर्पणखा राम से :- देखने में तो अकलमंद दिखते हो, पर हो पूरे सौदाई
अजी आप मेरे लोग म आप की लुगाई

अब तो समझे मेरे बाप के जमाई

राम शूर्पणखा से :- हे देवी ! जब तुम अच्छे अच्छे राजकुमार की खातिर में ना लाइ

तो हम फ़क़ीर से

Page 78. 73

शादी करने की धून समाई

शूर्पणखा राम से :- तबीयत है जहां आई,

फिर कौन बादशाहा कौन सोदाई

राम शूर्पणखा से :- हे देवी ! मुझे अफसोस है कि म तु हारीअभिलाषा पूरी नहीं कर सकता

य मेरी पत्नी मेरे साथ है

हां ,...अगर जी मंजूर करें तो हमें बड़ी खुशी की बात है

वह इस अकेला है और वैसे भी बड़ा जवान अलबेला है आप उसके पास जाइए

शूर्पणखा से :- गीत गाकर

छोड़ आई सारा संसार तेरे लिए

नाटक

शूर्पणखा से :- अजी !इनसे तो दि लगीकरती थी

वास्तव में तो आपकी मोह बतका दम भत थी

वह काला कलूटा अबनुस का सौटा

आदमी न आदमिय की सूरत

अरे ल मणजीजब तक जीऊंगी

तु हारेचरण धोकर पिऊंगी

शूर्पणखा से :- हंसकर देवी मेरी खुशनसीबी का यठिकाना है जब तक तुम जैसी चं मुखीमर्दिनी की तबीयत मुझ पर हूं माहिर हो गई और एक ही धनवान से घायल हो गई

रंग है कि कुंदन की तरह चमक रहा है

और चेहरा बुट किया पोलीस की तरह चमक रहा है

शूर्पणखा से :-जरा लचक कर तो किस बात का हिज ब है

शूर्पणखा से :-हे देवी म रामचं जी का एक छोटा सा सेवक हूं

इसलिए मेरे साथ शादी करने में तु हारीसारी उ मिट्टी खराब है

शूर्पणखा राम से :- गाना

दिल में तुझे बैठा कर

नाटक

शूर्पणखा राम से :- राम के पास पहुंचकर अजी आप मुझे य हैरान कर रहे ह

और खामखां परेशान कर रहे ह

वह छोकरा तो ब कुल ादान है

भला उसे इन बात की याप हचान है

उस पर तो म थूकती भी नहीं

उसकी देखते हो दिल कोस दूर भागता है

ऐसा बदसूरत इंसान तो म ने भी नहीं देखा

राम शूर्पणखा से :-हे देवी ! मुझ पर तो मेहरबानी करो

और जरा अपने फैसले पर दोबारा नजर सानी करो

यदि तू सती है तो वह भी जति है

शूर्पणखा राम से :- अजी ! काहे का जति है वह जितना बदल सकल है उस से बढ़कर मंदमति है

आप तो मुझे यूं ही हरा देते ह

शूर्पणखा राम से :- राम की की तरफ हाथ बढ़ाकर

79. 74

शूर्पणखा के कोमल हाथ तो इसी पर जेब् देते ह

राम शूर्पणखा से :-जरा पीछे हट कर

यह हाथापाई किसी और के साथ करो

जरा मुंह से बात करो

शूर्पणखा राम से :- मेरे हाथ में कांटे तो नहीं जो आपकी में चुभ जायेंगे

राम शूर्पणखा से :-हे सुंदरी ! म एक बार कह चुका कि मेरी शादी हो चुकी है

इतना ही नहीं ब क मेरी अधा गिनी मेरे साथ ह तुम के पास जाओ

शूर्पणखा राम से :- शादी हुई तो या बात है राजे महाराजे शादी होने के इलावा भी दूसर से मोह बत करते ह

राम शूर्पणखा से :- यह के विरुद्ध है वह महा पाप करते है हे देवी यहां पर तु हारी दाल नहीं गलेगी

आ खर निराश होकर ही टलेगी

तु हारीजोड़ी तो के साथ मिलती है

शूर्पणखा से :-अजी महाराज ! आपने किस जंगल के पास भेज दिया

जिसको न बोलने का तरीका है

ना बात करने का सलीका है

वह तो आला दज का बदतमीज जैसे कई वष का मरीज हो

की तरफ अंगड़ाई ले कर

हे मेरे भरतार म आपको छोड़कर कहां जा सकती हूं

अब तो हम और तुम और गुम

शूर्पणखा से :- गाना क वाली

हाल दिल का न पूछो

नाटक

शूर्पणखा से :- हे देवी जो दूसरे का गुलाम हो

वह तुम जैसी सुंदरी से कैसे हम कलाम हो

शूर्पणखा से :- हे महाराज तु हेंमेरा कुल भी मालूम है

शूर्पणखा से :-हां म जानता हूं तुम रावण की आवारा बहन हो

शूर्पणखा से :- ोधमें बस जी बस !

भ कको सिखाई तो काटने को आई

जरा सा जबान को लगाम दो

शूर्पणखा से :- जाती है या बताऊं मौत का भाव

80. 75

शूर्पणखा से :- यामें तुम तो बड़े बेवफा हो

शूर्पणखा से :-वह काम करो जिससे लोक परलोक में नफा हो

शूर्पणखा सीता से :-शूर्पणखा सीता की ओर गुस्से में यरी बेहया ! तुम को नहीं आती

जो वहशिय की तरह जंगल में फिर रही है

जो मेरे काम में रुकावट डाल रही है

सीता शूर्पणखा से :- अरी म तेरा या बगाड़ है ,जो खामखा मेरे गले पड़ रही है

राम से :- भैया इसकी एक एक रग से शरारत की बु आ रही है

हमारा पीछा छुड़ा तो अब सीता की ओर लपक रही है

जब तक यह अपनी करनी बद कारी की सजा नहीं पाएगी

सीधी तरह यहां से नहीं जाएगी

शूर्पणखा से :- अजी सुंदरी ! इसके साथ य झगड़ रही है

जोड़ी तो हमारी तु हारी मिलती है आओ म तु हें यासा का सबक सीखाऊं

शूर्पणखा से :-महाराज जी आपने तो मेरा दिल रख लिया

नहीं तो यह दिल वैसे ही पिंगला जा रहा था

शूर्पणखा से :-हे देवी अब आप अपने कान और नाक मेरी तरफ करो

य कि म आपके लिए अच्छे-अच्छे गहने बनवाऊंगा नाक और कान का

का पैमाना तो ले लू तलवार निकाल कर ताकि रावण को भी पता लग जावे

और नाक कानो

के गहने देख सके नाक और कान काट देना

शूर्पणखा से :- अजी यह या कर रहे है आप

शूर्पणखा से :- गहने देख रहा हूं कितने बड़े आएंगे

शूर्पणखा से :-हाय हाय कैसा जु म किया अ याय ी तूने भी नहीं आई

शूर्पणखा से :-यह तो थोड़ी मिली है सजा

यादा बोली लूंगा जबां तरास

तेरा हो जाए सत्यानाश

शूर्पणखा से :-अरे देखो तो सौदाई करूं

तीन की मंजाई करुं यही ठहरे रहना अब मेरे भाई को बुला कर लाती हूं

और तीन को मजा चखाती हूं

Page 81.76

शूर्पणखा से :- जाती है या बताऊं मौत का भाव

सूर्पनखा श्य समा त

भंगड.खाना खर दूषण वह रा स

राम सीता पद के अंदर

दूषण खर से :- अरे भाई खर !

खर-दूषण से :- यस माय डयसर

दूषण खर से : यालआगे करके

मेरे भाई खर !

पहले यालमेरा भर

पहला रा स दूषण से :- अरे लुगाई के गुलाम तू एक तरफ होकर मर

दूसरा रा सखर से :- अरे खर जब तक शराब ना आए तो एक दौर नसवार का ही लगा ले

दूषण दूसरे रा ससे:- वाह मेरे लाल ! भुल कड़भला नसवार और शराब का भी कोई होता है मेल

दूसरा रा सदूषण से:- अरे तू इन बात को याजाने

दो चार छ केआकर ऐसा नशा खलेगजैसे अफीम पर तेल

पद के अंदर से आवाज

सूर्पनखा

सूर्पनखा:- हाय हाय ! भाई दुहाई है दुहाई ! मेरे नाक कान काट लिए

4 रा स:- अरे यह बेढंगी सी आवाज कहां से आई

तीसरा रा स:- कौन है भाई जो बेव तआफत मचाई

आछ आछ आछ

आज तो मेरी नाक ही गुलगुला बन गई

खर रा स से:- अरे नालायक यह कैसा तूफान है

आछ आछ आछ

शूर्पणखा रा स से:- शूर्पणखा करीब आकर अरे बेशम ! तुमने तो दया और सब भेज खाई

पांचवा रा सशूर्पणखा से :- अरे यह तो सूर्पनखा है

कहो बुआ ! आज तो बड़ी खून से लतपत होकर आई हो

यह नया शिकार कहां से मार लाई

शूर्पणखा 5वें रा ससे:- हाय हाय ! नीग्रो तु हेंमखोल सूझता है मेरी नाक काट दी गई

दूसरा रा सशूर्पणखा से:-कौन मूर्ख कहता है यह तो नसवार से छ ंकेआ रही थी

आछ ! आछ अब तो वह भी हट गई आछ ! आछ !

शूर्पणखा दूसरे रा ससे :-ले देख ! आंखें खोलकर सत्यानाशी

तीसरा रा सशूर्पणखा से:- यह मेडल कहां से ले आई मेरी मौसी

अब नजला जुकाम से भी मिली खलासी

82. 77

तीसरा रा सशूर्पणखा से :- अच्छा हुआ ! यह मि खय का अ डछठ गया म मि खय को बैठने के लिए कोई जगह पाएगी और न हीं कोई तु हें सताएगी

सूर्पनखा रा स से :- औ तु हारामुंह काला ! मखोल करने के लिए यही निकाला

दूसरा रा ससूर्पनखा से :-अजी नहीं हमारी खाला , तुमसे मखौल करें कौन साला

मगर यह तो बताओ , यह मुंह है या खस्सी परनाला

खर :- सबको डांटकर खामोश! खामोश! अगर यादशोर मचाओगे सजा पाओगे

चुप रहो !

खर शूर्पणखा से:- बताओ बहना यह यहालत बना रखी है

शूर्पणखा खर से :- रो कर भैया यह कुछ बताने भी दे !

खर शूर्पणखा से:- गाना लावणी मे

नाक कटा नकटी हो आई, चेहरा लहू लुहान हुआ

बता तो बहना शूर्पणखा ऐसा याघमासान हुआ

किस जालिम ने की है हरकत , किसके सिर पर मौत चढ़ी

जीने से बेजार कौन है , किसकी आई बुरी घड़ी

सांप के मुंह में उंगली देवें , किसकी इतनी जरूरत बढ़ी

आदम के रास्ते कौन चला है, किसकी आई बुरी घड़ी

कौन है जिसको अपने, बाहुबल का इतना अभिमान हुआ

बता तो बहना शूर्पणखा ऐसा याघमासान हुआ

शूर्पणखा खर से :- गाना लावणी

बैठे-बैठे दिल उ ताया, यूं ही सैर को जाती थी

करती फिरती मटरगश्ती , म अपना दिल बहलाती थी टेक

चलते फिरते यूं ही अचानक , पंचवटी पर जा अटकी

नज़र पड़े दो वनवासी , झट देख उ   हेंम ठ   ठकी

हुई म जिस दम उनके सामने, आपस में कुछ गिट मिट की

बुरी नजर से लगे देखने , आपस में कुछ गिट मिट की

वह चाहते थे फुसलाना, म खातिर में नहीं लाती थी

करती फिरती मटरगश्ती , म अपना दिल बहलाती थी

खर शूर्पणखा से :-

वह वनवासी सत्यानाशी कौन है , और किसके जाए ह

मेरे इलाके में वह अहमक,   बन्इजाजत   य आए ह

मेरे हु   म   बन्पंचवटी में, किसने वह ठहराए ह

करें यहां आकर खुरींजी , खौफ न कुछ दिल पर लाए ह

निश्चय ही उनके वास्ते , मौत का सब सामान हुआ

बता तो बहना शूर्पणखा ऐसा   याघमासान हुआ

शूर्पणखा खर से :-

वह वनवासी अवधपुरी के राजकुमार कहलाते ह

नाम एक का राम, दूसरा   बतलाते ह

उनकी जो मंजूर नजर , सीता कह उ   हेंबुलाते ह

हुस्न जवानी देख, चांद और सूरज भी शरमाते ह

नाक उड़ा दिया जब मेरा , जब म अपने आप बचाती थी

करती फिरती मटरगश्ती , म अपना दिल बहलाती थी

खर शूर्पणखा से :-

अभी चखाऊं मजा उ   हें राजकुमार कहलाने का

मेरे इलाके में आ कर, मुझ पर हाथ उठाने का

पता चलेगा अभी उ   हें इस तेरे खून ब   ानेका

जब तक ना लो बदला उनसे , भोजन तक ना खाने का

देख तेरी हालत यह , मेरे पार जिगर के बाण हुआ

बता तो बहना शूर्पणखा ऐसा   याघमासान हुआ

नाटक

खर शूर्पणखा से :- हां हां ! मालूम हो गया

वह बनवासी सत्यानाशी दही के धोखे में कपास खा गए

और खुद ही मौत के मुंह में आ गए

बहन आप आराम करो म अभी जाता हूं
और उन तीन का सिर काट कर लाता हूं
शूर्पणखा खर से :- नहीं नहीं ! म भी खुद साथ चलूंगी और उनका खून पीकर
गले की   यास्बुझ आऊंगी
पांचवा रा   सशूर्पणखा से:- अगर ऐसी बहादुर थी तो नाक कटवा कर   य
आई
उस   य न दिलेरी दिखाई
अब बनती है तीसमार खां की ताई

दूसरा पांचवें रा   ससे डांट कर चुप रह
अरे सौदाई   य   यादाबक बक लगाई

रा   स के साथ जंगल में जाना

पर्दा खोलना

राम   सीता का   श्यचालू

राम   से :-   ातावह देखो सामने गरदो गुबार छा रही है
मालूम होता है वह बदकार अपने हीमातिय को साथ ला रही है
तुम सीता जी को यहां से ले जाओ
राम से :- भैया म तुमको छोड़कर नहीं जा सकता

राम   से :- तुम सब बात की जिद ना किया करो
कभी बात भी मान लिया करो

राम से :-अच्छा भैया दिल तो नहीं चाहता तु   हेंअकेला छोड़ जाऊं
मगर तु   हारीआ   ाका उ   लंघन्नहीं कर सकता

सीता का पद में चले जाना ..सीन चालू

दंगल में आवाज

खर रा   स से :- मेरे वीर बहादुरो 1 इस बनवासी को ऐसीे मोत मारो की
ईसे छठ का दूध याद आ जाए

1st rakksah राम से:- य बे उ लू यहां य आया

राम 1st से:- चुपका चुपका चला जा नहीं तो तु हारा मेरे पास इलाज है

2nd राम से :- हर एक को शूर्पणखा ना समझना

3rd राम से :- हा अगर जान यारी है तो सीता को हमारे सरदार के पांव में गिरा दे

राम रा स से :- हरामजादे ! मरने के लिए तैयार हो जा

बारी-बारी सबका मरना

खर राम से :- खबरदार हो जा ! तेरी मौत का पैगाम आया है

राम खर से :- वो मगरूर अब तेरी कसर रही तो सब काम आया है

खर राम से :- हो बेगैरत तूने मेरी बहन पर हाथ य डाला

राम खर से :- यह तो पहले ही जली बुनी फिरती थी बड़ी मुश्किल से यहां से टाला ऐसी बहन का करो मुह काला

सूर्पनखा खर से :- भाई खर देना इसका जवाब ! हरामी यादा ही सिर पर चढ़ा जा रहा है

खर राम से :- ...दोन की लड़ाई ...तो मरने के लिए तैयार होजा ... तिर छोड़ कर .....इस दुनिया से फरार हो जा

खर :-खर का मर जाना.... मर गया मेरी मैया

दूषण खर से:-घबराओ मत भैया मेरे म इसे मजा चखाता

राम दूषण से:- इस को तस ली बाद में देना पहले अपनी जान बचा

दूषण राम से:- य डर है जरा मुकाबले पर आ

राम का तीर मारना चल दफा हो बदकार

दूषण राम से:- अरे जालिम यह   याआग सी लगा दी

दूषण का मर जाना ....सुरपंनखा का दौड़ जाना

राम से :-राम में पैर में गिर कर   ाताजी ! तुम   हो तीर चलाने में भी कमाल कर दिया

सीता राम से:- चरण में मेरे प्राण नाथ   त्रये   की जिंदा तस्वीर

यारे   के वीर

आप थक गए ह   ब्मेरा आराम कीजिए .....

पर्दा बंद

रावण का दरबार

रावण सभा से :-गानेवाली को बुला कर गाना सुन कर... हा हा हा हा !!!!!
मुंझा प्रतापी बलवान दिलेर ,बहादुर शेर जिसकी भुजा बल का सारा संसार
सि कमानता है
और जिसके नाम को हर एक छोटा बड़ा जानता है
म वह रावण हु जिसने अच्छे-अच्छे अभिमानी के सिर को एक में
कुचल डाला
और मै वह रावण हूं जिसकी धाक ने जमीन आसमान को हिला दिया
जिसने बड़े-बड़े `त्रीयको में खाक में मिला दिया....
हंसकर हा हा हा हा हा ...कहां लंका कि शहंशाही
कहां इन मामूली रियासत की बादशाही

पहरेदार :- बात काटकर महाराज गजब हुआ खर दूषण सेना सहीत रामचं
के हाथ मारे गए

रावण पहरेदार से :- हे हे !! यह याखर और दूषण से सुरवीर ! सेना सहित
एक तरफ, और रामचं एक तरफ

ोधसे अकल से बात कर
ओ kambkt झूठ ब कुब्लकवास
अरे तेरा सत्यानाश कभी ऐसा हो सकता है

शूर्पणखा दरबार में :- हाय महाराज ! म तो लुट गई हाय म मर गई
रावण शूर्पणखा से :- बात याहै कुछ तो मुंह से बोलो

शूर्पणखा रावण से :- राधेश्याम दोहा

पड़ने जावे इस राज पर और ताज पर खाक

तेरे होते कट गई आज बहन की नाक

रावण शूर्पणखा से :- ाधमें अरे तेरी दुर्गति किसने बनाई

वह कौन था मौत का

86.

खरीददार

और तु हारीयह नाक किसने काटी

शूर्पणखा रावण से :- राधेश्याम भाई दो लड़के राम

उस दंडक वन में आए ह

हमराह एक सीता नामी सुकुमारी नारी लाए ह

म उधर अचानक निकल गई उस नारी से मिलना चाहा

इतने में छोटे तपस्वी ने मुझसे कुछ छल करना चाहा

जब म तेरा नाम लिया तो उसने मुझ को दी गाली

फिर मेरे कान कतर डालें मेरी यह नाक काट डाली

मेरी नाक गई सो गई अब अपनी नाक संभालो तुम

जग में अच्छ नाक नहीं तो नकटा नाम करा लो तुम

आगया नाक में दम मेरा ना करे तेरी दुहाई है

बहन की नहीं हंसी है यह भाई कि लोक हसाई है

रावण शूर्पणखा से :- राधेश्याम गम नाक कान हो तुम उनकी भी मैनाक

नहीं अब रखूंगा

भेजा नथुन की राह करूं मिच का नाश को नहीं दूंगा

बहन की नाक उड़ाने में होती है नाक नहीं ऊंची

अबला पर हाथ उठाने में होती है धाक नहीं ऊंची

यह धरा धाम पाताल लोक मेरे पिना के ने जीते ह

मेरे भय शेर और बकरी एक घाट पानी पीते ह

यह समाचार यह दुराचार यखर दूषण से नहीं कहा
उसका तो वही अखाड़ा था उस कुलभूषण से नहीं कहा

शूर्पणखा रावण से :- राधेश्याम वे सेना ले कर गए वहां अत्यंत घोर संग्राम हुआ

लेकिन बड़े तपस्वी ने उन सब का काम तमाम किया

पृ वीमर नदी लहू की थी लाश पर लाशें पड़ती थी
म देख रही थी खड़ी-खड़ी उन सब की कटती थी

रावण अपने मन में :- राधेश्याम

जब एक अकेली ताकत ने इन सब वीर को मारा है

तो फिर निश्चय यह सिद्ध हुआ नारायण में अवतार लिया
87. 82

निश्चित ही वह अवतारी है तो वह भाव ही रखूंगा

दूसरे का बंधन भी उनके वारही तोड़ूंगा

यह मौत नहीं मो यह लड़ना है नहीं मिलन है यह

वह भी हो शर भी उनका हो तो भाव सागर तरना है यह

रावण शूर्पणखा से :- राधेश्याम

वह काटे नाक कान फिर जिंदा रहे जमाने में

तो टूटे 20 भुजा मेरी लानत है शस्त्र उठाने में

तुम बैठो थोड़ी देर यहां म दंडक वन में जाता हूं

इस नाक काटने का बदला दोन से अभी चुकाता हूं

रावण शूर्पणखा से :- यशवंत सिंह बहन शूर्पणखा तुम जाओ महल में आराम करो

रावण दरबारिय से :- आज इसी दरबार को बर्खास्त कर रहा हूं जाओ तुम आराम करो और दूसरी आ ाका इंतजाम करो

अकेला रावण अपने मन में

सीता मेरी जान बेईमान की म लकहै निसंदेह तू सीता है कितना यारा नाम है

सीता ओ जालिम सीता तु य यफ्स्वियंबर में तो नहीं जीती अब जीती जाएगी और अपने शरबत ए दीदार के जाम अपने इन नाजुक हाथ से रावण को पिलाएगी और तेरी मनोहर सुंदरता लंका के महल में जगमगाएगी

ओ जालिम तूने यहां आकर मेरा पीछा नहीं छोड़ा और बैठे- बठाप्दिल को पूरी तरह मरोड़ा

मगर याद रख अब अयो यालौट कर वापस नहीं जाएगी

ताकत से बल से छल से तुझे चुरा कर ले आऊंगा

रावण :-दुखी होकर हां हां किस तरह जाऊं सीधी तरह रामचं के पास जाकर लड़ना लोहे के चने चबाना है अब अकेले से यह काम करना मुश्किल है किसका साथ लूं

खुश होकर हां हां याद आया मामा मारीच, मामा मारीच, मेरे बहादुर मारीच,

उछल कर अभी जाता हूं और उसे अपना हमराज   मनाता हूं

रावण का आगे चलना

पर्दा गिरना

मारीच का झोपड़ा

रावण मारीच से :- मारीच ! ओ मामा मारीच !

मेरे बहादुर मारीच !

88. 83

मारीच रावण से :- आइए महाराज मेरे सिर के ताज किस तरह गरीब की झ पड़ीं आगमन हुआ

रावण मारीच से :- अंगेज में महाराज इस म तेरी मदद को मोहताज हूं

मारीच रावण से :- महाराज मेरी जान और जिसम आपके चरणो पर कुर्बान है कहिए मुझसे याकाम है

रावण मारीच से :- शाबाश ! मेरे बहादुर , तू बड़ा दिलेर है आ खशेर का शेर है चल मेरे साथ म तुझे कार्य बताओ तेरी माता तथा पिता भाई का बदला दिलाऊं

मारीच रावण से :-महाराज याकाम है आपकी बात बड़ी पेचदार है

रावण मारीच से :- मारीच मामा तू तो ब कुसवार है तेरी मां का तथा भाई का कातिल रामचं तथा लाल पंचवटी में आए हुए ह तथा उस सुंदर देवी सीता को भी साथ में लाए ह अगर तुम थोड़ा सा साहस करो तो तुझे बदलाव मिल सकता है मेरा काम निकलता है किसी तरह सीता को उठा लाएंगे और वह भ दूजंगल में भटक भटक कर मर जाएंगे

मारीच रावण से :- महाराज आपने कोई उपाय तो सोचा होगा

रावण मारीच से :-राधेश्याम

तू चल कर माया मृग बन जा म बाबा जी बन जाऊंगा

तू राम को बहकाना म सीता को हर लाऊंगा

मारीच रावण से :- राधेश्याम

जो उनसे बैर बढ़ाते ह वह आ   खसारे जाते ह वह मौत मौत के घाट वही बेव   तउतारे जाते ह

करना है तो निज दोष हरि सीता का हरना ठ   कनहीं

करो तो शुभ कार्य करो चोरी करना ठ   कनहीं

अच्छे कम के करने से गृह में प्रकाश हो जाता है
पर नारी घर में लाने से घर में विनाश हो जाता है

पेज 89.   84

रावण मारीच से :-

यदि नहीं साथ देगा मेरा तो सारा   ानभुला दूंगा
सीता को से पहले तुझे यमलोक पहुंचा दूंगा

मारीच रावण से :-यशवंत सिंह
क   में पावं रखने के लिए तैयार बैठा हूं
 बुढ़ापा आ गया सरकार हि   मत्हार बैठा हूं

महाराज म तो आपका ताबेदार हु हर तरह से आपकी सेवा करने के लिए तैयार हूं मगर इस बेरी बुढापे में कुछ नहीं बनता सब चोचंलें जवानी साथ ले गई म पहले ही उनके हाथ को आजमा चुका हूं और उनके सामने जाने की कसम खा चुका हूं
रावण मारीच से :- कड़क कर अच्छा देख मै तेरी कसम तोड़ता हूं और एक तलवार से तेरा भेजा निचौड़ता हूं

मारीच रावण से :- महाराज मुझे माफ कर दीजिए म आपके आगे हाथ जोड़ता हूं

,kyaa yhaa oi li\ne missig ai

मारीच रावण से :- महाराज माना कि आप रावण है पर वह तो ईकावन है

रावण मारीच से :- औ बेहूदा म कारउपदेशक के बच्चे ठहर म तुझे नसीहत सिखाता हूं और तुझे इनकार करने का मजा सिखाता हूं अरे वो ग तेरा चार दिन में सारा बल हो गया और रामचं का नाम सुनते ही तेरा पखाना निकल गया

मारीच रावण से :-ये बबुलाए की आफत ना झगड़ा ना तकरार आ बैल मुझे मार फंसा बड़ा बेढब फसां उधर राम जी के तीर इधर इसकी तलवार अजब तमाशा है बाजी शूर्पणखा करें बनाई मौत बेचारा मारीच मरे खीर खावे बामणी फांसी चढ़े शेख नहीं देखा हो तो यहां आ कर के देख

रावण मारीच से :- अरे ज दीजवाब दे सोचता यहै

मारीच रावण से :- जरा ठहर जाइए जरा सोच कर जवाब देंगे आ खसरना है

रावण मारीच से :- म इससे यादइंतजार नहीं कर सकता

मारीच रावण से :- वाह अजीब जबरदस्ती है दस मिनट तो फांसी वाले को भी दी जाती है

रावण मारीच से :-मरना है तो सीधी तरह मर पागल की तरह यमरता है

मारीच रावण से :-मरती तो सारी दुनिया है मगर उ टमरना तो आपसे सुना है

रावण मारीच से:- कड़क कर अरे ! ओ मरदूत तेरा किस तरह ख्याल है

मारीच रावण से :- हुकम से इनकार करने की किसकी मजाल है

रावण मारीच से :- शाबाश ! मेरे बहादुर शाबास ! अगर तू मेरे साथ है तो सीता को उड़ा लाना मामूली सी बात है हा हा हा हा हा हा हा

मारीच :- मन में या बेईमानी तेरा ही आसरा ..... अंदर चले जाना

सीता हरण

.......सीता हरण ....राम सीता ...मायावी मृग

सीता राम से :-   गाना लावणी

ch

1   अब बाकी रह गया लोट अयो   याजाने में

13 साल   हो गए आंख पलक झपकाने में

हम   अयो   याजाएंगे और खुशी के मंगल गायेंगे

फिर भरतजी मिलने आएंगे खूब होगी धुम जमाने 1   अब बाकी रह गया... ....

chEck this song wether lyrics are correct or not

माता के   पाऊंगी चरण में शीश निभाऊंगी सभी बातें उ   हेंसुनाऊंगी जो देखी यहां तक आने में 1   अब बाकी रह गया लौटा अयो   याजाने में

जब निकट अयो   याजाएंगे लोग हमको लेने आएंगे

नगरी खूब सजाएंगे खूब होगा जशन टोहाने 1 बरस अब बाकी रह गया

सीता राम से :- हे प्राणनाथ ! अब तेरह   हो गए और बात ही बात में कम हो गए अगले साल तो हम अयो   यापधारेंगे

राम सीता से :-   की दया से यह दिन भी कट जायेंगे मगर जिस काम के लिए अवतार लिया है वह कार्य तो अभी अधूरा है

राम   से :- भैया   तुम बन में जाकर कुछ कंदमूल ले आओ हमें भूख लग रही है

राम से :- जैसी आ   ाहो !   ाताजी !

का चले जाना

सीता राम से :- प्राण नाथ वह कौन सा काम है

राम सीता से :- प्राण प्रिय हमने अवतार इस भूमि का भार घटाने के लिए लिया है जो ऋषि महात्माओं पर अत्याचार हो रहे ह उ हेंमिटाने के लिए लिया है अब आप इस पाताल लोक चली जाओ और यहां पर आप थोड़ी सी शि तछोड़ जाओ फिर देख म अपनी नरलिला रचता हूं और निशाचर का इस भुमी पर से अंश मिटाता हूं

सीता राम से :- जैसी आ ाहो स्वामी ......साड़ी बदल कर आना अंदर से

राम से :- भैया यह लीजिए कंदमूल और फूल फल

मृग का आना

सीताराम से :- एक कदम स्टार इशारा करके

दोहा रघुकुल भूषण दुख हरण दीनबंधु भगवान

दासी की विनती सुनो स्वामी दया निधान

सीता :- मृग ऐसा तो देखा न सुना जैसा यह सुंदर सुघड़ सिलौना है

सिर से लेकर पांव तलक सोना ही सोना है

हे नाथ खाल लाऔ इसकी तो कुटिया का सिंगार होगा सोने के मृग की छाला याअ ्तयादगार होगी

राम सीता से है प्रिय म जाता हूं ... से ....भैया तुम सावधान रहना अच्छ तरह खबरदार रहना

राम का मृग के पीछे जाना

पद में से आवाज

आवाज :- भाई ! आओ मेरे प्राण बचाओ

सीता से :- सुनते हो !यह कैसी आवाज आई

सीता से:- हां जानता हूं किसी ने मेरा नाम लेकर आवाज लगाई है

सीता से :- किसी की यातु हारेभाई की आवाज है

सीता से:- माताजी तुमको पता नहीं इस आवाज के अंदर यायो पेचीदा राज है

सीता से :- देवर देवर जाकर देखो रघुराई तु हैंटेरते ह भाई के थके हुए बाजू भाई की बाट हेैरते ह

भगवान न जाने अपने सुख कितने क टके मुख्य में है इसमें संदेह नहीं तु हारेभाई इस समय दुख में ह

सीता से:- किस का साहस है है माता जो उ हेंदुख पहुंचाएगा सूरज जिस जगह प्रकाशित है वहां कब अंधेरा छाऐगा

अच्छा माना दुख आया तो दुखी नहीं कर पाएगा विधाता के कर शुख का स्वरूप बन जाएगा

मेरा इस समय यह मै रहु आप की र ामें मेरा है मेरा बड़े भाई आ ापर

यह वन विशाल यागसयाल भय चार और घनेरा है म तुंहें अकेला छोड़ूं म यह नहीं मेरा है

सीता का गाना बहरे तबील

तू अभी जाकर भाई की इमदाद कर

मौत मुझको यहां कोई खाती नहीं

पासवानी कि मुझको जरूरत नहीं

म यहां से कहीं भाग जाती नहीं

भाई ही भाई का दुश्मन हुआ

यारुकरूं पार मेरी बसाती नहीं

93. 88

है बनी के मददगार सो सैकड़

बगड़ीका दुनिया में साथी नहीं

तेरा होगा न पूरा इरादा कभी

तक मुझे मेरी पाती नहीं

नहीं मालूम तू ने समझा है या

बेहया तेरी आंखें लजाती नहीं

अभी कर दूंगी अपना यही खात्मा

जिंदगी श्रीराम के बश्भाती नहीं

तू चला जा जहां दिल करे

तेरी सूरत अब मुझे भाती नहीं

राधेश्याम !अब म ञोन लिया मतलब का भाईचारा है

तुम घर को वन जो आए हो इसमें कुछ स्वार्थ तु हाराहै

सीता से:- हे तुम बहाने बना रहे हो म तु हारेमतलब को अच्छ तरह से जानती हूं तुम धोखा देकर भाई को मरवाना चाहते हो याद रखो जीना है तो श्रीराम के साथ वरना जिंदगी पर खेल जाना मामूली सी बात है

सीता से:- माता माता तुम यह याकह रही हो

सीता से:- म जो कुछ कह रही हूं ब कुसाच कह रही हूं जहां तु हारीतबीयत करें चले जाओ और मुझे मुंह न दिखाओ शौक सभी मतलब के साथी ह

सीता से:- गाना

मेरी माता तु हें याहो गया

किस किस्म की बातें सुनाती मुझे

आज दिल तु हारेको याहो गया

बेगुनाह तोहमत लगाती मुझे

94 89

सब चकरा और वसुंधरा मिट गया खाक में

आप बदमाश कह कर बुलाती मुझे

आज अपने ही कान से यासुन रहा

मौत भी तो नहीं आती मुझे

साथ आया था शायद इसी वास्ते

ऐसी बातें कहकर बुलरुलातीातो मुझे

खूब की परवरिश खूब बदला दिया
खूब देदे केलोरी सुलाती मुझे

अच्छा माता तु हारा यादोष है
मेरी किस्मत ही ध केदिलाती मुझे
बेशर्म बेशर्म बे हरम बेहया
बेवफा बे कुनबा तक कहलाती मुझे

नाटक

सीता से:- माता जी आप किस किस्म की बातें कह रही है यमेरी वफादारी का यही सिला है हां माता किसी का यादोष है उ हींके साथ लाकर यही गुल खलानेथे और मेरे जु मेलगाने थे हां माता किसी पर या अफसोस है यह तो मेरे ही कम का फल है मुसीबत के दिन आए तो माता तुमने भी डंक चलाएं

पद में से राम की आवाज

आवाज :- भाई ज दीआओ मेरे प्राण बचाओ
सीता अपने दिल में :-हां एक औरत आपकी यासहायता कर सकती है यह आपकी दासी हर तरह मजबूर है हां इतनी बात जरूर है अगर तुम जीते आए तो म तु हेंजीती पाऊंगी अ यथातुमसे पहले की राह लूंगी

सीता से:- हे माता तु हाराकसूर नहीं जब आप अपनी जुबान से ऐसे कह रही हो तो कोई नया बखेड़ा तैयार है अच्छा म चला गया तो यहां आपका निगहबान कौन है
सीता से राधेश्याम

मेरी तुम कुछ चिंता ना करो है मेरे
तुम जाओ वहीं चले जाओ जिस जगह गए प्रभुवर मेरे
95 90

माता तुम मुझे समझते हो तो आ ामानो माता की

म आ ातुमको देती हूं जाओ सुधि लेने ाता की
सीता से:- राधेश्याम रोकर

हे पवन देव तुम सा ीहो हे प ीगण गवाह तुम ही हो
मेरी इस ना ओके अब हे सूर्यदेव म लाहतुम ही हो

आ ापालन करता हूं म बस इतना है संतोष मुझे
रघु राई अगर उलाहना दे तुम कह देना निद षमुझे

रेखा खींच कर

म अब जाता हूं मां तुम सावधान होकर रहना
आ ाके भीतर दास रहा तुम रेखा के भीतर रहना

इस रेखा का उ लंघनकर जो भी पर्णकुटी में आएगा
है आन उसे कि वह वही हो जाएगा

अब अपनी सीता माता को तरुवरो छोड़ता हूं तुम पर
अपनी रखवाली में रखना वन चरो छोड़ता हूं तुम पर

प सुम ही अब हो तुम पर ही अपना घर स पाहै
हे पंचवटी हे पूर्ण कटी सीता मां को तुम पर स पाहै

का चले जाना

अनोखा साध

रावण का गाना

औलाद वाल फूलो फलो
भूखे गरीब की यही तो दुआ है
जो एक पैसा देगा वह उसे 1000000 देगा

औलाद वाल फूलो फलो
सीता साधु से:- हे योगीराज आप कौन ह और कहां से पधारे ह
साधु सीता से:- हे देवी इसका जवाब म   यादूं आपके सवाल ही दुनिया से
यारे ह
सीता साधु से:- हे महात्मा आ   खइआपका नाम व रहने का मुकाम
साधु सीता से:- फ़कीर का   यानाम जहां रात पड़ गई वहीं विश्राम
सीता साधु से:- हे ऋषि फिर यहां पर किस तरह   दिए
साधु सीता से:- गाना   वाखड़ा एक जोगी

नाटक

साधु सीता से:- अहोभा   य जो kandmool हाजिर है ग्रहण कीजिए महाराज
साधु सीता से:-देवी ! भि   ातो बाद में लूंगा पहले अपना पता बता दीजिए

96. 91

सीता साधु से:- हे महात्मन सीता मेरा नाम है और मिथिला पुरी पैदाइशी
मुकाम है श्री रामचं   जी की अधा   गिनीऔर महाराजा जनक की
राजकुमारी हूं पिता की आ   ासे मेरे स्वामी 14   के लिए बनो में आए ह
और मेरी सौतेली सास के जाए   भी हमारे साथ आए ह 13 साल से
इन बात में   मणकर रहे ह और आप जैसे साधुओं के   कर रहे ह

साधु सीता से:-राधेश्याम

हे माई अब मुझे रि   शादो मर्तबा रहे आला तेरा
भगवान तु   हैंजिंदा रखे हो सदा बोलबाला तेरा

तू दूधो नहाओ पूतो फलो तू दिन भर दिन बड़भागीन हो

भूखा को थोड़ा भोजन दे देवी तू अटल सुहागिन हो

सीता साधु से:-भि ालीजिए महाराज

साधु सीता से:- लाइए देवी

जब रेखा में घुसता है तो एकदम पीछे हट जाता है

सीता साधु से:- राधेश्याम

अगर भि ादेनी हो तो रेखा से बाहर आ माई

जोगी लेते नहीं इस तरह बंधी भि ामाई

सीता साधु से:- मुनिवर माकरें रेखा यह छूट नहीं सकती

है और देवर की जो मुझसे टूट नहीं सकती

साधु सीता से:- दोहा

म कहता हूं तोड़ो नहीं तुम देवर की आन

बाबा भी कभी लेगा नहीं इस प्रकार का दान

अच्छा देवी हम जाते ह

सीता साधु से:- ना जाइए महाराज राधेश्याम

देवी की आन रहे ना रहे रखूंगी गृहस्थी का

अब म रेखा का यान्छोड़ करती हूं गृहस्थी का

नाटक

सीता साधु से:- अच्छा महाराज ! यह तो बताइए म आपको किस

तरहbhikshaa de sakti हूं और म किस तरह रेखा से बाहर आ सकती हूं

साधु सीता से:- हे देवी तुम इस तरह से करो पहले रेखा पर पाट पाटा रखो

और पाट पर पांव को रखो फिर भि ाडालो

सीता साधु से:- लीजिए ! महाराज भि ा

रावण पाट से उठाकर:- हा हा हा हा हा हा हा

रावण सीता से :- राधेश्याम यारीसीता हो सावधान अब तू मेरे पंजे में है

97. 92

म लंकापति रावण हूं तू रावण के शिकंजे में है

सीता रावण से :- राधेश्याम औ दु   ट खड़ा रह ! खबरदार ! स्वामी अब आने वाले ह

जो धनुष तोड़ कर लाए ह वह मेरे रखवाले ह

अब तक तो म उस रेखा में थी अब म सब की रेखा में हूं

अबला हूं पर इतना बल है पति   ता की रेखा में हूं

तुम   य संसार अगर आए तो भी बल तोल नहीं सकता

सतवंती के सदके आगे   हम भी बोल नहीं सकता

रावण सीता से :-हा हा हा हा हा !!!!!!!!! अब मालूम हुआ तेरी   ही

है वैसे तो आला दज की बेअकल है अरे नादान सोच तो सही इस तरह इन ब   के साथ अपनी जिंदगी बर्बाद करेगी हा हा हा हा 14 साल का तो एक बहाना है इन बेचार का तो अपना जंगल में ठिकाना है राम तो भटक भटक कर मर जाएगा और रघुवीर तुझे एक दिन रांड कर जाएगा मेरे साथ चलेगी तो रावण की पटरानी कहलाएगी और लंका तेरे पांव में आंखें   बछाएगी

सीता रावण से :- आग लगे तेरी लंका को choollhe में पड़े tu oh रावण

य अपनी मौत तलाश रहा है राजा होकर करता है ऐसा   डूब मर औ दु   ट बेशर्म

रावण सीता से :-   धओ moohjor bebaak मु   भर haddiyaan और इतनी त   ार,तेरी जुबान बहुत चल रही है और क   ची तरह चल रही है आ   खसू जंगल की रहने वाली वहसी है तुझे पता नहीं राजा के साथ किस तरह कलाम किया जाता है और किस तरह प्रणाम किया जाता है म तुझे अपने साथ ले जाऊंगा और तु   हें अकल सिखाकर इंसान बनाऊंगा

सीता रावण से :- चला जा !चला जा !   य खोपड़ी खुजला रही है

रावण सीता से :- ऑ बेजुबान   य अपनी मौत को बुला रही है पुकार अपने सहायक को हाथ पकड़कर जो मेरे इस   हाथ से छुड़ाए

सीता रावण से :- पुकारने की जरूरत नहीं वह परमेश्वर जो तुझ में और मुझ में   यापक है वह तो तेरे इस जुर्म को देखता है ब   क तेरे पापा को भी जानता है

98. 93

रावण सीता को उठाकर

बहुत अच्छा देखा जाएगा जो तुझे मेरे पंजे से छुड़ाएगा

सीता रावण से :- रो कर हे   तेरी दुहाई है एक तरफ गरीब औरत और दूसरी तरफ मशरूम कसाई है

हे प्राणनाथ बचाओ वीर तुम ही हो हां तु हारा यादोष है म ने
अपनी करनी का फल पा लिया हाय हाय म ब्लुझ बेगुनाह पर दोष लगाए
जो कभी सुनने में नहीं आई

रावण सीता को उठाकर पद में

राम मिलन

राम से :- हैरानी से है भैया म तु हें वहां बैठा कर आया था

राम से :- परंतु भैया यहां पर भी तो आपने ही बुलाया था

राम से :- किसने और कब

राम से :- आपने और अब राम से मालूम होता है आप किसी के धोखे में आ गए और गलती खा गए

राम से :- जी ाताजी म नौ गलती खा सकता हूं और ना ही किसी धोखे में आ सकता हूं मगर होनी को किस तरह टाला जा सकता है आपकी आवाज ने मुझे सहायता के लिए पुकारा भाई भाई ज दी आओ और मेरे प्राण बचाओ जिसे सुनकर जानकी जी रोने लगी और वही प्राण होने लगी मुझे भेजने के लिए इसरार किया जब म इंनकार किया बदनीयत और दगाबाज ठहराया

राम से :- राधेश्याम मारीच बना था माया मृग यह गहरी चाल उसकी थी

मेरे शहर में मरते मरते आवाज विशाल उसी की थी

भैया म सोच रहा था खड़ा-खड़ा कुछ तो बीती आश्रम में ह

कहता है मेरा बाया नेत्र अब नहीं जानकी आश्रम में है

यशवंत सिंह भइया म ने मुझको अति दफा इतना समझाया मगर अफसोस तु हारी समझ में कुछ नहीं आया रोकर दुश्मन मौका पाकर अपना वह चला गया और मुझे ख़ाक में मिला गया

राम से :- हे भइया आप पहले करने घबराए पहले पंचवटी की तरफ तो जाएं

राम- पंचवटी में दौड़कर आ कर

सीता अ ो यारी सीता तु कहां पर है सीता सीता सीता

राम से उठो भैया इतना बेचैन य हो रहे हो अपनी तबीयत पर तो बड़ा

राम से :- भैया मेरा इस तत्काल सब खाक में मिल गया जिसम है मगर कलेजा सीने से निकल गया

राम से :- हे भइया मुसीबत के समय घबराना अपनी मुसीबत को बढ़ाना है

आप इस कदर ना घबराए

भैया देखेंगे भालेंगे अगर आसमान पर चढ़ जाए या पाताल में उतर जाए

माता जी को ढूंढ निकालेंगे जो कुछ हो चुका उसके लिए रोना फ़िज़ूल है

राम से :- गाना

फिर ऐसे बनो में दुखी तेरे बनराम सिया

टोह एतैसे ना पाई होगी सवेरे से शाम सिया

तुम बनवासी जीव बता दो इधर गई या उधर बताओ

खोलके सुना दो गई कौन से मकान सिया

फिर से बनो

सीताराम प्रेमी तो है कर कर याद रात दिन से यह

मन में राम मोहे गई कौन से सथान सिया

फिर से बनो दुखी

नाटक

राम से :- हाय वही पंचवटी जिसमें जिंदगी बड़ी ऐसो आराम से कटी

अब ब कुछहीं भाती अरे ओ मनहूस पंचवटी तूने ऐसा जु मअपनी आंख से देखा मगर तेरी छाती नहीं फटी अरे ओ जालिम तूने मेरी प्राण

यारीको खा लिया या निगल लिया या किसी जगह छुपा लिया

ए सीता की न हीफुलवारी के बूट अरे तुम ही कुछ मुंह से फूटो

राम का गाना यह कुटिया मेरे काम की नहीं

ये कुटिया भैया . मेरे काम की नहीं दो..2

किसको सुनाऊं हाल दिल ए बेकरार का बुझता हुआ चिराग हूं अपने मजार का

ऐ काश भूल जाऊ मगर भूलता नहीं

किस धूम से उठा था जनाजा बहार का ये कुटिया ऐ मेरे काम की नहीं

अपना पता मिले ना खबर यार की मिले दुश्मन को भी ना ऐसी सजा यार की मिले उनको खुदा मिले ह खुदा की जि हेंतलाश मुझको तो बस झलक मेरे दिलदार की मिले.....ये कुटिया भाई मेरे काम की नहीं

बन खंड में आकर भी कोई सहारा ना रहा जीने का. कोई भी मुझको बहाना ना मिला

यापूछूं किस परिवार से यासमझु इस मजदार को ए रस्ता दे मुझे ए काट दामन छोड़ दो ये कुटिया अब मेरे काम की नहीं

राम से :-हे ाताजी होश करो आपने दीवान जैसा हाल य बना रखा है
जरा अपनी तबीयत को संभालिए
राम से :- गाना वीर अब कैसे धारू धीर
विपद काल में दुख सुख कि साथी रही ना वह भी तीर... बीर अब कैसे धारूं ....

बैठे-बैठे आनअचानक लगा कलेजे तीर
ना घर के ना रहे घाट के यूं ही मरे आ खर
बीर अब कैसे धारू.... ...

याजाने वह किसी दरिंदे ने ही दी चीर
मुश्किल है अब उसका मिलना लाख करो तदबीर. बीर अब कैसे धारू... ..

ना दिल में अब रहा सबर ह ना नैनो में नीर
य रोए अपने कम को रह गए वहीं फकीर
वीर अब कैसे धारूं धीर.......

ईतने तावं दिए गर्दिश में जिनकी नहीं नजीर
मर कर भी यह खाक हमारी बन जाएगी अकसीर.. ..
वीर अब कैसे दारू वीर ......

नाटक

राम से :- है यारे तुम अयो याघले जाओ
और राज काज में भरत का हाथ बटाओ मेरा तो इ हींजंगल में ठिकाना है
आ खयही भटक भटक मर जाना है

हां भैया म अयो यकैसे जा सकता हूं

और माता जी को कैसे सूरत दिखा सकता हूं य कि होनेमे तो पहले ही कह दिया था कि आओ तो इक `आना अकेला मुह ना दिखाना है भैया जब जनक अपनी पुत्री का हाल पूछेंगे तो म याबताऊंगा और कौन सा मुंह लेकर उनके सामने जाऊंगा

राम से हे ताजी तस लीए खएजिस तरह तीन इक `आए थे उसी तरह तीनो इक `जाएंगे वरना अकेले दुकले हरगिज़ मुझ नहीं दिखाएंगे भैया अब यादादेर नहीं लगाइए और ज दीखोज की जाए

राम से :- ठंडी सांस भर कर ....चलो ताअब तो इस मनहूस जगह की तरफ देखने को दिल नहीं चाहता

Drisay samaapt

सीता रावण जटायु

सीता रावण जटायु पद पर लड़ाई

जटायु रावण से:- महाराज यह काम आप की शान के खलाफ है

रावण जटायु से :- कौन है जो मुझको टौकता है ,और खामखा मेरा रास्ता रोकता मौया जान बूझकर अपने आप को मौत के मुंह में झ कता है

जटायु रावण से:- महाराज मौत का स मान तो खुद लिए जाते हो और दूसर को मौत तलब गार बनाया

रावण जटायु से :- लापरवाही से जब तु हें मदाद के लिए बुलाओ तो मत आना

जटायु रावण से:-जाते कहां हो जरा संभलकर कदम उठाना.... सीता को अपनी तरफ करना...

रावण जटायु से :-मुझे रोकने की या मजाल है

जटायु रावण से:- बगैर मरे मारे नहीं जाने दूंगा आपका किस तरफ ख्याल है

रावण जटायु से :-अरे मरदूद तेरे सिर पर काज छाई है

जटायु रावण से:-मौत तेरी यहां खींच लाई है

रावण जटायु से :-तेरा इसे या तालुक ना समझ में आई है

जटायु रावण से:-राम का पिता मेरा भाई है

रावण जटायु से :-अच्छा हाथ सीता के बदन के ना लगाने दूंगा ोध

जटायु रावण से:-जीते जी इस पर आंच नहीं आने दूंगा अहंकार

रावण जटायु से :-एक ही बार म तेरी उड़ा दूंगा

जटायु रावण से:-ठहर जा तुझे चोरी करने का मजा चखाता हूं

रावण जटायु से :-औ खबरदार हो जा तुझे आदम का रास्ता दिखाता हूं

दोन की लड़ाई जटायु का घायल हो जाना

जटायु रावण से जमीन पर गिर कर अरे जालिम बुरी तरह घायल किया अफसोस दिल को दिल का अरमान भी न निकलने दिया

रावण का जटायु को तड़पते हुए छोड़ जाना

पद में जटायु पद में राम पद पर

राम से याभैया अफसोस की सीता जी का अभी तक पता नहीं चला

पद के अंदर से आवाज जटायु की अरे कोई रामचं तक खबर पहुंचाओ और उनको मेरे पास बुला लाओ

राम से जरा सुन ना
भाई यह आवाज किधर से आ रही है

राम से ही ताजी ऐसा मालूम होता है
जैसे कोई की वजह से कराह रहा है

और आपका नाम लेकर पुकार रहा है

राम से चलो भैया यहां से सीता जी की खबर मिले

पर्दा खुलना

राम से हाय हाय भाई गजब हो गया

यहां

तो महाराज जटायु घायल पड़े हुए ह

राम जटायु से हे देवता हम तो अपनी किस्मत को रोते थे मगर आप किस जालिम के
हत्थे चढ़ गए

राम जटायु का सिर अपनी जांग पर रख लेते ह

जटायु राम से राधेश्याम राम एक रा सद ह्मां राम नाम ले चला था उनको

हां राम ना बोला जाता है हां राम छुड़ाना सका उनको

हां राम लड़ा था उनसे हां मुझे अब मरने दो

हां राम सामने आ जाओ राम यह रुप निखरने दो

राम जटायु से में हाय इस जगह हमारा एक ही गम खवार था मगर अफसोस वह भी मुश्किल के साथ छोड़ रहा है हे महाराज आप इस तरह न तरफ है म उस जालिम से बदला लेकर छोड़ूंगा

जटायु राम से भगवान मुझे ना बदला लेने की इच्छा है अब तो आखरी सफर की तैयारी है

राम जटायु से अच्छा महात्मन मेरा एक काम कर देना

जटायु राम से याकाम है भगवान

राम जटायु से राधेश्याम महात्मा भाई यह समाचार कहना ना पिताजी से जा कर

म राघव दु प्रचारकहेगा कुल सहित आकर कर

अच्छा जाओगे भ तराजजाओ परमधाम को तुम

जाते जाते इतना सुन लो ऋणी कर चले राम को तुम

जटायु राम से अच्छा भगवान यह यान्रहे मेरा दाह संस्कार उस जगह करना जहां किसी का भी ना हुआ हो

राम जटायु से अच्छा भ तराजतथास्तु ऐसा ही होगा

जटायु का धाम चले जाना

राम जटायु से हे भ तराजमुझे ऐसी जगह कहीं नहीं दिख रही है मगर म आपका यान्संस्कार अपनी हथेली पर करता हूं

जटायु का श्यसमा त

पर्दा गिरना

103 98

शबरी की कुटिया

शबरी श्रद्धा सुमन का गाना म तो कर रही रास्ता साफ आज घर राम जी आएंगे

राम शबरी से कहो भ तमें श्रे ठश्रद्धा शबरी चित हम प्रस न्है

सबरी राम से आहा आइए महाराज पधारिए बड़े सुकुमार दया के भंडार

लाऊं पहले आसन लगाऊं

103 98

नहीं पहले चरण धुलाऊं

औह भूल गई पहले कुछ खलाऊं याकरूं

राम शबरी से घबराओ नहीं देवी हम तो केवल प्रेम के भूखे ह तुम काहे को चिंता करती हो

सबरी राम से हाथ जोड़कर... माकीजिए महाराज बड़ी भूल हुई ज दीमें आपके पांव छू लिए आप को स्नान करना पड़ेगा

राम सबरी से य याहो गया य सनान करना पड़ेगा मुझे

सबरी राम से भगवन मेरे हाथ लगाने से आप के वस्त्र अशुद्ध हो गए ह गे और मेरी छाया पड़ने से लोग तुरंत नहाते ह

दोहा कोई मुझ नीच से प लानहीं अपना मिलाता है

मेरा रास्ता रोक कर सारा संसार जाता है

राम शबरी से हे देवी यह उनकी े भूल है मनु य से नहीं से महान माना जाता है

दोहा धन कुटुंब वैभव सकल गुण और चतुराई

यह कुछ नहीं काम आएगा यह भ ि तनहीं पाई...

शबरी राम से भगवान... सबरी राम से भगवान म नीच कुजाती कबुद्धि और अ ानीहूं मेरे से दूर रहने में संसार का क याणहै

राम शबरी से ऐसा ना कहो सबरी जो मू यसिद्धांत नहीं जानते ह वही जाती और भेद भाव मानते ह जिसके मन में भि तऔर प्रेम का दरिया बहता है वह संसार में किसी को नीच नहीं कहता है

दोहा ..है कोई चंडाल या ऊंचा किसी का वंश है आत्मा सबकी उसी परमात्मा का अंश है

सबरी राम से है भगवन आज आपने मेरा सारा ममिटा दिया ान का महा दरिया बहा दिया

राम शबरी से से इसमें हैरानी की याबात है देवी तो नीच को उचा बनाता है

दोहा नीच है या ऊच है या दु हत्यारा है वह जिसका यारा है भगवान का यारहै वह
सबरी राम से जय हो प्रभो की जय हो संकटमोचन की

राम शबरी से देवी भूख लग रही है यदि कुछ खाने की वस्तु हो तो लाओ

सबरी का इधर उधर भटक खाने की वस्तुओं को खोजना

राम शबरी से नहीं सबरी कुछ संकोच न कर लाओ जो कुछ भी हो तुरंत लाओ

सबरी राम से महाराज म झाड़ी के बैर तोड़ रखे ह

राम शबरी से .. ला बेर यदेर करें .2…
.यह बेर सुधा से बढ़कर ह
मिश्री से भी अच्छे ताकतवर मधुर मनोहर है

सबरी राम से ..लीजिए भगवान

राम शबरी से यह बेर तेरे बड़े निराले ह भि तरस के याले

सबरी राम से बेर देकर यह लीजिए महाराज यह बहुत मीठा है

राम शबरी के बेर खाकर सूखे बेर में जो मिला यहा

राज घर में सवाद कहां

शबरी से यह बेर आप भी लीजिए महाराज

बेर खा कर.. दोहा महल के भोजन जीनहे भाते न थे स ावसे .
आज वे ही खा रहे .बेर सूखे चाव से

राम से राधेश्याम तुमने खाया ना बेर.2
यह देखो कैसा मीठा है
पृ वीसे लेकर आकाश तलक जो कुछ है इसमें फीका है

तुमने भी बहुत खलआहै पर इन से बढ़कर स्वाद नहीं
सीता का परोसा भोजन भी देता इतना स्वाद नहीं

राम से भैया अब सीता जी की भी सुधी लीजिए

बेरो का स्वाद छो ड़औरं माता जी को बंधन से छुड़ाने की चिंता कीजिए

राम सबरी से भीलनी तू सच्ची भगतणी है भ त में नहीं झमेला है

याखान-पान की बात यहां भि तमार्ग अलबेला है

राम से हां हां
तुमने ठ कही कहा अब यहां से चलना चाहिए
सबरी राम से किस और जाना है भगवन जरा सारा वृत्तांत सुनाओ

राम शबरी से राधेश्याम हम दोन भाई राम वनवासी बनकर आए है
सीता को अपने साथ साथ इस दंडक वन में लाए थे
दुर्दिन नें ऐसा कर डाला उस और पिता का मरण हुआ इस और मृग के कारण कुटिया से सीता का हरण हुआ
दोहा तू भी है बनवासीनी में बतलादो कुछ राय

कहां जाए किस से कहें याहम करें उपाय

सबरी राम से हे भगवन् म बावरी याबतलाऊं

बतलाऊं राय

पूछ रहे ह तो आप , तो सुनिए एक उपाय
राधेश्याम आगे है ऋषि मुख सुग्रीव वहां पर रहता है

अपने भाई के कारण वह अत्यंत नित सहता है

बस वही पधारे महाराज सीता की सुधि मिल जाएगी

जो कली यहां मुरझाई है वह उसी जगह खलाएगी

राम शबरी से हे देवी आप ने बड़ी कृपा की मुझे आप जैसे भ त पर नाज है

पर्दा बंद होना सबरी का श्यसमा त

105.   100

सुग्रीव और राम की मित्रता

सुग्रीव हनुमान से राधे श्याम हनुमान देखना जा कर दो पुरुष इधर को आते ह

दोन ही तपस्वी तेजस्वी ह नरसिंह समान सुशोभित है
मातम श्राप वंश भरात य   यपि यहां आ सकता है
म जब तक इस दुनिया में हूं वह चैन नहीं पा सकता है

संभव है उसके गु   त्दूत मेरा य भेद लगाते ह
छल से बल से या कौशल से वध करने मुझको आते ह

इसलिए प्रथम चतुराई से सब पता ठिकाना लेना तुम
फिर हो मेरा संदेह सही तो मुझे इशारा कर देना तुम

हनुमान सुग्रीव से जैसी आ   ाहो महाराज म जाता हूं और सारा भेद निकाल कर लाता हूं
हनुमान राम से राधेश्याम कठिनाई मार्ग है यहां का वन अति गंभीर आप
कौन श्रीमान है श्यामल गौर शरीर है
हनुमान का गाना राम से लावणी में

कौन ग्राम   यानाम देवता कहां से आप पधारे ह
जाहिर म तो हो तपस्वी फिर शास्त्र   य धारे ह

इधर तु   हारेयुवा अवस्था उधर फकीरी बाणा है

कारण वन में फिररने का असली कौन ठिकाना है
ईधर जलाल अजब चेहरे का सूरत   सुहाना है

इधर हवा दवाइयां उड़ रही मुंह पर इसका भेद ना जाना है
कुल और   त्रयंजेपन के बसव आप में सारे ह

कौन ग्राम   यानाम देव का

राम हनुमान से गाना लावणी में

यापूछोगे महाराज हम प्रबंध के मारे ह
कहने को तो हम दोन दशरथ के राज दुलारे ह

लेकिन अब तो अरसे से दर पर अजार जमाना है
बेपरवाह बेजार बेघर वेदर ना कोई खास ठिकाना है

तेरे कटते दिन गर्दिश के इसी तरह मर जाना है
जगह-जगह हम फिरे ढूंढते सीता का नहीं मिला ठिकाना है

साथ मेरे यह छोटे भाई प्राण यारेह

यापूछो हे महाराज हम प्रार धके मारे

हनुमान राम से गाना

कहो साफ हाल कुंवर जी याविपदा तुम पर आई है
हो गया ऐसा याकारण घर से निकले दोन भाई ह
असल हकीकत वजह उदासी अब तलक नहीं बतलाई है
हो रही हालत य अवतार चेहरे पर जद छाई है

पड़ी मुसीबत यातुम पर भारी जो उड़े ओसान तु हारेह
कौन ग्राम के नाम देवता कहां से आप पधारे ह

हनुमान से राधे श्याम राम पिता की आ ासे वन मणकरने आए
थे
इस सेवक और सीता जी को अपने संग में लाए थे

फिर से फिर से यूं ही वन में 9:00 10 साल बताथे

कुछ अरसे से पंचवटी में डेरे आन लगाए थे
सीता को हर ले गया रावण ढूंढ ढूंढ हम हारे है
यापूछोगे महाराज

हनुमान जी राधेश्याम माता सीता को ढूंढ रहे सुधीर ना अब तक पाई है
धनियाों के ह सब मददगार निर्धन का कौन सहाई है
हम दोन भाई राम अब खेल रहे ह प्राणो पर
कर देंगे दु हीन धरती आशा है अपने बाण पर

107 102

पूछा तो हमने प्रकट किया अ यथा ना कहना ही अच्छा है
जग में तो सभी स्वाथ है कोई न किसी की सुनता है

हनुमान राम से श्री महाराज हम वानर है । मशरीर का धोखा है
सुग्रीव यहीं पर रहता है जो हम लोग का राजा है
जिस पापी दु ने सिया हरि हम उसका दिया बुझाएंगे
आ हो तो प्रभु की पालन हम करते जाएंगे

कल अपना पूर्ण लगा देंगे स्वामी का दुख मिटाने पर
बलिदान सुख का कर देंगे सीता का पता लगाने पर

जो काम आप करने आए ह उसमें हाथ बटाएंगे
धरती दु टसे हीन करें इस प्रण पर प्राण लगाएंगे
हनुमान राम से भगवान आप सुग्रीव के पास तशरीफ ले चले तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी मेरा नाम हनुमान है सुग्रीव कि कंधा का आजकल निगहबान है
राम हनुमान से हां हां यार हनुमान हमें कब इनकार है
हनुमान राम से चलिए भगवान
दोन को कंधे पर बैठाकर सुग्रीव के पास ले जाना

सुग्रीव राम से प्रणाम भगवान मेरे अहोभा य है जो आप ने दिए
हनुमान राम से सुग्रीव की ओर इशारा करके दे खभगवान यही हमारे स्वामी सुग्रीव कि कंधा नरेश है जो अपने दु भाई बाली के हाथ बड़ा पा रहे ह और नगर को छोड़कर इस पर जीवन बता रहे ह
राम हनुमान से सुग्रीव जी मुझे आपके साथ सच्ची सहानुभूति है

सुग्रीव हनुमान से याहेनुमान मुझे भी तो परिचय कराइए और निवास स्थान भी बताइए

हनुमान सुग्रीव जी महाराज यह दोन होनहार महाराज अयो यापतिदशरथ के राजकुमार ह जो कि आपकी तरह जमाने के हाथ बेजार है

राम जी की ओर इशारा करके

इनका नाम श्री शुभ रामचं जी ह

की ओर इशारा करके

इनका नाम जी पुकारते ह

108 पेज नंबर पर रामायण के 103 पेज नंबर

सुग्रीव राम से हाथ जोड़कर मेरा सौभा यहै जो आप का दीदार हो गया और आज विलासक मझधार से पार हो गया

भगवान मुझे आप पूरी कहानी तो सुनाइए

राम सुग्रीव से हे सुग्रीव मेरी सौतेली माता ने पिताजी से दो वचन पूरे करने का इकरार किया था मेरी माता ने उ हेंपूरा करने के लिए मेरे लिए 14 का बनवास और मेरे छोटे भाई भारत के लिए राजतिलक का इसरार किया था म इनका हुकुम खुशी से मंजूर किया इधर और मेरी पत्नी सीता मेरे साथ आई 13 साल से वन में मणकर रहे थे इसी बीच एक दिन दु टरावण हमें धोखा दे गया मेरी तथा की गैरहाजिरी में सीता को चुरा ले गया उन की तलाश में म और आवारा फिर रहे ह

सुग्रीव आराम से खा महाराज म एक दिन इसी पर बैठा हुआ था दुर्भा यको रो रहा था और इसी पर बैठा आंसू बहा रहा था उसी समय एक विमान आकाश में उड़ा जा रहा था

जाने कि जी बड़ा विलाप करती हुई जा रही थी अपने आभूषण को नोच नोचकर गिरा रही थी उनमें से कुछ म भी इक ेकर लिए थे और संभाल कर अपने पास रख लिए थे

राम सुग्रीव से रो कर तो सुग्रीव वह आभूषण हमको भी दिखाओ

सुग्रीव राम लीजिए महाराज इनकी पहचान कीजिए

राम से गाना बहरे तबील

भाई जनक तू ही पहचान कर
कि यह सीता का गहना भी है या नहीं
देख ले देखभाल ले खूब अच्छ तरह

कभी सीता ने पहना भी है या नहीं

जितने जेवर और जड़ाऊं जड़े
हार माला बंदी जुगनी व करें कड़े

जो ह सारे तु हारेअगाड़ी पड़े

पेज नंबर 109 रामायण 104

उसके माथे का बैना भी है या नहीं
मुझे देवर यह सुग्रीव ने दिए
और कहां जाता था रावण उसको लिए
ताने सीता ने यहां तक दिए
कि तेरी माता बहन भी है या नहीं

मेरे होश हवास ठिकाने नहीं
इसलिए यह जेवर पहचाने नहीं
अब जोहरी अयो यासे आने नहीं
कुछ इसका जवाब भी दे तो सही

नाटक

राम अरे भैया म कैसा पागल हो गया हूं भैया इनका पहचान ना भी मेरे लिए मुश्किल हो गया
है भैया तुम ही पहचानो कि यह कुंडल आगे करके सीता जी का कुंडल है या नहीं

राम से राधेश्याम

म नो चरण निहारे ह देखें माता के कान नहीं
म तो बच्छुओंका सेवक हूं कुंडल कि मुझे पहचान नहीं

नाक से खून यह अच्छा है धड़कन है तीर कमान ओ में
यही दिन वह आएगा कुंडल होगा उन कान में

कुंडल वाली बेदेही का इस भानी हनन करने वाले
अब सावधान होकर सोना आते ह रण करने वाले

सतवंती सीता की आहे नाचेंगी तेरे प्राण पर
द   िदिशा को जाने वाले अब मरना हमारे बाण पर
राम से यशवंत सिंह भैया म इन जेवर को नहीं पहचान सकता था अगर गांव की पाजेब हो तो दीजिए जब म प्रातः उठकर आता था तो पांवो में आकर शीश झुकाता था और मुझे पांव का जेवर ही नजर आता था

राम   से पाजेब दिखा कर दे   खभैया इस पाजेब की पहचान कीजिए
राम से हां भैया   बलासकसीता जी का गहना है

पेज नंबर 110 रामायण 105

सुग्रीव   से   तुम   हो आपकी   ल   जाका   याकहना है यह भी भाई है जिसने प्रेम भ   तकी मिसाल पैदा कर दिखाई है मेरा वह कमीना भाई जिसने अपनी भाई की स्त्री ही भायी और मुझे जंगल की खाक छानवाई है

राम सुग्रीव उसे राधेश्याम जब से हम ऋषि मुख   पर आए तुम को उदास ही पाते ह
चिंता में डूबा देख हम भी चिंतित हो जाते ह

छिपकर पहाड़ पर रहने का   याग ु   तभेद   याकारण है
हम साथ ही सुख-दुख ओके है   याचलो तु   हारा   याप्रण है

सुग्रीव राम से राधेश्याम म जिसके भय से गाय बना वह नाहर सा दुखदाई है
य   यपिहै मेरा भाई पर भाई नहीं कसाई है

छोटी छोटी सी बात पर रहता सर्वदा तना वह
ले लिया राज पत्नी छ   नअब मेरा काल बना वह

जो भाई कभी चाहता था वध पर अब ततपर रहता है
है आस्तीन का सांप वही जग जिसको भुजावल कहता है
उसके डर से ही ऋषि मुख म जान छुपा कर बैठा हूं

आसकता नहीं श्राप बंद है इसलिए यहां पर रहता हूं

इन सात ताड़ के वृ को जो एक बाण से डाएगा
ऋषि ने यह कह रखा है वह विजय बाली पर पाएगा
राम सुग्रीव से राधे श्याम बस अधिक नहीं सुन सकता म. अब भुज को दंड तोलती है
मालूम मुझे यह होता है उसके सिर मृत्यु बोलती है

पी चुके सीर णत्अपना अब उसका पिलाएंगे
सब राज पाठ सुग्रीव तु ह्हेंम सं यत्तक दिलवाएंगे

यशवंत सिंह हे सुग्रीव जो भी वृ मेरे बाण के सामने आएगा सात नहीं सब के सब भीदं जाएंगे तीर छोड़ना
हनुमान राम से भगवन कमाल किया एक ही बाण से सात वृ को उखाड़ दिया

सुग्रीव राम से हो प्रभु अब मुझे विश्वास हो गया कि आप ही बालि को मारेंगे और मेरा निवारोगे महाराज उसे म्क्का वरदान है कि जो उससे युद्ध करने सामने जाएगा उसका आधा बालि में चला जाएगा अच्छा महाराज म जाता हूं किंतु याद र खआप थोड़ी देर भी लगाएंगे तो मेरे प्राण पखेरु आकाश में उड़ जाएंगे

राम सुग्रीव से नहीं ऐसा नहीं होगा तुम सावधान होकर जाओ

पाली का दरबार मंत्री साथ में पेज नंबर 106 रामायण का डिजिटल का 101 नंबर

18. वानर राज बाली का दरबार.

मंत्री साथ में

बाली मंत्री से मंत्री वर अब तो सुग्रीव कई दिन से लापता है

मंत्री बाली से:_महाराज उस पर रहम कर दिया जाए तो अच्छा है य कि वह बेखता है

बाली मंत्री से ोधमें मालूम होता है तुमने उससे कुछ रिश्वत खाई है

मंत्री बाली से नहीं महाराज वह आपका भाई है

सुग्रीव बाली से ललकार कर जरा बाहर आओ भाई आज मै रोज रोज का झगड़ा मिटा दूंगा या तो आपकी जान लूंगा या अपना सिर कटवा लूंगा

बाली सुग्रीव से :- ोधम जरा ठहर आज म तेरी अच्छ तरह से बनाऊंगा

सुग्रीव बाली से ोधमें जरा मैदान में आओ वहीं बैठे बाते नहीं बनाओ

बाली सुग्रीव से मैदान में आकर मालूम होता है आज फिर तेरी खाल खुजलाई

सुग्रीव बाली से ोधमें ना मालूम मेरी खॉल खुजला रही है या तु हारीमौत तु हेंबुला रही है

दोन की लड़ाई सुग्रीव का नीचे आना CHHATI पर रख कर

बता मरददू कर दो एक के दो

सुग्रीव मन से बोल कर ही किसी के दम झास में आकर जान फसाई उस भले मानस ने तो अभी तलक अपनी भी नहीं दिखाई ..उठ कर भाग जाना..

बाली सुग्रीव से :- वह बुजदिल कुछ कुछ आई आ खभाग कर ही जान बचाई

रामचं के क में सुग्रीव का पहुंचना.. राम हनुमान झावंत...

सुग्रीव राम से राधेश्याम सांस भर कर हे राम तेरे कहने से ये झगड़ा मो L लिया म ने

है काल समान बाली सारा बल तोल लिया म ने

आ ा पर राम ही तु हारीही मेरे बाजू लड़ते ही रहे

तुम खड़े खड़े तकते ही रहे मुझ पर मु केपढ़ते ही रहे

राम सुग्रीव से राधेश्याम म सोच रहा था खड़ा-खड़ा दोनो बैर निकलने दु

यह दोन भाई भाई है मिल जाए तो मिलने दु

इतने पर भी म बार-बार धनुष पर बाण चढ़ता था तुम दोन का रूप एक इसीलिए धोखा खा रहा था

अच्छा यह हार पहन जाओ जिससे मुझे पहचान रहे

यह तुम पर कवच स मानरहे मुझे भी हार का यानरहे

सुग्रीव राम हे भगवान देखना अब भी लापरवाही से काम लिया तो मुझको जान से मार देगा

राम सुग्रीव से नहीं यारसुग्रीव वह मैदान में आते ही अपनी जान गवाएगा और अधिक देर तक जीवित नहीं रह पाएगा ..सुग्रीव का मैदान ए जंग में जाना.. पड़ता बंद..

□ □ □बाली और तारा□□□

सुग्रीव बाली को ललकार कर वहां अच्छ बहादुर दिखाई कुछ नया बंद पड़ा तो घर में बैठे जान छुपाई

जरा बाहर आ जाओ भाई

बाली सुग्रीव से अरे ओ सोदाई मालूम होता है तेरी खाल फिर खुजलाई

सुग्रीव बाली से बाहर भी आएगा या वहीं बैठा बातें बनाएगा

बाली सुग्रीव से उठकर और शैतान तू इसी तरह जुबान चलाएगा या अपनी शरारत से बाज आएगा

तारा बाली से पाव पकड़ कर स्वामी जी जरा ठहर जाइए और मेरी विनती सुन लीजिए

बाली तारा से गुस्से म अच्छा तो यही था कि तुम चुप ही रहो वरना जो कहना ज दीसे कहो

तारा बाली से हे प्राणनाथ सुग्रीव आपका भाई जिस माता का आपने दूध पिया है उसी गोद में उसने परवरिश पाई है इसलिए उसका हक उसे दे दो और इस वैर भाव को दिल से निकाल दो

BALI तारा से हा हा हा म समझ गया दिल की आग ने तुझे मजबूर कर रखा है और यारीरोमा के सऊदी अरब में तेरा सीना चकनाचूर कर रखा है इसलिए यह मसले सुना रही हो

पेज नंबर 113 रामायण 108

तारा Bवाली से हे प्राणनाथ आपके चरण की सौगंध खाती हूं और आपको विश्वास दिलाती हूं कि आज लड़ाई आपके लिए खतरनाक है अभी मुझे अंगद ने बताया है कि अयो यके दो राजकुमार को अपना मित्र बनाया है हे स्वामी इतनी मार खाकर सुग्रीव दोबारा लड़ाई में आया है यह तो आप अच्छ तरह से सोच सकते ह

पाली तारा से ोधमें बस बस ओ बेवकूफ अधिक बक बक न लगा और मेरे आगे से हट जा

ना म उन से डरता हूं ना किसी मददगार का खौफ खाता हूं औ जालिम तो मुझे कायर बनाना चाहती है और मुझे घर में छुपाना चाहती है उन छोकर की मेरे सामने याऔकात है

तारा वाली से गाना बहरे तबील

म हूं दासी तु   हारीए प्राण पति

जो सजा दो खुशी से गवारा करूं

मान लो विनती मेरी इतनी मगर

आपसे   ये म दोबारा करूं

आप रोमा से बेसक मोह   बतकरो

म यूं ही बैठ घर में गुजारा करूं

आपके दर्शन की तलब गार हूं

और सब झंझट से किनारा करुं

रंडी बनकर रहना मुझे मंजूर है

काम घर में तु   हारेसंवारा करूं

हाथ जोड़ूं कहा मान लो मेरा

जो कहो म कहा तु   हारकरूं

तुम मेरा दामन छोड़ दो

तारा बाली से   के वास्ते इस जिद को छोड़ दो

बाली तारा से तु   हारेकहने से म अपने आपको बट्टा नहीं लगा सकता

तारा बाली से स्वामी जी मान जाओ गया   फिर हाथ नहीं आ सकता

सुग्रीव बाली से ललकार कर घर में बैठा बातें बनाएगा या फिर बाहर भी आएगा

पेज नंबर 114 रामायण 109

बाली तारा से हाथ छुड़ाकर छोड़ छोड़ सुनती नहीं वह किस तरह ललकार रहा है

बाली का बाहर जाना

तारा वाली से औंधे मुंह गिरकर प्राणनाथ अब उसे और कोई उभार रहा है

पर्दा गिरना

बाली और सुग्रीव युद्ध

बाली सुग्रीव से आ रे बेशर्म उस भाग कर जान बचाई अब दुबारा लड़ाई में आया है तुझे नहीं आई

सुग्रीव बाली से मुझे मेरा हक दे दो
बात गई आई ना झगडा न लड़ाई
बाली सुग्रीव से शिवाय आवारागद के कोई हक नहीं
सुग्रीव बाली से तो आज तु हारीमौत में भी कोई शक नहीं
बाली सुग्रीव से अरे ओ बुजदिल होशियार हो जा

सुग्रीव बाली से ओ संगदिल तू भी मरने के लिए तैयार हो जा

दोन की लड़ाई बाली का सुग्रीव पर बैठ जाना राम का तीर से मारना

बाली राम से दुख में अरे यह कौन अ यार्यजिसने छिपकर चोट पहुंचाई
राम वाली से किसी का यदोष है तु हारीकरनी तु हारेआगे आई
बाली राम से राधेश्याम होकर सुग्रीव के यारतुमने ही उसे उभारा है

इन वृ के पीछे छुप कर यमुझे तुम ही ने मारा है
सचमुच मेरा भा यजागा घर बैठे जगवंदन आए ह
भाई के कारण म भी समदश के पाए ह

बैरी का छल वध करना है सूरवीर का नहीं
छुप कर जो मेरे प्राण लिए यह रघुवंशी का नहीं

राम बाली से राधेश्याम तूने वर ऐसा मांगा था सामने ने मारा जाएगा
स मुखलड़ने वाले का बल तुझ में खींचकर आ जाएगा
वरदान किसी का न करें ऐसा ना स्वभाव हमारा है
बस इ हीविचार से हमने यह बाण आड़ से मारा है

बाली राम से राधेश्याम सुग्रीव हमारा भाई है भाई भाई ह हम दोन

प्रभु की नजर में चाहिए एक ही सम दोन

पेज नंबर 115 रामायण 110

सुग्रीव मित्र बाली शत्रु यह कैसा यायविल णहै
रघुकुल के नायक दें वध करने का यकारण है

राम वाली से राधेश्याम

क यब्रहन सुत की पत्नी या छोटे भाई की नारी है
जो इ हेंकु ि से देखता है वह वध के यो यद्गुराचारी है
सुग्रीव भाई की पत्नी को तूने अपने घर में डाला है
इस कारण बाण मारकर तु हेंसमा तकर डाला है

जो मेरी बछड़ीसीता को प्रण करें मिलाने का
यम कुछ भी न प्रयत्न करूं उसकी तकलीफ मिटाने का

बाली राम से राधेश्याम निर्बल सुकंवर में यह आशा वह सीता सुधी से काम करें
गीदड़ में शि तकहां है यह जो शूरवीर से संग्राम करें

हां प्रभु मुझसे पहले मिलते तो म दिखला देता

अि नकी सा ीफिर होती सीता से प्रथम मिला देता

म उसे खूब जानता हूं जो उसे चुरा कर भागा है
म उस तुच्छ अनाड़ी को छह मास काख में दाबा है

अच्छा जो बीती बीत गई अब बकने से यहोता है
अब तो मुझ सा भाग जगा यह बाली सदा को सोता है

राम वाली से राधेश्याम अब तक नहीं जानते थे हम तो ऐसा है तू इतना है

अब बातें कुछ हो जाने पर समझे है तू कितना है

जो कुछ इच्छा हो मांगो वाली बतलाओ तुम को यावर दे
यदि मरना नहीं चाहते हो तो तुझे अभी जिंदा कर दें

बाली राम से अच्छा भगवान जो कुछ हो गुजरा अब उसका याअफसोस है
मुझे पर लेने की कोई जरुरत नहीं अब आप स मुखहै मुझे कीसी चीज की जरूरत नहीं
अब मुझे हर तरह से संतोष है सामने देख कर मेरी प्राणपTNI तारा आ रही है और अंगद को भी ला रही है बेहोश हो जाना

तारा बाली से होकर आए प्राणनाथ तुम कौन सी नींद में सो गए

तारा बाली से गाना मेरे स्वामी सिर के ताज मुख से बोलो तो सही

पेज नंबर 116 रामायण 111

जिसके बल से कांपते धरती और आकाश

पढ़ा धरण पर ले रहा लंबे सांस
मुख से बोलो

छोड़ मुझे मझधार में सो रहे लंबे तान
जिसका मुझे खौफ था वही हुआ आ खर
य होती यह दुर्दशा जो लेते कहना मान

मुख से बोलो जय श्रीराम जय श्रीराम

जिसका मुझे ख़ौफ़ था वही हुआ आ खर
अंगद मेरे लाल की कौन बंधाऐ धीर

मुख से बोलो राम राम राम जय श्री राम जय श्री राम

या बगड़सुग्रीव का फूटे मेरे भाग

एक एक आन की आन में हो गया सुहाग

मुख से बोलो जय श्री राम जय जय श्री राम

कहना मेरा माना नहीं बहुत मचाया शोर

होनी तो अपने बल चली चला न किसी का जोर

मुख से बोलो जय श्री राम जय जय श्री राम

नाटक

तारा बाली से हाय मेरे सरदार हां हे मेरे प्राण के आधार आप य मुझ से य मुझ से मुंह मोड़ जाते हो मुझे अपनी जिंदगी की परवाह नहीं जिस तरह हो सका निभाऊंगी नहीं तो आपके साथ की राह लूंगी

राम तारा से हे देवी यह दुख तेरे लिए बढ़ा है ऐसा कौन है जिसने तुझ पर तरस ना आता हो हे देवी अब तो स करने में ही भलाई है अंगद तथा आपकी इसी में धनाई है बाली के साथ बस आपका इतना ही संबंध था

और आराम से धमें तू अपने आप में धर्मात्मा जरुर है मगर मेरी आंख से थोड़ी दूर रहो अरे बेरहम अ याईतुझको बन्कसूर हत्या करते गैरत नहीं आई

बाली तारा से आंखें खोलकर और यारीतारा तुमने समझाने में बहुत मगज मारी अफसोस म नेरी नसीहत का कोई फायदा नहीं उठाया जिसका यह नतीजा सामने आया औह यारीतारा स करो भगवान पर तो तु हारा फिजूल गिला है

बाली सुग्रीव से मेरे याभोई तुम को मुंह दिखाने का मन नहीं चाहता मगर तेरे सिवा मुझे और कोई नजर नहीं आता जिसको अंगद का हाथ पकड़ाऊं मुझे उ मीदहै कि तुम दिल से बैर भाव निकालकर मेरी दुश्मनी का अंगद पर बोझ नहीं डालोगे यह जैसा बेटा मेरा है वैसा ही आपका है यह रा स की लड़ाई म वहां हाथ दिखाएगा जिससे छठ का दूध याद आ जाएगा

सुग्रीव बाली से रोककर भैया म बोड़ा उत्पाद किया जो 4 दिन की जिंदगी के लिए भाई का घात किया

भाई म इस राज को लेकर यासुख पाऊंगा और परमेश्वर को यामुंह दिखाऊंगा भैया यह काम आप अंगद के सुपुर्द कर दीजिए और मुझे साथ चलने की आ ादीजिए

बाली सुग्रीव से भैया जरा तबीयत को संभालिए ऐसे कायरपन की बातें मुंह से न निकालिए यदि ऐसे कायरपन दिखाएंगे तो राम जी का वायदा कैसे निभाएंगे याभाई मेरी घड़ी बहुत नजदीक आ रही है और सिरहाने खड़ी मौत मुझे बुला रही है इसलिए मेरे अंतिम संस्कार की तैयारी करो हिचकी लेकर हे प्रभु मुझ पापी का क याणकरो

अंगद बाली से रोक कर हाय पिताजी आप किसके सहारे छोड़ गए और हम से य मुंह मोड़ गए

तारा BAली से हे प्राणनाथ मुझे भी साथ ले चलो

तारा का रोना

राम तारा से हे देवी अब स करो अब तु हारफिजूल रोना है अब तो बाली को जिंदा नहीं होना है जैसा बाली ने किया वैसा ही भोग लिया है

तारा और बाली का श्यसमा त

सुग्रीव को राज तिलक

पंपापुर

राम से भाई अब किष्किंधा नगरी का राज्य राजा के बिना सूना पड़ा है
इसलिए तुम जाकर सुग्रीव को किष्किंधा का ताज पहनाओ

हनुमान राम से जी महाराज राज्याभिषेक का कार्य आपके हाथ से होना चाहिए वानर जाति की यही इच्छा है

राम हनुमान से हनुमान जी मै पिता की आज्ञा और अपनी प्रतिज्ञा के कारण 14 से पहले नगरी में प्रवेश नहीं कर सकता इसलिए तुम जी को भी साथ ले जाओ और सारा कार्य विधि पूर्वक करवाओ

सुग्रीव राम से भगवन पहले जानकी जी का पता लगाना चाहिए यह काम तो बाद में भी होते रहेंगे

राम सुग्रीव से नहीं सुग्रीव जी ऐसे शुभ कार्य में विलंब नहीं करना चाहिए इसके अलावा अब वर्षा ऋतु शुरू होने वाली है इस ऋतु में जानकी जी की खोज करना भी मुश्किल है

हनुमान राम से है दयालु भगवान आपकी उदारता है
दोहा
दे दिया प्रेमी को सब कुछ पास रखा कुछ नहीं
भक्त की चिंता है केवल अपनी चिंता कुछ नहीं

राम से भैया तुम जल्दी जाओ
और अधिक देर न लगाओ क्योंकि किष्किंधा का सिंहासन बहुत खाली पड़ा है

राम से जैसी आज्ञा हो पिताजी

का पद के अंदर चला जाना

सुग्रीव को राज देना

अंगद सुग्रीव हनुमान बोलो सुग्रीव महाराज की जय हो

पेज नंबर 118 रामायण 113

राम से राधेश्याम हे वर्षा ऋतु बीत गई अब शुद्ध शरद ऋतु आई है

म बड़ा अभागा हूं अब तक न सुधि सीता की पाई है
कपि पति का मुझे भरोसा था वह भी तो मुझसे दूर हुआ
माया की महा तरंग में वचन का बेड़ा चूर हुआ

भाई है सच्ची बात यही पदवी सब कुछ कर सकती है

सुग्रीव नहीं दोस्ती उसने यह सब दौलत की खूबी है

जब तक मनु यकंगाल रहे तब तक उत्पात नहीं करता है

जब वही धनी हो जाता है मुंह से बात नहीं करता है

राम से राधेश्याम

भैया तुम आराम करो म पंपापुर में जाता हूं
धन मदवाले मतवाले को अभी बांध कर लाता हूं

भरपुर उसे शि ादूंगा जो झूठा बनकर बैठा है
सब गरब मिटाऊंगा उसका जो राजा बनकर बैठा है

अि नबाणघढ़ाकर हो प्रभु परंतु आ ाहो तो पहले उस कपटी मित्र को ठिकाने लगाऊं
जिसने आज तक मुंह तक नहीं दिखाया
वचन देकर भी जानकी जी का पता नहीं लगाया

म पंपापुर को एक बाण से समु में फेंक डालूंगा

राम से भैया ऐसा कदापि नहीं होना चाहिए जिसे एक बार मित्र बना लिया उसे कभी नहीं खोना चाहिए

राम से गुस्से से परंतु भगवान नीच लोग गम से नहीं माना करते लात के भूत बात से नहीं माना करते

राम से अच्छा तो भैया तुम चले जाओ आदर सहित सुग्रीव को ले आओ

राम से जैसी आ ाहो ाताजी

का चले जाना

सुग्रीव अंगद नल नील तारा हनुमान की वार्ता

हनुमान सुग्रीव से महाराज वर्षा ऋतु बीत गई किंतु जो आपने वादा किया था वह भी याद है

सुग्रीव हनुमान से भूल गया बड़ा अपराध हुआ इस विषय भोग ने मेरा सारा ानहर लिया

हनुमान सुग्रीव से हो गया जी महा ाधमें कि कंधाप्रधार रहे ह

सुग्रीव मन में औ देव अब याहोगा आज मेरी र ाकिस तरह होगी

हनुमान सुग्रीव से महाराज अब समय न करें उ हेंशांत करने का उपाय किया जाए

पेज नंबर 119 रामायण 114

सुग्रीव हनुमान से अच्छा याहेनुमान तुमसे घर चले जाओ और विनय याचना के साथ उ हेंयहां बुला लाओ

हनुमान सुग्रीव से जैसी आ ाहो महाराज

पर्दा गिरना हनुमान का जाना

हनुमान से प्रणाम महाराज

हनुमान से खुश रहो यारेहनुमान

हनुमान से महाराज चलकर दरबार सुशोभित कीजिए

हनुमान से सुग्रीव जी के दरबार में पधारने के लिए तो यहां आया हूं चलो

पर्दा खोल ना

सुग्रीव अंगत जामवंत बैठे ह सुग्रीव के पास का पहुंचना

सुग्रीव के पांव गिर कर माकीजिए महाराज मुझसे अपराध हुआ

सुग्रीव से ाधमें हे शु यातुमने मित्र बनकर हमें धोखा दिया है जानते हो विश्वासघात का याफल होता है

सुग्रीव से राधेश्याम

माया के में पड़कर मेरी दुर्दशा हो गई
म हुआ हूं पागल सा गति मति संपूर्ण खो गई

नारी पर जो मोहित ना हुआ दुर्लभ है ऐसा नर जग में
बच गया लोभ फांसी से जो है वही तस्वीर जग में

सुग्रीव से अच्छा तो चलो तुम हे भगवान बुलाते ह

सुग्रीव से चलिए जी

राम का आश्रम

सुग्रीव राम से राधेश्याम

रघुवीर बाण भी रखा है अपराधी भी चरण में है
चाहे मारवाड़ी आसमां करो निर्णय प्रभु के हाथ में है

राम सुग्रीव से राधेश्याम अब मत रोओ अब मत रुलाओ मेरे तो परम सखा हो तुम
मुझ रोगी की औषध हो तुम मुझ विरह की आशा हो तुम

जिस का सच्चा यारहूं वह उसे प्राण सा होता है

चाहे वष में हो अनुराग कम नहीं होता है

पिछली बात को जाने दो आगे का यान्धरो भाई

पेज नंबर 120 रामायण 115

सीता जी जिस से पता लगे वह काम करो भाई

हनुमान सुग्रीव से महाराज बहुत से वानर रीछ तशरीफ ला रहे ह

राम हनुमान से कूंच करने से पहले इत्मीनान कर लिया जाए तो अच्छा है

सुग्रीव हनुमान से हे यारेहनुमान दूसरी दिशाओं में तो और दूध भेज दीजिए
मगर लंका के लिए खास तु हेंतैनात करता हूं अंगद तथा जामवंत को
तु हारेसाथ करता हूं य िकुम होशियार हो और लंका के गली कूच से वाकिफ हो

राम सुग्रीव से हे शुि याआपने मेरे मुंह की बात छ ब्ली है
बेशक हनुमान जी इस कदर तकलीफ करें तो हमारी कामयाबी यकीनन ही है

हनुमान राम से हाथ जोड़कर भगवन जिसे आप तकलीफ कह रहे ह
वह मेरे लिए ब कुआसान काम है
फिर भी हे भगवन माता सीता मुझे कैसे पहचानेंगी और मेरी बात का कैसे यकीन मानेंगी
इसलिए आप इतनी मेहरबानी कीजिए और मुझे कोई अपनी खास निशानी दीजिए जिस कि उ हेंपहचान हो

ताकि मेरी तरफ से उ   हेंपूरा इत्मीनान हो

राम हनुमान से गाना बहरे तबील

हे पवनसुत दिलावर हनुमान जी
आप इमदाद इतनी हमारी करें
लीजिए यह अंगूठ निशानी मेरी
आप ज   दीघलने की तैयारी करें

लीजिए साथ सामान अपना सभी
और क   जेमें खंजर कटारी करें
सीधे लंका में जाना जरूरी नहीं
बस यही से तलाश आप जारी करें

जानकी जी को कहना मेरी ओर से
की हरगिज़ न वह आहो कार करें
अब मुसीबत का होने को है खात्मा
चार दिन तक जरा इंतजार करें

हनुमान राम से बहरे तबील साथ मेरे है आशीर्वाद आपका

पेज नंबर 121 रामायण 116

तो म लंका को जड़ से हिला कर हटूं
झुलस दूं फूंक दूं आन की आन में
खाक मिट्टी में उसकी मिलाकर हटु

जो हु   म्हो तो रावण के कुनबे सहित
म लगा आग जिंदा जलाकर हटु
जो कहो तो पकड़ कर लाऊं जिंदा यहां
या उसकी वहीं पर खुला कर हटुं

छान मारूंगा आकाश पाताल तक
सारी तदबीर अपनी चलाकर हटुं
जान में जान है जब तक यशवंत सिंह

म पता जानकी जी का लगा कर हटु

राम हनुमान से राधेश्याम सब प्रकार उसकी कुशल पूछ फिर मेरी दुआ झुका देना
निज दल बल का परिचय देकर धीरज भी उसे बंधा दे ना

उसकी म प्मुंदरी है यह बजरंग उसे देते आना
मेरे लिए भी निशानी लौटते समय लेते आना

हनुमान राम से पांव में गिरकर भगवन आप कुछ फि न करें मुझे आप आशीर्वाद देकर कृतार्थ करें

अंगद जामवंत हनुमान तीन का बारी-बारी प्रणाम करना

राम सभी से गाना

जाओ वीरो रणधीरो सीता जी की खोजन को
कोई पूरब कोई पश्चिम कोई कोई द प्को
काम राम का नाम ग्राम का नाम जाति का राखन को

जाओ वीरो रणधीरो सीता जी की खोजन को

इधर-उधर को जिधर जिधर को पहाड़ी बस्ती कानन को
तन मन धन से प्राण वचन से प्रभु की आ ापालन को
जाओ वीरो रणधीरो सीता जी की खोजन को

श्यसमा त

राम सुग्रीव पद मे

सागर तट

अंगद जामवंत से आहा वन नंदी और गुफाओं में बहुत जगह ढूंढा परंतु कहीं भी माता सीता का पता नहीं लगा अब कौन मुंह लेकर लौट कर जाए इससे तो अच्छा है हम अपने प्राण यहीं पर त्याग दें

पेज नंबर 122 रामायण 117

जामवंत अंगद से ठ के सुग्रीव ने जो समय दिया था वह समा त होने को आया है परंतु जानकी जी का कहीं पता नहीं लग पाया है

पर्दा खुलना संपाती का बोलना

संपाती सभी से राधेश्याम वष से भूखा यासहूं भर पेट न भोजन खाया है
विधना ने आज अनुग्रह कर सब एक साथ भिजवाया है
दो चार नीमिश में ही आकर दस बीस ग्रास कर जाता हूं
भागो मत बैठे रहो वही तुम सबको म आकर खाता हूं

जामवंत हनुमान से यारे हनुमान जी सुनो ऋषि जी की विनता
नामक स्त्री के दो पुत्र हुए थे
एक अरुण दूसरा गरुड़
फिर अरुण के दो पुत्र हुए थे एक संपाती दूसरा जटायु

एक दिन वह दोन भाई सूर्य को पकड़ने के लिए उसकी ओर उड़े बड़ी देर तक उड़ने पर
सूर्य की गम से घबराकर जटायु तो लौट आया
किंतु संपत्ति उड़ता ही गया. अंत में संपाती के पंख जल गए
और संपाती मूर्छित होकर महें गिरी पर आ गिरा
उस पर चं ऋषि तप करते थे
संपाती ने उनकी सेवा की फिर चं ऋषि ने उ हें वरदान दिया
कि जानकी जी की खोज करते हुए जब वानर इधर पहुंचेंगे
तो तेरे पंख निकल आएंगे उसी समय से यह पंख बन पड़ा है
और अपना जीवन बत रहा है

हनुमान मन से   है जटायु महाराज तुम   हो तुम ने रामचं जी की सेवा में अपने प्राण लगा दिए

संपाती हनुमान से हे वानर   यहकहा जटायु ने प्राण गवा दिए सारा हाल सुनाओ

हनुमान संपत्ति से राधेश्याम
कौशल की रानी सीता का जब दंडक वन में हरण हुआ
तब उ   हींदिन उपकार हेतु वह गिद्धराज हरि शरण हुआ

जिस ने सीता का हरण किया उसने ही उसे मारा है
दंडक वन का वही डाकू हे भाई शत्रु तु   हारहै

हम सब तलाश में ह उसकी तुम भी उसे तलाश करो

भाई का बदला लेना हो तो उस बैरी का नाश करो

संपाती वानर से राधेश्याम

करता है रा   यवहां रावण वही सीता का हरता है

अपने अशोक बाग में उसने उस महा श त को रखा है

पेज नंबर 123 रामायण 118

सौ योजन सिंधु लांग कर जो बलवीर वहां पर जाएगा

वह ही सीता सुधि लाएगा वही यह यश कमाएगा

अंगद हनुमान से

युवराज कहाकर मौन रहूं तो मुझ पर लांछन आता है

जिस कारण सिंधु लांगने को यह अंगद बालक जाता है
उस पार पहुंच ही जाऊंगा यह तो मेरा   ढ़निश्चय है
लेकिन इस पर लौटने में थोड़ा सा मुझ को संशय है

लांघूंगा सिंधु इधर से तो जगदंबा स   मुखआएगी
वे अपना बल देकर मुझे लंका नगरी पहुंचाएंगे

पर सुधि लेकर जब लौटूंगा तो पीठ उधर हो जाएगी
मेरी वह महा शि   तपूजा उस समय न कुछ कर पाएगी

जामवंत अंगद से राधेश्याम हम तुम सब लोग अधूरे ह पूरा वह राम दुलारा है

बाजी उसके ही हाथ दो वही म   लाहमारा है

अंगद हनुमान से राधेश्याम हे पवनपुत्र अंजनी लाल अपनी तं   ाको त्यागो तुम
संपूर्ण शि   तके साथ साथ हे राम दुलारे जागो तुम

हे कामरूप हे शंकर रूप बजरंगी नाम तु   हारहै
अपने जीवन को याद करो यह जंगी काम तु   हारहै

सूरज को तुमने ग्रास किया शैल को तुमने तोड़ा है
जिस बल से ऐसे काम किए वह बल कहा-अब छोड़ा है
रणधीर उठो बलबीर उठो अब लाज तु   हारेहाथ है
हे कृपा धाम के कृपा पात्र यह काज तु   हारेहाथ है

हनुमान अंगद से   ाधमें औ अंगद   याकहते हो जा कर बादल पर गरजू म
पहले लंकेश्वर को मारुं या लंका उ   टकर दूं म

खारे जल की धारा को लांघूं या अभी लील हो जाऊं
जिस जगह लंकापुरी है वह गिरि कुट ही ले आऊं

पेज नंबर 124 रामायण 119

सौगंध पूर्वक कहता हूं..
जो कहता हूं दिखलाऊंगा
अपनी माता सीता को
अब राघव से अभी मिलवाऊंगा

अंगद हनुमान जी राधेश्याम तुम केवल लंका में जाकर
माता का पता लगा आओ
समझो तो कुछ बोल रावण को भी दिखला आओ
हम यही मिलेंगे वीर तु हेअतिशी कार्य यह कर आओ
शुभाशीष साथ तु हारेह हे बजरंग बली जाओ जाओ

हनुमान जामवंत से राधेश्याम म जब तक लोट नहीं आऊं तब तलक यही ठहरे रहना
श्री राम नाम का कीर्तन कर आशीष मुझे देते रहना

बोलो श्री रामचं की जय

लंका का श्य

लंकिनी पहरे पर

लंकिनी हनुमान से अरे ओ निडर वानर ऐसा निर्भय. होकर कहां जाता है

यातुझे ातनहीं तेरे सामने काल बैठा है

दोहा :-जाता है किस ठौर बता यामौत तेरी यहां लाई है
खौफ नहीं तुझको मेरा याजी म तेरे समाई है

नाम लंकिनी है मे यहा लंका का पहरा देती हूं

जो लंका में वानर आता है भेट में उसकी लेती हू

आकर तूने संकट में य अपनी जान फसाई है

पाव बढ़ाया आगे को य मरता बआई है

हनुमान लंकिनी से राधेश्याम याबोली दु ट

चंडालिनी सामत तेरी आई है

हनुमान को नहीं जानती इतनी राड़ बढाई है

राह खड़ी जो रोक रही यामरना ही चाहती है

देख गदा हमारी य इतनी इतराई है

लंकिनी हनुमान से गरज कर अरे मूर्ख ठहर म अभी

आती हूं और दांतो से चबाकर तेरा चूर्ण बनाती हूं

लंकिनी का मुंह फाड़ कर हनुमान की ओर आना

हनुमान का गुसा मारना लंकिनी का गिरना

पेज नंबर 125 रामायण 120

लंकिनी हनुमान से महाराज तुम भगवान राम जी

के दूत तो नहीं

हनुमान लंकिनी से हां हां म ही उनका दूत हूं अब रास्ता छोड़ कर प्राण बचाती है या परलोक जाना चाहती है

लंकिनी हनुमान से हाथ जोड़कर बस बस महाराज अब दूसरा घुसा मत मारना नहीं तो मेरे प्राण पखेरु उड़ जाएंगे
हां मुझे   म्ह्मी का वरदान याद आया जो उ   ह   ने रावण को वरदान देकर लौटते समय मुझे कहा था

जब तू एक वानर के घुसे की मार खाकर ढेर हो जाएगी तभी से रा   स की आखरी घड़ी आएगी

हनुमान लंकनी से अच्छा यही बात है तो मार्ग से हट जा रास्ते में रोड़ा न अटका
लंकिनी हनुमान से राधेश्याम हे महावीर है महावीर रघुवर का तुझ पर हाथ रहे

जा बेखट के अब लंका में जय और विजय साथ रहे

लंकिनी का   श्यसमा   त

पर्दा गिरना

हनुमान पद से बाहर

हनुमान अपने मन में सभी बाग-बगीचे छान मारे
परंतु जानकी जी का पता नहीं मिला

हे विधाता यह किस महात्मा का मकान है कौन ऐसा
है जो आधी रात के समय
भगवान का नाम ले रहा है बस तो अब इसी और
जाता हूं शायद यही से जानकी जी का कोई सुराग
मिले

विभीषण का भवन

हनुमान विभीषण से राधेश्याम हे विप्र आपको देख
यह दयआप ही खींचाआता है
है निश्चय यहा कोई यह मुझे दिखाई पड़ता है
विभीषण हनुमान से राधेश्याम भागी करने आए
हो यामुझ मूढ़ निशाचर को

हे महाराज श्री चरण से करिए पवित्र मेरे घर को

हनुमान विभीषण से राधेश्याम अचरज है काग के
दल में यह हंस रूप कैसा

कांटो से घीरे करील में फूल गुलाब का चंदन कैसा

पेज नंबर 126 रामायण 121

असुर में कैसे   राज तुम जीवन यापन करते हो

रावण की सेवा में रहकर श्री राम भजन तुम करते हो
विभीषण हनुमान से राधेश्याम जैसे जुबान रहती है
32 नुकीले दांतो में रहता है दास विभीषण भी उसी
प्रकार रा   स में

    यारे   आप कौन ह और किस तरह लंका में
तशरीफ लाए ह सारा हाल सुनाओ

हनुमान विभीषण से राधे श्याम   यारेविभीषण म
किसकिंधा का हनुमान हूं वानर हूं
माता सीता की सुधि लेने आया हूं श्री रामचं   का
सेवक हूं

विभीषण हनुमान से   यामुझ अनाथ निशाचर के
भी रघु वर बनेंगे नाथ कभी

यामुझसे दास को भी रखेंगे राघव साथ कभी

सीता की सुधि पीछे लेना पहले मेरी सुधी ले लो भाई
जिन चरण में रह रहे आप मुझको भी पहुंचा दो भाई

हनुमान विभीषण से राधे श्याम याभगवन
दयानिधि है अपने को नित अपनाते ह
जो जन उनकी शरणागत हो छाती से उसे लगाते ह

उनसे मिलने की राह यही विश्वासी हो जाओ भैया
अपना सब कर उनके ही हो जाओ भैया
हो सकता है वह दिन आए जब भा यइस तरह चमका है
सिर पर राम विभीषण के चरण में सारी लंका है

विभीषण हनुमान से राधेश्याम अच्छा अब जिस कारण आए हो उस सेवा में जाओ भाई

है माता अशोक वाटिका में सुधि उनकी ले आओ भाई

वे माता है तुम ाताहो दोन का तुच्छ दास हूं म

निर्भय होकर विचरो लंकापुर में छाया की तरह पास हूं म

प्रणाम   ताजी

हनुमान का चले जाना

पर्दा गिरना विभीषण का   श्यसमा   त

अशोक वाटिका

पहरेदार हनुमान से ललकार कर खबरदार इस तरह मुंह उठाए कहां जाता है   यातुझे अपनी जान   यारी नहीं

हनुमान पहरेदार से भाई जिस काम के लिए आया हूं उसके सामने जान कोई चीज नहीं

पेज नंबर 127 रामायण 122

पहरेदार हनुमान से अरे मूर्ख तू ख   बीखान्का मरीज तो नहीं

हनुमान पहरेदार से अरे भले मानस तु   हेंतो बोलने की भी तमीज नहीं

पहरेदार हनुमान से मालूम होता है आज तू मौत का भाव पूछने आया है

हनुमान पहरेदार से भाई म पहले ही कह चुका हूं जिस काम का बीड़ा उठाया है जीवन एकदम बुलाया है

पहरेदार हनुमान से आ खइमें भी तो बताओ वह कौन सा काम है

हनुमान पहरेदार से मुझे सीता जी से मिलना है यही मेरे आने का परिणाम है

हनुमान पहरेदार से भला तु हारीमौत किस तरह से आएगी

पहरेदार हनुमान से बगड़कर अरे मूर्ख अगर तू ने सीता जी से बात कर ली तो मेरी मौत में या है

हनुमान बेपरवाही से बाग में जाते हुए

पहरेदार हनुमान से मु कामार कर इस तरह मुंह उठाए कहां जाता है जैसे बाबाजी का भाग है

हनुमान पहरेदार से मु कामार कर यहीं पढ़ा रहे ह

तेरा आखरी यही इलाज है

लड़ाई तीन पहरेदार का मरना

हनुमान मन में अब रा भी बहुत यथित हो चुकी

है दिन निकलने में अभी कुछ ही बाकी है

अशोक वाटिका का कोना कोना छान मारा परंतु

माता सीता का कहीं भी पता नहीं चला

अब उधर की ओर देखता हूं

हनुमान का एक तरफ हो जाना

रावण की सवारी

रावण सीता से यारी सीता मुझे आशा है कि आपने

ऊंच नीच य सोच कर कोई नेक नतीजा निकाला

होगा

सीता रावण से दुख में ओम अधम तेरा न जाने यहां

से कब मुंह काला होगा

रावण सीता से यारी मेरी दशा पर के वास्ते

कुछ तो रहम कर

सीता रावण से ओम जालिम कुछ तो का भय कर

रावण सीता से अरे आ खकब तक अपनी हट निभाएगी

सीता रावण से जब तक यह आत्मा शरीर से निकल न जाएगी

रावण सीता से यारीज्ञानकी तेरा वहम है उनके फ़रिश्ते भी यहां कदम नहीं कर सकते

सीता रावण से अगर यहां कदम नहीं धर सकते तो का रास्ता आप बंद नहीं कर सकते

रावण सीता से ोधमें आ खमुझे कठोरता से ही काम लेना पड़ेगा

पेज नंबर 127 रामायण 123

सीता रावण से तेरी तो ताकत ही याहै भी मेरे इस ख़याल को नहीं बदल सकता

रावण सीता से प्रेम से सीता तू फूल है मगर तुझे बू नहीं

सीता रावण से तो वि वान्है मगर तुझ में
इंसानियत की खूं नहीं

रावण सीता से ोध में बस बस ओ बदलगाम जरा
अपनी जबान को थाम

सीता रावण से में म ेअपनी जुबान को बहुत
संभाला

और आज तक अपने मुंह से कोई ऐसा नहीं
निकाला

जो कुछ तूने कहा म ंबड़े दिल से सहा

आ खसहन करने की भी कोई सीमा होती है

तेरे जैसे हरामी के साथ

सख्ती से कलामी का बर्ताव नहीं किया जाएगा

तब तक तू किसी भलाई की आशा न रखना

रावण सीता से

दोहा सीता अब भी मान ले हट तेरी फिजूल

अब तू मेरी कैद से छूट कर जाए ना मूल

सीता रावण से

दोहा... रावण य बक बक करै रख जुबान को बंद

कामी कपटी कायरे बुजदिल हो फज द

नाटक

रावण सीता से   यासे सीता तू इतनी सौदाई बन

सीता रावण से तु राजा हो कर अ   यायीन बन

रावण सीता से मेरे   याक्की सारे संसार में धाक है

सीता रावण से यूं ही जुबान का बाजार   है   याय

याखाक है

रावण सीता से मन ही मन में आज म हैरान हूं कि

मेरा खंजर   य बेकार हो रहा है

जबकि मेरी शान में ऐसे श   दका   यवहारहो रहा है

एक साधारण औरत और इसकी इतनी हिमाकत

एक म और मेरी ताकत

परंतु अब यह अजीब तरह की सीता है

जिस पर मेरा जादू नहीं चलता है

नर्मदा को जानती है और ना कठोरता से मांनती है

जैसा म मुंह से बोलता हूं उसका घड़ा घड़ाया

मिलता है

बेशक किसी ने भी मुझे बहुत अजमाया

मगर मुझे भी रावण कौन कहेगा

जो इसे सीधा ना बनाया

सीता की ओर बोलना

ओ अभागी स्त्री ।तहोता है तेरे सिर पर मौत मंडरा रही है

सीता रावण से

दोहा नहीं मालूम तेरी कब तककार होवेगी

तू आज सुन ले या फिर सुन ले मेरी इंकार होवेगी

रावण सीता से तेरे जैसे सर्कस को खूब अजमाया है

मेरे कम में तो एक दिन आ खरकाहोवेगी

सीता रावण से उधर जो राज हट है इदर भी हट त्रया का

भला म देखूं दोन में किसकी त ।रहोवेगी

रावण सीता से तू जिद कर ले या हट कर ले मगर एक दिन जरूर होवेगी

भुजा रावण कि तेरे इस गले का हार होवेगी

सीता रावण से दो ही चीजें लग सकती है सीता की से

भुजा रघुवर की होगी या फिर तेरी तलवार होवेगी

रावण सीता से यह निश्चित है ब कुलु नरमी से नहीं मानेगी
मेरे खंजर से सीधी अरी मकार होवेगी

सीता रावण से राधेश्याम ओ कायर पामर
रजनीचर य अबला पर इतराता है
पिंजरे में फंसी सिंहनी को नंगी तलवार दिखाता है
लंकेश नहीं कायर है तू लंका में मुझे छुपाया है
जल जा डूब जा जलनिधि में य खड़ग दिखाने आया है
रावण सीता से यासे ओ यारी सीता म तेरे यार का दीवाना हूं
और तेरे रूप का मस्ताना हूं जो बात करता हूं
तेरी भलाई के लिए करता हूं
अभी कहा मान ले नहीं तो एक दिन पछताएगी

सीता रावण से ाधमें अरे निर्ल जयदि कोई ल जा वाला होता तो
इतनी लानत सुन कर डूब मरता और किसी को मुंह दिखाने के लायक नही रहता
मालूम नहीं ने तु हैं किस मिट्टी का बनाया है
और हया को तो तूने बेच खाया है

रावण सीता से ोधमें ओ तलवार की अभिलाषी

जरा अपनी जुबान को संभाल

म तेरा अभी काम तमाम करता हूं और सदा के लिए

करता हूं

पालनी त्रजटातलवार पकड़ कर महाराज जरा

शांति से काम लीजिए

इस्त्री पर हाथ उठाना शूरवीर के खलाफहै

बि क्उसे माकर देना ही इंसाफ है

इस निर्भाग के कम में रोना ही लिखा है

रोती रहेगीऔर इसी तरह अपनी जवानी खोती

रहेगी

रावण तलवार मयान में करके विचार तो यही था

जब तक इस के से हवा नहीं निकालता

तब तक तलवार मयान में ना डालता

किंतु तु हारेकहने से अपने इरादे को बदल रहा हूं

और एक महीने का अवकाश और देता हूं

या तो फिर कहा मान लेगी नहीं तो यही खड़ग इसके

प्राण लेगी

रावण का श्यसमा त

सीता का श्यचालू

सीता अपने मन में रस्सी का फंदा डालकर

सीता परमात्मा से परमात्मा इन दिन से तंग आकर
खुशी से मरना चाहती हूं
परंतु एक प्रार्थना जरूर करती हूं
कि अगले में भी श्री रामचं जी मेरे पति हो
या ऐसा कोई कार्य किया हो जिससे मेरी गती हो
V
हनुमान सीता से वृ से आवाज देवी का नाम
ले और धैर्य से काम ले
सीता आवाज से हैरानी यह आवाज किधर से आ रही
है
इस पाप भूमि पर कौन पवित्र आत्मा है
भाई जरा सामने आओ और मुझे अपनी सूरत तो
दिखा

हनुमान सीता से माता जी यह याकह रही ह
जो इतनी समझदार होकर बुरी मौत मर रही है
आत्मघात करना तो महापाप है

सीता हनुमान जी भाई तु   हारा   या नाम है मेरी तो तुमसे न जान है न पहचान है

हनुमान सीता से माता जी म भगवान रामचं   जी का सेवक हूं

मेरा नाम हनुमान है निसंदेह आपका कहना ठ   क है

आप की हाजिरी में मेरी उस समयं तक कोई रसाई न थी

किंतु आप की खोज करते हुए भगवान ऋषि मुख   पर आए

हमारे राजा सुग्रीव ने आपस में मित्रता की

उसी दिन से यह सेवक आपकी सेवा में आया है

सीता हनुमान से पता नहीं   या लिखा है लाल अ   र में

पीछे हट कर दूर दूर हो कायर आत्मा

म   खुद तुझ को जान लिया है

और भली प्रकार से जान लिया है अरे ओ दु   ट वही

समय था जो   गलती खा गई

और तेरे धोखे में आ गई

अब तो म तेरी मिट्टी सूंघ कर बता दूंगी

कि यह दु   रावण की क   है

हनुमान सीता से माता जी आपको सच बदगुमानी

ह

मगर आप के विश्वास के लिए मेरे पास

श्री रामचं जी की खास निशानी है

अंगूठ दिखा कर लीजिए माता जी इसकी पहचान

कीजिए और भली प्रकार इत्मिनान कीजिए

सीता हनुमान से अंगूठ देख कर चुम कर रो कर

हाय हाय मेरे प्राण याक्की अंगूठ मेरे भा यके

साथ साथ तू भी रूठ

तुझको मेरी इस अवस्था पर दया न आई

और इतने दिन बाद सकल दिखाई

हे प्रियतम की अंगूठ तू ही मेरी जिंदगानी है

हनुमान सीता से हे माता जी अब इन बात को जाने

दीजिए और मेरी तरफ यान्दीजिए

सीता हनुमान से याहेनुमान जी मुझे माकरना

म तो अंगूठ को देखकर इतनाभी भुल गई थी

कि आप को भी भूल गई

है याहेनुमान इस खुशी में जो गलत निकल

गए हो तो माफी चाहती हूं

हनुमान सीता से माताजी अब मुझे अधिक लि जत न कीजिए

म तो आपका खदमतगाहूं और आपके लिए प्राण देने को तैयार हूं

माताजी अभि यि के दिन हो गए ह

पिछली दशा को मन से भुला दीजिए

पेज नंबर 131 रामायण 126

और इस प्रकार रुदन करके दिल को ना जलाओ

अब मेरा सिर्फ लौटने का इंतजार है

और वानर वीपका एक एक बच्चा जान हथेली पर रखे तैयार है

हे माता जी आप मुझे भगवान राम जी का विश्वास जीतने के लिए कोई खास निशानी दीजिए

सीता हनुमान से म हैरान हूं इस तुझे या निशानी दूं

और तो सारे आभूषण राह में फेंक आई थी

बतौर यह चूड़ाम ण्खास निशानी साथ में लाई थी

जो तुम ले जा सकते हो और स्वामी जी को दिखा सकते हो

हनुमान सीता से राधेश्याम हे माता अब है विनय एक

य यफ्किुछ दयहिचकता है

फिर भी मुख खोल कहे मां से बालक का चित मचलता है

आया समु लांघकर में

इस कारण भूख सताती है

यह पेड़ फल से लदे हुए देख

भूख भी कितनी बढ़ती जाती है

सीता हनुमान से सिर पर हाथ फेर कर हनुमान मेरी ओर से तु हेंपूरा अधिकार है

किंतु ख्याल रखना कि यहां का एक एक रा स खूंखार है

हनुमान सीता से माताजी मुझे परवाह नहीं जब आपका आशीर्वाद मेरे साथ है

पर्दा गिरना

पहरेदार पहरे पर खड़े ह अशोक वाटिका का

उजड़ना

बागवान हनुमान से ललकार कर अरे तू कौन है जो बाग को उजाड़त है

हनुमान बागवान से य मेंढक की भांति टर्रटर्रा रहा है
और अकारण ही सिर पर चढ़ा आ रहा है

बागवान हनुमान से ये लो भाइय एक तो फल तोड़ खावत है दूसरा हमको ही धमका वत है

हनुमान बागवान से अच्छा है तुम यहां से चले जाओ
अपने प्राण न गवाओ

बागवान हनुमान से अरे हमको मौत का भय दिखाता है भला तलब कौन बात की पावत है

हनुमान का हाथ पकड़ कर

हम देखते है कौन भाग कर कहां जाता है

हनुमान बागवान से घुसा मार कर भाग कर नहीं जाऊंगा ब्कि क्तुम सबको यमलोक पहुंचाऊंगा

रावण की रा   यसभा

रावण मंत्री से महामंत्री सतानी गाने वाली को बुलाओ

महामंत्री रावण से जैसी आ   ाहो पृ   वीराज

रावण गाना सुनकर हा हा हा हा दुनिया में अगर जादू है तो गाना है गाने वाली अगर सुरीली है तो आनंद का   याठिकाना है हा हा हा हा

पेज नंबर 132 रामायण 127

बागवान रावण से आ कर दुहाई महाराज की सारी अशोक वाटिका उजड़ गई हमारी भी दुर्गति भई काहे को सिर फूटो काहे को मुंह फूट गयो

रावण बागवान से किस दु   की मृत्यु आई है जो यहां आकर आफत मचाई है

रावण   कुमार से बेटा   कुमार तुम अभी जाओ और उसे गिर   तारकर के दरबार में हाजिर करो

कुमार रावण से जैसी आ   ाहो पिता श्री

कुमार का जाना पर्दा गिरना

कुमार और हनुमान का युद्ध

कुमार हनुमान से ललकार कर खबरदार हो बनरे अब जाने नहीं पाएगा

हनुमान कुमार से मुझे भी तु हारइंतजार था अब जरा दो हाथ दिखाने का मजा भी आएगा

कुमार हनुमान से या तो सीधी तरह मेरे साथ चल ..अ यथासमझ ले मेरा नाम कुमार है

हनुमान कुमार से यदि तू भी मुझे गिर तार ना करें तो तेरे जीने पर धि कारहै

हनुमान कुमार से तलवार छ नकसारना यदि तेरे जैसे छोकरे मुझे गिर तारकर लेंगे तो मुझे हनुमान कौन कहेगा

रावण का दरबार

सभी बैठे हुए है

दूत रावण से महाराज की जय हो कुमार वानर के हाथ मारा गया

रावण दूत से याकहा कुमार मारा गया

दूत रावण से जी हां महाराज

रावण मेघनाथ से बेटा मेघनाथ तुम ज दीजाओ और जिस तरह हो सके उस वानर को दरबार में हाजिर करो

मेघनाथ रावण से जैसी आ ाहो पिताजी

पर्दा

मेघनाथ हनुमान से अरे बनरे यातु यहां से जीवित जाने की आशा रखता है

हनुमान मेघनाथ से अगर म जाना चाहूं तो मुझे कौन रोक सकता है

मेघनाथ हनुमान से जरा कदम तो उठा या मुंह की ओर याबकता है

हनुमान मेघनाथ से जरा आगे को आ वही छिनाला औरत की तरह वही खड़ा खड़ा मट कताहै

पेज नंबर 137 रामायण 128

दोन की लड़ाई मेघनाथ का ब्रह्मास फेंककर हनुमान को गिरफ्तार करना

हनुमान मेघनाथ से अरे बेईमान आखिर यही धोखा करना था

मेघनाथ हनुमान से अरे तेरे साथ हाथापाई करके क्या मरना था

हनुमान रावण से अच्छा चलिए अब तो लंकापति रावण के साथ ही बातें करेंगे अगर मौका मिला तो दो हाथ भी करेंगे

लंका दहन

रावण का जंगी दरबार

विभीषण मेघनाथ आदि का होना

रावण मंत्री से महामंत्री सताकी कुछ मालूम हुआ अशोक वाटिका को उजाड़ने वाला और ..

कुमार को मारने वाला कौन है

मंत्री रावण से जी हां मालूम हो गया वह पवन पुत्र हनुमान है

रावण मंत्री से महामंत्री यातु हैंधोखा तो नहीं हुआ है

मंत्री रावण से नहीं महाराज वह देखो वीर मेघनाथ उसे पकड़ कर ही ला रहे ह

मेघनाथ रावण से हनुमान को आगे करके

पिताजी कुमार को मारने वाला और बाग को उजाड़ने वाला हाजिर है जैसी आपकी इच्छा हो दंड दिया जाए

रावण मेघनाथ से दंड देने से अच्छा है पहले इसे अपराध का कारण पूछ लिया जाए

मंत्री हनुमान से ओ बनरे जरा बता कि तेरे मन में याहवा समाई है

जो कदाचित मृत्यु नजर नहीं आई है

हनुमान चुप

चुप रहने से आप के प्राण नहीं बचेंगे जरा मुंह खोल कुछ जुबान से बोल

हनुमान मंत्री से य किंदा इस अमीरी

सु तानीहै

इसलिए ऐरे गैरे से बात करने में मेरी हानि है

जब कोई पूछने वाला पूछेगा तो जवाब देंगे

और पाई-पाई का हिसाब देंगे

दोहा:- पड़ा हो शेर पिंजरे में मगर वह बू नहीं आती

दिलावर की कजा के सामने खूं नहीं जाती

रावण हनुमान से रस्सी जल गई मगर बल नहीं

जला

हनुमान रावण से

दोहा:- जले बल किस तरह मेरा मुझे किस बात का

गम है

वही तुम हो वही म हूं वहीं दम है वही खम है

रावण हनुमान से ोधमें अरे मूढ यह नीच कार्य

स्वीकार करने से तो अच्छा था कहीं डूबकर मर

जाता

और प्र हादके नाम पर तेरे जैसे कपूत के नाम पर

कलंक का टीका न लगता

हनुमान रावण से दोहा अभी तक भी है तेरा काम

पश्चाताप करने का

किया है काम तूने विलासक डूब मरने का

रावण हनुमान से राधेश्याम तू कौन कहां से आया है

कुछ अपनी बात बता बनरे

बाग उजाडा य मेरा याकारण था बतला बनरे

लंका के राजा का तुने यानाम कान से सुना नहीं

तू इतना ढीठ निरंकुश है यामेरे प्रताप से डरा नहीं

मारा है कुमार मेरा तो तेरा य न संघार करूं

तू ही यायबन कर कह दे तुझसे कैसा यवहारकरूं

हनुमान रावण से राधेश्याम दसमुख की किताब के

प ने से लेता हूं

पहला जो प्रश्न पूछा उसका ही देता हूं

अब दसरथ अजर बहारहैं

कहलाते रघुकुल भूषण है

री झपी जिन पर शूर्पणखा

हारे जिनसे खर दूषण है

फिर ओर एक यान्दे लो

जिनकी सीता को हर कर लाए हो

म उसी राम का सेवक हूं
जिसे तुमने बैर बढ़ाए हो

अब सुनिए लंका आया था
माता का पता लगाने को
इतने में भूख लगी ऐसी
हो गया विवश मन फल खाने को

सुधि तुमने न ली मेरी
निशाचर कुल है अभाव यह
फल खाकर पेड़ तोड़ता है
वानर का तो स्वभाव यह

कुमार का यह
है सब को तन मन यारहै
उसने मुझको मारा है
तो म भी उसको मारा है

रावण हनुमान से प्रश्न तो यह है
अशोक वाटिका में जाने के लिए
तुमको किसने कहा था

हनुमान रावण से कहा था श्रीराम ने
और सुग्रीव ने सीता जी की खबर लाने के लिए

रावण हनुमान से हे हे सीता जी की खबर लाने के लिए

हनुमान रावण से हां सीता जी की खबर लाने के लिए

रावण थे ए हनुमान से परंतु सुग्रीव का रामचं से यासंबंध है

पेज नंबर 135 रामायण 130

हनुमान रावण से जब वह सीता जी को खोजते हुए
ऋषि मुख पर आए
तो दोन ने आपस में मित्रता की जिस बाली ने
आपको छह माह काख में दाबा है
रामचं जी ने एक ही बाण से उसे नैपैद किया
अब आप ही उनके ताकत का अनुमान लगा सकते ह
अगर अब मेरा कहना मानो तो आपकी इसी में
भलाई है
अब तुम सीता जी को राम जी के चरणो में पहुंचा दे
और उनसे माफी मांग ले
वह माफ कर देंगे

रावण हनुमान से ोधमें अरे मूढ़ जरा जुबान को संभाल

और ऐसे अशुभ मुख से ना निकाल

औ मतिमंद यातू यहां से जीवित जाने की आशा रखता है

हां जिनकी महिमा तू भाट की तरह गा रहा है

और डेढ़ फुट चौड़ा मुंह फैला रहा है

अच्छ तरह से जानता हूं

हंस कर हा हा प्रथम तो बनवासी रामचं और

दूसरा साथ कौन मिला सुग्रीव बुद्धि का दुश्मन

कहीं की ठकहीं का रोड़ा

भानुमती ने कुनबा जोड़ा

सौ पचास आदमी इधर उधर से इक `किए

और रावण से मुकाबला करने के मंसूबे बांध लिए

अरे मतीमंद उन पर तो म लेंका का एक कुत्ता भी छोड़ दिया

तो उ हेंछुपने की जगह न मिल पाएगी

हनुमान रावण से सच है किसी मनु यकी बुरी घड़ी आती है

तो उसकी समझ ही उ टीहो जाती है

कौन समझाए और सोए हुए को सोया हुआ कैसे जगा सकता है

मगर याद रख आ खरोएगा पछताएगा

किंतु यह समय हाथ नहीं आएगा

म नहीं कहता तू किसी मनु यसे डर ...

किंतु उस परमेश्वर का तो भय कर नहीं तो ये तेरे

कुत्ते भ कतेह जाएंगे

और तेरी खोपड़ी को ये नोच-नोच कर खाएंगे

रावण हनुमान से राधेश्याम

है धाक धरणी से गगन तलक

रचना मुझ में ही है

आ ाहै सूर्य चं सब उदय मुझ में ही है

मेरे त्यागी के चढ़ते ही त्रैलोकी नाचने लगते ह

ग्रह काल सुरेश कुबेर मेरे घर पानी भरते ह

आती है बड़ी हंसी मुझको

यह उटपटांग बाते सुनकर

उस उधम तपस्वी बच्चे को किस भाँति बखाना चुन-चुनकर

ना समझे किस घमंड में है

स्वामी को अपने समझा ले

उस वानर वाले तपस्वी से

याडर जावे◌े लंका वाले

राधेशयाम

हनुमान रावण से तेरा यह फजूल खयाल है

मेरी ओर उंगली उठाने की किसकी मजाल है

शायद तू इसलिए बोल रहा है

कि मेघनाथ मुझ को पकड़ लाया

तेरे इस वीर को तो एक झटके में तोड़ देता पर

समझा कि किसी तरह तुझ तक पहुंच जाऊं

कुछ समझा बुझाकर सही रास्ते

पर लाऊं मगर जब मनु यकी बुरी घड़ी आती है

तो उसे ना आंख से दिखाई देता है ना कान से

सुनाई देता है

मगर म पुराने संबंध के कारण ही आपसे हमदद कर

रहा था

अ यथमुझको याचू हेमें पड़े तू भाड़ में पड़े तेरी

लंका

रावण हनुमान से दोहा

अरे नालायक बता तो मुझको तो खौफ किसका

दिखा रहा है

म वह बला हूं जिसके भय से काल खुद खौफ खा रहा है

हनुमान रावण से लोग खुद ही देख लेंगे

य इतना तिलमिला रहा है

कल जो खाता था खौफ जिसका वह आज तुझे खा रहा है

रावण हनुमान से ना म ोठाया खंजर अभी तलक चहचहा रहा है

तू अपने हाथ अदम का रास्ता बना रहा है

हनुमान रावण से चंद दिन में होगी यह चर्चा वह दिन भी नजदीक आ रहा है

कहेगी दुनिया देखो रे लोगो

जनाजा रावण का जा रहा है

रावण हनुमान से तलवार उठा कर हरे.ओ नासा काट शरीर

रावण से ऐसी बेहूदा तकरीर अब मेरी तलवार ही तुझे खामोश कर आएगी

और सदा के लिए तुझे सुख की नींद सुलाएगी

रावण तलवार उठा कर

विभीषण रावण से तलवार पकड़ कर ...भाई साहब जरा धैर्य कीजिए यह काम आप की शान के   खलाफ है

भला दूत का वध करना कहां का इंसाफ है

रावण विभीषण से हट हट मेरा हाथ छोड़

यह तु   हाराख्याल झूठ है

कौन कहता है यह दूत है

विभीषण रावण से भाई साहब जब यह अपने स्वामी का संदेश लाया है तो इसमें दूत होने में   याशक है

रावण विभीषण से परंतु तु   हेंऐसी बेहूदा बकवास करने का   याहक है

विभीषण रावण से जो कुछ उसने कहा वह इसके मालिक की जुबानी है

विभीषण रावण से   ाताजी यह राजनीति का असूल है

रावण विभीषण से यह बहाना फिजूल है

बि क्इसकी वजह खास माकूल है

हनुमान रावण से अगर तू भी मुझे गिर   तार्न कर ले

तो तेरे जीने पर धूल है

रावण सभा से पकड़ लो पकड़ लो भागने ना पाए

हनुमान का दौड़ कर

लंका को फूक. देना

श्री रामचं   जी का क   प

नल नील   सुग्रीव अंगद.   जामवंत

हनुमान जी का जयकारा बोलना

हनुमान राम से पांव में गिरकर प्रणाम भगवन

राम हनुमान से कहो महावीर तुम   हो कहो कुशलता से तो आए

हनुमान राम से हे भगवान जब आपका आशीर्वाद मेरे साथ है

तो मुझे   य होने पाए

सुग्रीव हनुमान से कहो बजरंगी सीता जी की खबर लाए

हनुमान सुग्रीव से हां हां हनुमान जाय और सीता जी की खबर ना लाए

राम हनुमान से कहो महावीर तुम लंका में कैसे पहुचे

हनुमान राम से भगवान म कई स्थान पर खोज करता हुआ
लंका पहुंचा वहां कई जगह पर देखा भाला बड़ी मुश्किल से माताजी का पता लगा
भगवन माता जी अशोक वाटिका में कैद है
माताजी एक साधारण सी साड़ी में अपना शरीर डांप रही थी और मारे शीत के थर थर कांप रही थी
म यही सोच रहा था कि इतने में रावण वहां आ पहुंचा
उसने माताजी को खूब धमकाया
हे भगवन माता जी कुछ देर तो चुप रही
परंतु तंग आकर जुबान खोली जो कुछ मुंह में आया तो बोली
जिसे सुनकर रावण ने तलवार निकाली
परंतु एक स्त्री ने बीच में आकर माताजी की जान बचाई

अस्तु उसका अरमान दिल ही दिल में रह गया

और जाता हुआ वह कह गया

एक महीने और स करुंगा

उसके जाने के पश्चात

म जिस वृ पर बैठा था

वह उसी वृ के नीचे आई

और साड़ी में से प ला काटकर

गले में लटकाया जिसके देखते ही म सोचा

माताजी आत्मघात करने लगी है

म वहां से कूदकर संभाला

पहले तो मुझे रावण समझकर

मुझे बुरा भला कहा

जब म आप की निशानी दी तो उनका मजाता

रहा

किंतु इस बीच माता जी रोती रही और आते समय

मुझे यह निशानी दी

चूड़ाम ण आगे करके लीजिए.

भगवान पहचान लीजिए

राम हनुमान से चूड़ाम ण लेकर निसंदेह यह मेरी

प्राण यारी की निशानी

रो कर

यारहनुमान

किंतु आप यह तो बताएं तु हारीरावण से भी मुलाकात हुई थी या नहीं

हनुमान राम से हां रावण से भी मुलाकात कर आया हूं और उसके बहादुर को भी नीचा दिखा आया हूं कईय को मारा कईय को पछाड़ा

राम हनुमान से हे यारहनुमान नीचा दिखाने के बजाए उसे सीधा मार्ग पर लाते तो अच्छा था

हनुमान राम से भगवन म अपना सारा बल लगाया लेकिन अभिमानी ने मेरी बात को मखोल में ही उड़ाया ..
यहां तक कि मुझे मारने के लिए तलवार उठाई ..
किंतु बीच में पढ़कर विभीषण ने मेरी जान बचाई.

राम हनुमान से यारहनुमान
जो मेरे लिए सहन किया है
म आपका सच्चे दिल से
मशरुर हूं.

हनुमान राम से बस भगवन
मुझे अधीक ल जतन कीजिए

राम सुग्रीव से हे सुग्रीव जी

कहो अब   याविचार है.

सुग्रीव राम से हमें अब किस बात का इंतजार है

उधर रावण का सिर और इधर हमारी तलवार है.

राम सुग्रीव से तो   यासुग्रीव जी यहां से चलने की

तैयारी कीजिए

सुग्रीव राम से जैसी आ   ाहो भगवन.

हनुमान सीता   श्यसमा   त

रावण की परेशानी

मेघनाथ विभीषण

इस पूरे वा   यांशमें कुछ गलतियां है इसको ठ   क

करना है

रावण सभा से ना जाने वह कौन सी मनहूस घड़ी थी

जब से यह नागिन मेरे गले पड़ी थी

सांप के मुंह में छछूंदर खाए तो कोड़ी उगले

ना खाए तो कलंकी ..जब से इसे चुरा कर लाया हूं

म ना नींद भर सोया हूं

ना पेट भर खाया है

ना तो उसका हा म जवाब सुनने को आया है या

इसके विरह में तड़पता रहु

रहे सहे को हनुमान जला गया

और मेरी मांन को एक में खाक में मिला

गया

मेघनाथ रावण से पिताजी जब तक मेघनाथ संसार

में मौजूद ह

आपका किसी प्रकार की चिंता करना बेशुद्ध है

म वही मेघनाथ हूं जिसका हनुमान एक झटका भी

नहीं सह सका उसे म मामूली इंसान समझता हूं और

भागे पीछे भागना अपना अपमान समझता हू

रावण मेघनाथ से शाबाश बेटा पर जो कुछ हुआ है

उसका अब याफि करना है अब तो आगे की

रोकथाम का जि करना है

यूं तो मुझे किसी बात का गम नहीं य मेरे

बहादुर किसी से कम नहीं

भला लंका के बहादुर से मुकाबला करने का किसी में

दम नहीं

विभीषण रावण से ।ताजी आपके सारे सभासद

आप से डरते ह

भैया अि न्तथा दुश्मन को तुछ नहीं समझना

चाहिए

इसलिए मेरी आपसे यही ताकीद है जिस प्रकार से हो

सके

उस बला को गले से निकाल डालो और सारे कुल को

इस आने वाली बर्बादी से बचा लें

अब साधारण सी बात यह है कि आप सीता जी को

श्री रामचं जी के पास पहुंचा दें

और उनसे मित्रता का हाथ बढ़ाएं वह यायकारी

परमेश्वर आप को दयसे लगाएंगे

मेघनाथ विभीषण से ेधमें औ चाचा साहेब बस

बहुत हो चुकी जरा चुप हो जाइए अगर राम से

अधिक भय हो तो कहीं जाकर छुप जाइए

कुल पर चाहे कितनी तबाही मचे

परंतु तुम ऐसी जगह छुपना

जहां आप की जान बचे शौक

आप जैसे निर्ल जहमारे कुल में कहां से पैदा हो गए

ना आज हम अपने भा यको रोते बहन की नाक

काटी जावे और भाई को न आए

जाओ ज दीजाओ वरना मौत दिख जाएगी
और फिर छुपने को जगह ना पाएगी

विभीषण मेघनाथ से ोधमें अरे नासमझ गुस्ताख
लड़के तू इस प्रकार जुबान चला रहा है
पृ वीतथा आकाश को कुलबे में मिला रहा है
माना की तू जवानी में मशरुर है परंतु बुद्धि और
समझ से कोस दूर है
विलासत भर का लड़का और हाथ भर की जुबान
इस समय इतनी बहादुरी दिखा रहा है
तू कल कहां मर गया था जब हनुमान सहस्त्र की
किरकिरी
कर गया था

मेघनाथ विभीषण से ोधमें चाचा साहिब म जिस
बात को कहना ना चाहता था
अब आप कहला कर ही रहोगे चाचा साहेब उसमे भी
आप की साजिश थी
जो हनुमान भाग गया मानो आपका तो भा यजाग
गया अफसोस तु हारीबहन की
जिसने नाक काटी तुम उसी का लेते हो
यदि कुछ हो तो चु लूभर पानी में डूब मरो

विभीषण रावण से भाई साहब देखते हो यह कल का छोकरा

मुझे किस प्रकार जलील कर रहा है

नंबर 140 रामायण 135

रावण विभीषण से ोधमें निसंदेह जो कुछ कह रहा है ब कुलदुरुस्त कह रहा है

विभीषण रावण से शोक कि आप भी इस का ले कर

मेरा अपमान कर रहे हो

और उसकी पीठ ठोकर मुझे सारे दरबार में कड़वे वचन सुना रहे हो

रावण विभीषण से अरे निर्ल जअगर म इसका भी लेता हूं

तो यह शत्रु का वफादार तो नहीं और तेरी तरह कौम का ग ारतो नहीं

निसंदेह तेरी दुश्मन के साथ गहरी साज बाज है

हनुमान की वकालत करने के लिए तू बीच में पड़ गया

जब म ंउसका वध करना चाहा

तो जट बीच में अड़ गया

अब मेघनाथ ने युद्ध की सलाह दी तो उसके सिर पर चढ़ गया

विभीषण रावण से ाताजी यह आपकी भूल है

और मेरे संबंध में ऐसा ख्याल लाना बलकुलफिजूल है

पर म अब भी कहता हूं

कि आप सोई हुई राड़ को छेड़ रहे ह ..एक स्त्री वह भी पराई

जिसके कारण इतनी लड़ाई

रावन विभीषण से परंतु उनके दिल में यह यासब हवा समाई

जो अकारण ही सूर्पनखा की नाक उड़ाई

अरे बेहया अब कुछ न भाई

विभीषण रावण से निसंदेह यही एक बात है

जिसने अपनी तबीयत इतनी भड़काई

पर कैसे वह खामखाह उनके सिर आई

और किए की सजा पाई

रावण विभीषण से विभीषण जरा कान खोल कर सुन

तेरी निस्बत चार ओर से नाराजगी का इजहार है

जिस से   प्रकट होता है

तू शत्रु का खु   लमखु   ल्लफादार है

विभीषण रावण से भाई साहब जैसे आप खुद

फरामोश है

वैसे ही आपके सभा सदी ह

इस समय आप के सुर में सुर मिला रहे ह

और आप को उ   टेमार्ग पर चला रहे ह

यह आपको अमृत के धोखे में

विष पिला रहे ह समय आने पर

यह निखट्टू

अपने ही मुख से कह देंगे रावण की   गलती थी

पेज नंबर 141 रामायण 136

मगर हम   याकरें हमारी पेश नहीं चलती थी

रावण विभीषण से विरोध में अरे पाजी म   कार

बेगैरत ग   ार

तू इसी   यहां से काफूर हो जा और मेरी आंख से

दूर हो जा

तेरे प्राण की र   ाइसी में है

किंतु मेरी सीमा से निकल जाओ अरे निर्ल   ज

यदि म तेरे साथ कुछ भलाई करता हूं ...

तब भी उसकी हमदद का दम भरता है....

वह तेरी बहन की   पर हाथ डाले ....

किंतु तुमको कुछ   न आए

खर और दूषण का सेना सहित हनन करें

और तेरा   जोश ना खाए

अरे पापी इस बेवफाई की जिंदगी से तो अच्छा था

कुछ खा कर मौत की नींद सो जाता ...

हां मगर म तेरे जैसा बेशर्म नहीं

हा अपनी मां जाए भाई का वध करना मेरा   नहीं

माना की तू आला दज का तु पापी और शैतान है

किंतु तेरे जैसे मुद को मारना मेरा अपमान है

लात मारकर बेगैरत चला जा निकल जा दूर हो जा

अब लंका के भीतर कदम न धरना और सारी जिंदगी

मुझे मुंह न दिखाना

विभीषण रावण से गाना बहरे तबील

तेरे बर्बाद होने के दिन आ गए

दोस्त इसमें है भाई तु   हारानहीं

तेरी बुद्धि में रावण खलल आ गया

तूने अपना बेगाना विचारा नहीं

आप अपनी जुबान से कहो ना कहो

मुझे रहना यहां खुद गवारा नहीं

तेरी मतीमंद के रा यमें

अब विभीषण का कोई गुजारा नहीं

तुझे भाई की भाई को नसीहत नहीं

आज तुमको विभीषण यारनहीं

अब मरने में न छोड़ी है कसर

शीश धड़ से मगर ये उतारा नहीं

पेज नंबर 142 रामायण 137

तख्ते लंका का तख्ता उलटने को है

याकरूं मेरा चलता इजहारा नहीं

मेरे चलते समय का नमस्कार लो

तो करूंगा दोबारा नहीं

नाटक.

विभीषण रावण से शोक मेरी शुभकामनाओं का

यही सिला मिलना था

और मुझे इसी प्रकार सारे दरबार से जलील होकर

निकलना था

अच्छा भैया तु   हारा   याकसूर है हाथ बांधकर

.....अब मेरा अंतिम नमस्कार लीजिए

श्री रामचं   जी का क   प

राम अंगद हनुमान   नल नील सुग्रीव

सुग्रीव राम से भगवन एक   की बात सुनिए

रावण का भाई विभीषण आपसे शरण मांगता है

राम हैरानी से हे हे रावण का भाई विभीषण

सुग्रीव राम से हां भगवान

राम सुग्रीव से तो आपका इस विषय में   याविचार है

याविभीषण वास्तव में का   बलऐतबार है

सुग्रीव राम से मेरी राय में तो हनुमान जी से पूछ लेना ठ   कहेगा

हनुमान राम से भगवन और त में कुछ नहीं कह सकता

मगर इतना कहे बगैर रह भी नहीं सकता

यदि विभीषण रावण के दरबार में मुझे ना बचाते तो

म कदाचित लौटकर वापस नहीं आता

राम हनुमान से तो बस ठ कहै

यारेहनुमान जाइए

और विभीषण को आदर सहित

ले आइए

हनुमान राम से जैसी आ ाहो भगवन

हनुमान विभीषण से प्रणाम महाराज

विभीषण हनुमान से खुश रहो यारेहनुमान जी खुश रहो

हनुमान विभीषण से महाराज आपकी भि तपूरी हो गई

मुझ दास को आप को बुलाने के लिए भेजा है

चलिए भगवन के कीजिए

विभीषण राम के पांव में गिर कर रोना

प्रणाम भगवान

राम विभीषण से गाना

मेरे विभीषण

याखौफ तूने खाया

आंख में जल भरा है

किस दु के सताया

मेरे विभीषण ....

जिसने मेरे भ त को

दुनिया में दुख दिया है

वंश उसका ढूंढा

कहीं न पाया

मेरे ......

तू मेरी शरण में आया

तुम को गले लगाया

य रोते हो विभीषण

य इतना ऩीर बहाया

मेरे ....

जल हाथ में लेकर

तेरे चढ़ाया

जा आज से विभीषण

लंकापति बनाया

मेरे .....

राम विभीषण से विभीषण को उठा कर   यारे

विभीषण उठो

य जार जार रो रहे हो

अब आपको यहां पर

कोई   नहीं होगा

अब लंका जितने पर

शाही मुकट आपके सिर होगा

आज से मेरा यह वचन निश्यत रहेगा

विभीषण राम से गाना

विभीषण दास आपका

रखना लाज हमारी हे प्रभु

आया हूं शरण तु   हारी

नाटक

विभीषण राम सेभगवन जैसा आपको सुना था

उस से भी बढ़कर पाया है

जिसने अपने शत्रु के भाई को

खुले दिल से गले लगाया है

हेभगवन यह एहसान

म जिंदगी भर नहीं भूलूंगा

राम विभीषण से यारेमित्र यह कोई एहसान नहीं

जो दुखी इंसान पर हमदद नहीं करता

परले सिरे का कमीना होता है

मगर यह तो बताओ

तुम रावण को य छोड़ आए

याउनसे कोई खास तकरार हो गयी

या उ हेंतु हारकुछ बगाड़दिया

विभीषण राम से भगवन म ने

उसअभिमानी को...

बार बार समझाया किंतु उसने मेरी बात को मखोल

में ही उड़ा दिया मुझको कायर और बुजदिल ठहराया

...

आ खउसने नाश होने पर पाया तो विवश होकर

म आप की शरण में आया

भगवन मेरी ओर से रावण मर गया और म रावण

की तरफ से मर गया हे भगवन अब तो म यह शरीर

आपके चरणो में कुर्बान कर चुका हूं

राम विभीषण से यदि रावण आपको और रावण को

आप साफ जवाब दे चुके ह

तो हम आप को लंका की उपाधि तु हेंदे चुके ह

यहां आपका हर तरह से आदर किया जाएगा

और म प्रति ाकरता हूं कि
लंका विजय होने पर लंका का राज तु हें दिया जाएगा

हनुमान राम से हो भगवन जो संपदा महादेव जी ने
रावण को दस शीश का बलिदान देने पर दी थी
वह उपाधि आपने विभीषण को शरण में आने पर दे दी

राम हनुमान से याहेनुमान जी भ त को याद्रे सकते ह भ त का तो हर सिर पर होता है

पेज नंबर 144 रामायण 139

हनुमान
बोलो कृपा निधान भगवान
राम चं की जय
सुग्रीव राम से भगवन अब लंका पर चढ़ाई करने का हु मदीजिए

राम सुग्रीव से मेरी स मतिमें एक बार फिर किसी दूत को भेजकर रावण को समझाना चाहिए

और जहां तक हो सके आगे आने वाली तबाही को

टालना चाहिए

हनुमान राम से ठ   क्है भगवन

मेरी समझ में भी रावण को

एक अवसर और देना चाहिए

और उनको समझाने के लिए युवराज अंगद को

भेजना चाहिए

राम हनुमान से जी हां हमारा विचार भी ऐसा ही है

अंगद युवक निपुण तथा सफल भी है

और वीर होने के साथ साथ निति कुशल भी है

अंगद राम से नाथ मुझे आशीर्वाद दीजिए

और उस अभिमानी से भेंट करने के लिए विदा

कीजिए

राम अंगद से हे   जाओ मेरा आशीर्वाद है

कि तुम संसार में अमर कीर्ति पाओगे

अंगद राम से जय हो प्रभु

दोहा चिंता ही   याहै आपका सिर पर जो हाथ है

देखूंगा जाकर उसको जो देव का नाथ है

पर्दा

श्यसमा त

रावण का दरबार

सातवां दिन शुरू

मेघनाथ पर मंत्री निकुंभ

अंगद रावण संवाद

रावण मंत्री से महामंत्री सताकी गाने वाली को दरबार में हाजिर करो

महामंत्री रावण से जैसी आ ाहो महाराज

गाना नृत्य

वारपालरावण सहित महाराज की जय हो
किसकिंधा से एक दूत आया है

रावण वारपालसे जाओ आदर सहित दरबार में ले आओ

वारपालरावण से जो आ ामहाराज

रावण अंगद से राधेश्याम
म कहता हूं कौन है तू बदला अपना नाम
हुआ कहां से आगमन यहै मुझसे काम

अंगद रावण से राधेश्याम
म कहता हूं लीजिए नमस्कार दसभाल

दूंगा चार जवाब में ..जब ह चार सवाल

महाराजा राजाधिराज म

दूत राम रघुवर का हूं

युवराज देश किसकिंधा का

सूत बाली राज वानर का हूं

पेज नंबर 145 रामायण 140

रावण अंगद से दोहा म कहता हूं लिये है तुमने

जिसके नाम

यान्न्नहीं उनका मुझे कौन बाली या राम

अंगद रावण से राधेश्याम म कहता हूं यान्न्न हो

कारण तब बुरी अवस्था थी

जब बाली की काख में बंदी थे

उस समय आपको मूर्छा थी

इसलिए बाली को भूल गए

तो बड़ी ना भूल महोदय की

इसमें अचरज है नहीं मुझे

पर एक बात है विस्मय की

भगिनी श्री सूर्पनखा जी

को प्रति दिन दस वंदन देखते ह

इसलिए अचंभा तो यह है

श्री राम नाम भी भूले ह

उ हींक्रा सेवक अंगद है

यह चुकाने आया है

इस उ टीरा यसभामें

कुछ सीधी समझाने आया है

रावण अंगद से राधेश्याम

यातू ही है अंगद हे अंगद

यातू ही बालि का बालक है

यातू ही बांस की जवाला है

यातू ही बालि का घातक है

यदि तेरा होता तो

होता आज अकाज नहीं

तपस्वी का दूत कहलाने में

आती तुझको लाज नहीं

मारा जिसने बाली बाप

धिक है तू उसका दास हुआ

जो मित्र पिता का है तेरे

उस पर ना तुझे विश्वास हुआ

अभी तू मुझसे मिल जाए

तो तेरी सुभद   गतिहो जाए

इस बड़े रा   य लंका का

कल से सेनापति हो जाए

अंगद रावण से राधेश्याम म यह सेवा करता परंतु

मुझ में इतनी यो   यताकहां

लंका का सेना   बनु

यह बुद्धि और वीरता कहां

सेनापति अगर चाहते हो तो

रामदल में फाजिल है

दो चार नहीं सैकड़ वहां

सेनापति बनने का   बल है

अ   यथासंदेशा है उनका

इस लंका दिशावर रावण को

सारी लंका में एक वही

बस शेष रहेगा   को

अ   यथाएक विभीषण तो

इस सेवा को आ सकता है

सेनापति तो तुम चाहो

वह रा   यभी चला सकता है

रावण अंगद से राधेश्याम अच्छा अगर संधि चाहते

ह

स्वीकार मुझे इन नियम पर

पहले भेज दे विभीषण

सिर रखे मेरे चरण पर

फिर तोड़े सेतू समु   का

आ सके न कोई लंका में

फिर हनुमान का मान मिटा

भेजिए रावण की सेवा में

उस समय दबा तिनका दांतो में शरणागत हो इन

बाण की

कर जोड़े हाथ मेरे आगे

रामलखन भि   ामांगे प्राण की

अंगद रावण से बस यही है या कुछ और अधिक

यह तो मांगे साधारण है

म जाकर उनसे कह दूंगा

चार बातें साधारण है

जिन हाथ से पुल बांधा है

वह उसे तुड़वा ही डालेंगे

लंका का मान विभीषण है

लंका म उसे भेज देंगे

हो चुकी हानियां जो अब तक

उन सबको तो हम भर देंगे

पर हुई एक महान हानी

उसे कैसे पूरी कर देंगे

जब जब तुम घर जाओगे

तब तब नजर में आएगी

श्री सूर्पनखां की कटी नाक

वह कैसे जोड़ी जाएगी

रावण अंगद से   ोधमें अरे हो घमंडी निर्ल   ज

तूने अभी तक मेरा नाम नहीं सुना जो इतनी ठ   ठाई

करने पर उतर आया है

म सूर्पनखा की नाक नहीं

जो तुम काट सकोगे

म रावण हूं रावण जमीन आसमान पर मेरी धाक है

अंगद रावण से नाम हां सुना है आपका नाम रावण है

परंतु एक रावण तो राजा बलि को जीतने के लिए

पाताल लोक गया था जिसको बालको ने घुड़साल में

बांध लिया

और एक रावण कीर्ति वीर्य के चुंगल में आया

जिसको पुि सतमुनि ने बड़ी मुश्किल से छुड़ाया

एक रावण सहस्त्रबाहु से लड़ने के लिए गया

वहां भी मार खाकर आ गया

और चौथे रावण को मेरे पिता बाली ने छह माह तक

काख में दबा लिया

और सं   यहोने तक डले की तरह छुपा लिया

अब बताइए आप उनमें से कौन से रावण ह

रावण अंगद से मर्यादा के भीतर रह अधिकार न राड़

बढ़ाने का

बकवादी तेरा काम नहीं सिर होकर समझाने का

पेज नंबर 147 रामायण 142

वह दोन आप निपट लेंगे

जीन में ठन रही लड़ाई है

तू तो पेड़ पर उछल कूद

  य बक बक यहां लगाई है

नाटक

रावण-अंगद से तू अभी बच्चा है नादान है और

रावण से अनजान है म वह रावण हूं जिसने कई बार

अपने शीश काटकर महादेव जी का पूजन किया और

अपनी शि तसे सारे देवताओं को परास्त किया

आज मेरे बल का सारा संसार सि कामानता है

दोहा :-मही डोले गगन कांपे

कदम मेरे जमाने से

हिल जाते ह भी

जरा सा लब हिलाने से

मेरे आतंक से कॉल कलेजा

थाम लेता है

है यागिनती में यहां उनकी जिसका तु नाम लेता है

अंगद रावण से हा यदि ऐसे वीर थे तो शस्त्र बाहु को

जीतकर य ना नाम पाया

धनुष तोड़ कर य नहीं बल दिखाया

और म विवश हूं नहीं तो

तुझे भूमि पर पटक कर

सारी सेना को मारकर

मंदोदरी सहित जानकी जी को ले जाता

दोहा :- सहे ह सिर झुकाकर आज सब कड़वे वचन तेरे

पीये है विष की तरह

पापी कथन तेरे

अगर बन कर न आता दूत

तो लेखा चुका देता

पल में भाव आटे-दाल का

तुमको चखा देता

रावण अंगद से   ेधम

ओ धूर्त तेरी इतनी ढीठाई

मेरे सामने उन तपस्विय की

इतनी बड़ाई

दोहा भटकते फिर रहे आज तक नारी की चिंता में

यूं ही मर जाएंगे रोते-   बलखते

घोर विपदा में

अंगद रावण से   ेधम

ओ अभिमानी जिसके भय से हजार अहंकारी कांप गए जिन की तीखी चितवन से परशुराम का अभिमान भाग गया तु उनको डरना चाहता है और उन पर अपना आतंक जमाना चाहता है ओ मूढ यह तेरी भूल है

रावण अंगद से ोधमें बस बस औ धूर्त चंडाल आगे

ना निकाल नहीं तो जीभ तालू से निकायल

दूंगा जिनके बल पर इतना उछलता है उनका नाम

ही दुनिया से मिटा दूंगा

दोहा बनूंगा ोधकी बजलझुलसा दूंगा जला दूंगा

मिटाकर पल में जीवन

लाश कुत्त को खलदूंग

पेज नंबर 148 रामायण 143

अंगद रावण से ोधमें ओ धुरत इतना अभिमान

मेरे सामने

भगवन का यह अपमान

दोहा नीच अपने पाप कम का तमाशा देख ले

अंगद का भूमि पर हाथ मारना

शि तभी छोड़ती है साथ तेरा देख ले

रावण का मुकुट गिर जाना रामदल में जा कर पड़ना

रावण-अंगद से भडक कर ओह! इतना निर्ल ज

दोहा चढ़ गया सिर पर घमंडी

नीच पापी बेहया

इस तरह के वचन जो आया

जुबां पर कह गया

याद रख अब अगर बकवास करता जाएगा

ठोकरें गलिय में पाजी शीश तेरा खाएगा

अंगद रावण से   ोधमें अरे ओ मूर्ख तुझे गाल

बजाते   नहीं आती

औ स्त्री चोर ग   ।रमंदबुद्धि पाखंडी ले अपनी वीरता

का एक   श्यदिखाता हूं

और तेरे सामने पृ   वीपर पांव जमाता हूं

अंगद का सभा में पांव जमाना

यदि तेरा कोई वीर इसे उठा देगा

तो अंगद सौगंध खाकर कहता है जानकी जी को हार

जाएगा

नहीं तो सीता जी को

भगवन के चरण में पहुंचाएगा बोलो है मंजूर

रावण अंगद से कहीं पीछे से मुकर जाओ अथवा

अपनी   से मुकर ना जाओ

अंगद रावण से यह बोलना तु   हारावाहीयाद है मद

का प्रण प्राण के साथ है

रावण सभा से

योद्धाओं   यादेखते हो

इस का पांव तुरंत उखाड़ दो

और इस नामाकूल को

पटककर पछाड़ दो

दोहा इसको इस तरह पीसो कि ईसका नाम निशान

तक न पा सके

धूल तक उड़कर न इसकी

रामा दल में जा सके

रावण मेघनाथ से बेटा मेघनाथ तुम जाओ और

अपना बल दिखाओ

मेघनाथ खड़ा होकर रावण से चलूंगा जिस जमीन

पर

उस जगह भूचाल आएगा

जमीं तो एक तरफ चरखे

कुल भी कांप जाएगा

मुजस्मि काल हूं म

यह   यामेरा काल लाएेगा

यही हो जाएगा

जो मुझ से नजरें मिलाएगा

इसे तो एक झटके में

कई   खलदूंगा

पांव तो चीज   याहै

इतनी जमीन भी हिला दूंगा

मेघनाथ अंगद के पांव से लिपटकर अजब से

पाला पड़ा है

अरे इसमें कोई मेख तो नहीं लगा दी है

रावण निकुंभ से बेटा निकुंभ

अब तु हारावार है

निकुंभ खड़ा होकर म अपनी वीरता के तुमको जोहर

दिखाता हूं

नजर मेरी तरफ रखना पैर युकरउठाता हूं

हु महो तो इस पांव के टुकड़े बनाता हूं

खबरदार हो बुजदिल म तेरी और आता हूं

निकुंभ अंगद के पांव से लिपटकर जोर लगाना

अंगद निकुंभ से हीला दे भाई हिला दे अ यथदो

टुकड़े हो जाएंगे

के मारे हार कर बैठ जाना निकुंभ का

रावण प्रहस्त से बेटा इस नालायक को

उठाकर

समु में फेंक दो

प्रहस्त खड़ा होकर उठाया कदम जब म ने

पांव इसका उठाने को

ना पाएगी जगह इस को

मुंह दिखाने को

मेरी ताकत से आ जाएगी ताकत कुल जमाने की

संभल जाओ अब आता हूं तेरा बल अजमाने को

अंगद के पैर से लिपट कर

इस लड़के से   यासिर खपाएंगे कोई बहादुर हो तो

हाथ दिखाएंगे

हार कर बैठ जाना

रावण मंत्री से दोहा :-देखता   याहै उठाकर फेंक दे

आकाश पर

ना तो रोए कोई ऐसे बेहया की लाश पर

मंत्री रावण से दोहा :-हु   म है हुआ है सरकार का

फौरन बजा लाऊं

उठा दुं पैर पृ   वीसे तभी बलवान कहलाऊं

मंत्री अंगद के पांव से लिपट कर:-

दोहा :-हिलाऊं पैर   या

सारे को भोजन जान कर खा लूंगा

अगर हो हुकम तो एक अ ान में भूमि भी हिला दूंगा

मंत्री का हार कर बैठ जाना

अंगद मंत्री से भाई जब युद्ध भूमि में आएगा तो

कुछ मजा भी आएगा

रावण सभा से ोधमें मुझे हैरानी है आज तु हारी

ताकत को

चि ड़यचुग गई

अंगद रावण से ललकार कर

खड़ा है सामने अंगद मअपना मिटा ले तू

कोई बाकी रहा हो तो उसको भी बुला ले तू

अभी है लंका को तबाही से बचा ले तू

की जा है गर अब भी प्रण अपना पा ले तू

ना फिर यह मिलने का

अगर इस चुकेगा

फलक आंसू बहाए का

जमाना मुंह पर थुकेगा

रावण-अंगद से अरे ओ नामा कुल   य क   की
तरह जुबान चला रहा है और तुछ के लिए मयान से
निकलता जा रहा है

रावण अपनी जगह से उठकर

जरा ठहर

म तेरा अभिमान तोड़ुंगा

पांओ तो चीज   या है

तुझे भी उठा कर छोड़ूंगा

पांव की ओर लपक कर अब अपना सारा जोर लगा
ले

और पांव को अच्छ तरह से जमा ले

अंगद रावण से बस बस माफ कीजिए

इस प्रकार मामला साफ नहीं

हो सकता

अगर अपने किए पर पछताते हो तो भगवन के

चरण में जाओ

वह आपको जरूर अकसमा

कर देंगे

हां म अकस्मा करवाने में

आपकी सहायता जरुर कर सकता हूं

रावण अंगद से राधेश्याम जा हट जा भाग जा यहां से

जा अ   यथबुरा फल पाएगा

म अब तलवार चलाऊगां

जो फिर तू जुबान चलाएगा

उन तपस्वी बच्च से कह दे

हूं रण करने को

वह उ   टेपैर घर जाएं

य आए कटने मरने को

अंगद रावण से राधेश्याम श्री महाराज नाराज ना हो

म रामा दल में जाता हूं

अंतिम प्रार्थना और भी है यहां से कुछ गायब है

यदि रघुराई की शरण म गए तो जीते जी तर जाओगे

अ   यथअकाल मृत्यु होगी

बेमौत स्वयं मारे जाओगे

रावण अंगद से अरे कपूत

तेरी भलाई इसी में है

कि तू यहां से चला जा

और मुझे अपनी   न दिखा बेहूदा बकवास का

मेरी जुबान से नहीं तलवार से दिया जाएगा

और देखूंगा कि तू युद्ध भूमि में कितनी देर पांव जमाए गा

अंगद रावण से यह तेरी सरासर हिमाकत है
जिन भाइय के भरोसे कुद रहा है उनमे तो बातें बनाने की ही ताकत है
खैर अगर तुझे अपनी तलवार पर इतना ही अभिमान है
तो हमारी ओर से भी युद्ध का ऐलान है

अंगद और रावण संवाद समा त

अंगद का रावण के दरबार से संदेश लेकर रामा दल में जाना

राम हनुमान सुग्रीव जामवंत नल नील आदि सबका पद. के पीछे होना

राम सुग्रीव से समय बहुत हो गया है परंतु अंगत जी अभी तक नहीं आए न जाने कुशल भी ह

विभीषण राम से भगवन रावण जैसे हठधम को समझा कर के सीधे मार्ग पर लाना ब कुनिराधार है .

य क्सिके

सिर पर तो

अहंकार का भूत सवार है

राम विभीषण से हां ठ क्है

परंतु हमने तो नीति का पालन किया है

वह माने ना माने उसकी इच्छा है

अंगद का दंगल में से आना

हनुमान राम से दे खभगवन अंगद जी आ रहे ह

अंगद राम से राम के पांव में गिरकर प्रणाम भगवान

राम अंगद से चिरंजीव रहो

कहो अंगद याखबर लाए हो

अंगद राम से भगवन म सेसको अनेक बार

समझाया

परंतु उस हठधम ने तो

मेरी बात को मखोल में ही उड़ाया

अंत में म अपना पैर जमाया आप के प्रताप से

लंका का कोई भी वीर पांव को हिला ना पाया

राम अंगद से हो तुम से

हमें यही आशा थी

सुग्रीव अंगद से अंगद यहां कुछ मुकट आ गिरे थे
 यावह तुम ही ने फेंके थे

अंगद सुग्रीव से हां महाराज मे राजा के चार गुण थे
जो उसका साथ छोड़ कर चले गए

अब रावण साम-दाम-दंड-भेद से हीन हो गया है

राम अंगद से तो अंत में   यापरिणाम निकला

अंगद राम से भगवन जब वह नीति के मार्ग पर न
आया तो
म युद्ध का ऐलान कर चला आया

राम सुग्रीव से तो है   यासुग्रीव अब युद्ध की तैयारी
करो
सुग्रीव राम से जैसी आ   ाहो प्रभु

सुग्रीव का अंत पद के अंदर चले जाना

प्रदा गिरना   श्यसमा   त

रावण का दरबार

मेघनाथ मंत्री दरबारी

रावण सभा से हा हा हा हा हा रामचं   हम से डरता है

इसलिए बार-बार अपनी खुशामद करता है ....हा हा

हा हा हा ....

यह कौन सी मोम की नाक है

जो ज   दीमुड़ जाएगी

अब तो उसे अच्छ तरह हाथ दिखाऊंगा

और लंका पर चढ़ाई करने का

मजा चख आऊंगा

मेघनाथ रावण से पिता जी यदि ऐसे ऐरे गैरे लंका में

आएंगे तो

हम काहे को मुंह दिखाएंगे

माना कि अंगद का पांव

पृ   वीसे नहीं हीला

मगर मुझे भी तो पूरा जोर लगाने का मौका नहीं

मिला

मंत्री रावण से महाराज अब इन बात को जाने

दीजिए

और सेना की तैयारी कीजिए

और सब जगह मोच   बंदीकीजिए

रावण मेघनाथ से बेटा कल का सेनापति हम तु हें

मनाते ह

य क्षिद्ध का पहला दिन है

और तुम हर वि यमें निपुण हो

मेघनाथ रावण से गाना चलत

पिताजी दे खयेताकत मेरी टेक

उस रामा दल की मेरै आगे

चालै ना हेराफेरी

सर सर करते तीर चालै करुंगा बौछार में

रण म पड़ूं कुद कै

को यमा नूहार में

बुआ जी का बदला लूंगा

लयाऊ शिस तार में

रण में इसतरिया चालु जैसे बण कै कैहरी

पिताजी देखीयो ताकत मेरी

शस्त्र उठा कर जाता हूं

देखूं उनके हाथ में

लड़ूंगा युद्ध में ऐसे जैसे दिन की कर दूं रात में

इं जीतहै नाम मेरा देवी का हूं दास में ..पिताजी अब

ना लाऊं देरी े पिताजी दे खयेताकत मेरी

करता हूं प्रणाम पिता जी

युद्ध करूंगा डट डट कै

म मोर्चाबंदी ऐसी बनाऊं

करूंगा झटके म

करता हूं लड़ाई जाके दुर्गा मां को भेंट में

मार मार के कर दूं म सबकी डूबा डेयरी ..

पिताजी देखी अ ो ताकत मेरी

शकती है मेरे पास में

बांका बणु खलाड़ीम

दुश्मन को म ऐसे मारुं ना हमारे बाद शिकारी

....पीता जी दे खयेताकत मेरी

बेफि रहो आप पिताजी मौत उनकी आ रही

अब करता हूं जाकर नए दिन की रात अंधेरी

पिताजी दे खएताकत मेरी

मेघनाथ रावण से पिता जी अब म जाता हूं

अब आप बेफि रहें

म उनका सिर काटकर

आपके सामने लाता हूं

मेघनाथ पद पर ललकार कर हा हा हा कहां है वह अयो यक्के वनवासी अब जरा मेघनाथ के मुकाबले पर तो आए

दोहा आए ह जितने सारे ही मारे जाएंगे
आज सारे पाप के बदले उतारे जाएंगे

रामा दल में युद्ध की तैयारी

पेज नंबर 153 रामायण 148

राम विभीषण हनुमान सुग्रीव झावंत नल-नीलअगंद

राम विभीषण से कुछ मालूम है शत्रु की सेना का संचालन किसके हाथ है

विभीषण राम से हां भगवन जानते है आज का सेनापति मेघनाथ है

राम विभीषण से यामेघनाथ अच्छा होशियार है

विभीषण राम से बेशक रावण की सेना को पूरा ऐतबार है
सेना की मोच बंदीसी गजब की करता है

शत्रु के सहस्त्र बहादुर मरे तो उन का एक मरता है

राम विभीषण से तो ठ है

आज म स्वयं ही सेना का संचालन करुंगा

और उसकी मोच बंदी भर में विनाश कर दूंगा

राम से ताजी

आप विश्राम कीजिए

और मेघनाथ के मुकाबले पर

जाने की मुझे आ दीजिए

राम से भाई तु अभी

नासमझ ह

और लड़ाई का पहला रोज है

आज की लड़ाई पर दोन की हार जीत का दारमदार है

हनुमान राम से. हे भगवन जब यह खुद अनुरोध करते ह

तो आप य विरोध करते ह आ ख़ कोई खतरनाक

सूरत होगी तो हम भी साथ ह

राम हनुमान से बहुत अच्छा यदि तुम सब की यही इच्छा है तो

मुझे कब इनकार है

राम .हे हनुमान जी तुम के साथ रहना

य मेघनाथ बड़ा ही म कारहै

राम से पांव में गिरकर

जब मेरे सिर पर आपका आशीर्वाद है

तो मेघनाथ जैस की याबुनियाद है

राम से याभाई जाओ और अपनी वीरता

के जोहर दिखाओ

राम से जैसी आ ाहो ाताजी

पर्दा

हनुमान बाहर मेघनाथ अंदर से

वीर समर भूमि

योद्धा मेघनाथ

मेघनाथ से कौन सा वीर मेरे मुकाबले पर

आया है

आकर अपनी तो दिखाएं

मेघनाथ से आज म ही तेरा स्वागत करूंगा

मेघनाथ से राधे श्याम यह युद्ध है वीर का

खलवाड़ नहीं है बच्च का

धारे ह यहां कृपाणो की

बाज़ार नहीं है मि ठानका

यह सूर्पनखा की नाक नहीं

पीछा ना बाली बानर का

यह नहीं शिकार है सरवन का

यह लहू ह लंकेश्वर का है

जिन दात का सुखा ना दूध

दुख होता है उ हें तोड़ने में

इसलिए लौट जाओ घर को

खुश है मेघनाथ छोड़ने में

अ यथा ताड़का वध शाला अभिमान चूर्ण हो जाएगा

खर दूषण त्रिशिर के बाद का प्रतिघात पूर्ण हो जाएगा

मेघनाथ से राधेश्याम लंका पर रघुकुल की कमान

इस कारण आकर कड़की है

ऋषिय के की वाला

बदला लेने के लिए भड़की है

इसलिए संभल जा इं जीत

यह इंि यजीत बढ़ रहा है

त्रयके काल धनु पर

शावक जग नित चढ़ रहा है

वह नहीं कहीं दब सकता है

जो बल रखता है मु ठका

है रघुवंश आन का पूरा है

कर देगा चुरा दु टका

मेघनाथ से बाण छोड़ कर ले अब यह बाण

तेरे लिए

मौत का पैगाम लाया है

मेघनाथ से औ दु देख यह तो खाली जाता

है

हनुमान का आगे आना

एक पुरुष मेघनाथ से कहिए महाराज लड़ाई का या

हाल है आपका तो शरीर जख्म से बेहाल है

मेघनाथ एक पुरुष से ऐसा कौन सा उपाय है

जो म   अपनी ओर से ना कर रखा हो किंतु इस

लड़के ने तो

पेज नंबर 155 रामायण 150

नाक में दम कर रखा है

एक पुरुष मेघनाथ से हे महाराज इस शि तबाण को

या धो धो कर पियोगे

या देख देख कर जिओगे

मेघनाथ एक पुरुष से इसको भी कई बार काम में ले

चुका हूं

और अच्छ तरह से अजमा चुका हूं

एक पुरुष मेघनाथ से इसमें तो पाया जाता है कि

इस वि   याका उस्ताद है

मेघनाथ एक पुरुष से उस बेचारे की तो   याबुनियाद

है

पर हनुमान को इसकी रोकथाम याद है

एक पुरुष मेघनाथ से हे महाराज हनुमान को दूर

करना मामूली बात है

मेघनाथ एक पुरुष से तो मैदान हमारे हाथ है

एक पुरुषऔर हनुमान की लड़ाई अंदर चले जाना

मेघनाथ से आग लगाकर बाण हाथ में

राधेश्याम

अब तक म खेल खलाता था

अब खा जाने की बारी है

इस शि तबाण का रूप धार

आ पहुंची मृत्यु तु हारी है

यह हम शि त है हमा की

जो देवलोक से पाई थी

जिस समय इं को जीता था

उस समय हाथ में आई थी

इसका मारा बेसुध होता

दिन उगते ही प्राण गवाता है

यूं ही तन पर पड़ती है

तन मृत्युतु य हो जाता है

इसलिए संभल औ रघुवंशी

तु आज न बचने पाएगा

बाण छोड़ कर

यह इं जीत भूमंडल पर

अब जीत कहलाएगा

मेघनाथ से राधेश्याम कितने भी आज

पतित हो तुम

पर । मष्वंश तु हारहै

यह मश्रा ि तका आदर है

जिस से सिर झुका हमारा है

अ यथतु हारीताकत को

मिट्टी धूल कर देते

होता न प्रश्न । मष्का तो चकनाचूर कर देते

याचिंता है हमफांस वारा

यह `त्रीयहारा जाता है

फिर चमकेगा कुछ घ ड़यमें

अब चं ग्रहणआ जाता है

का गिरना

मेघनाथ का उठाने का प्रयतन

मेघनाथ को उठाने की कोशिश करते हुए

हाथ लगा कर

उठाना चाहता हूं पर उठाया नहीं जाता है

मृतक शरीर है या कोई धोखा नजर आता है

मेघनाथ चला हंस कर इस मिट्टी को ले जा कर   या

करुंगा विजय शंकर की हा हा हा

मेघनाथ का चले जाना   श्यचालू

हनुमान का आना   से

है विधाता यह   याकर दिखाया सारी आशाओं को

एकदम

मिट्टी में मिला दिया

अब भगवन के सामने

यामुंह लेकर जाऊंगा

को उठाना

पर्दा खोलना   श्य

राम सुग्रीवअंगत जामंत सब खड़े है

रामा दल

में प्रवेश हनुमान का

राम हनुमान से हनुमान यह   याहै   को

याहो गया

हनुमान राम से भगवन भा फूट गया आशाएं सब

साथ छोड़ गई तकदीर धोखा दे गई

दोहा बैठते थे जिनके सहारे वह सहारा गिर गया

नाथ आशाओं पर अपनी आज पानी फिर गया

मूर्छा

रामा दल

राम का सिर जांग पर रखकर

ए याभाई ऐसी विपति

के समय में ऐसी ही बेवफाई आ खजिस बात से

डरता था

वही आगे आई

विभीषण राम से का हाथ पकड़कर भगवन

मेरे ख्याल में तो सही सलामत है

और उनके चेहरे की बड़ी अयामत है

राम का गाना विलाप

ऐ वीरन जाग जरा

तुझे कैसी निं आई है... टेक

औ कहां लगी ताशि त

जो प्राण हरण का बल रखती

किसने की है इतनी भक्ति

जो तुम से लड़ जय पाई है

म देख तेरे इस को

रावण को करूं या को

दे दिया था राज विभीषण को

यह वाणी झूठ कराई है

वीरन जाग जरा

म किस तरह अवध में जाऊंगा जाकर याmुंह

दिखाऊंगा

किस किसको यासुनाऊंगा

नारी हित खोया भाई है

वीरन जाग जरा

चेहरा तेरा हो गया रे मंद

विपदा में पड़ गये रामचं

उठ रे भैया हो जावे आनंद

श्री चंद ने कीर्ति गई है

वीरन जाग जरा

तुझे कैसी नि आई है

नाटक

राम से के मुंह पर हाथ फेर कर
यारे

पेज नंबर 157 रामायण 152

उठ जाओ अब तो बहुत सो चुके हो रो कर अफ़सोस
भैया तु हारेहाथ-पांव तो ठंडे हो चुके ह
चूम कर ओ याभोई कर चले हम से
जुदाई
और मेरी आंख का नूर हो गया
हाय मेरे जीवन के सहारे करो दीदार मेरी हालत जार
जार रो रही ह
जिनके लिए म रोता हूं
वह तो गहरी नींद सो रहे ह
न करवट लेते ह ना किसी बात का देते ह
का मुंह चूमकर मेरे वीर तुझको किस दु ट
की नजर खा गई जो ऐसी की घड़ी आ गई

सुग्रीव राम से भगवन कुछ धैर्य करो रोने को कौन
नहीं रो सकता
किंतु इस प्रकार जीवित नहीं हो सकता

इसलिए सोच समझकर इनका इलाज कीजिए
और इस रोने धोने को जाने दीजिए

राम सुग्रीव से और किस का इलाज और किस की दवाई

ने तो अभी तक आंख भी नहीं खलाई

वो अ याईमेघनाथ तेरा वार चल गया

और को घायल कर के जीवित निकल गया

वो रावण

तेरे घी के दीपक जल गए

और काल के दूत तेरे सिर से टल गए

रोकर ओ यारीसीता

अपने छुटकारे की आस छोड़

और रावण की कैद में दिन तोड़

हे सुग्रीव जाओ और अपना राज संभालो

वीर अंगद तुम भी जाओ

और अपने चाचा के राजकाज में हाथ बटाओ

यारविभीषण म नो लंका का राज दिलाने का

वचन दिया था उसको म पूरा करने से लाचार हूं

इसलिए मामांगने का मोहताज हूं

विभीषण राम से अगर जी ठ क्हो जाए तो

एक लंका   याहजार लंका

इसी जगह कुर्बान कर दूं

राम हनुमान से यह कौन खड़ा है हनुमान

हनुमान रोकर हां कृपा निधान

राम हनुमान से भाई रोते   यहो परमात्मा की

इच्छा पूरी हो गई किसी का   यादोष है

मेरी किस्मत ही सो गई

हनुमान राम से रोककर भगवन निसंदेह म

गलती खा गया और रा   स के धोखे में आ गया

तलवार ले कर लीजिए

भगवन मुझे भी   के बराबर सुला दीजिए

राम हनुमान से नहीं   याहेनुमान यह कलंक मुझ

पर न लगाओ तु   हाराकोई कसूर नहीं

राम   से गाना उठ जाग मुझे पहचान रे

बीर बीर बीर

तुम   बन्हें   कौन बनावे

धीर धीर धीर

टेक

टुक आंख खोल हे भाई

तुझे नींद किधर से आई

तज कर सब गट अमीरी

ली मेरे साथ फकीरी

था यह मिलाप आ ख़री

था इतना सिर सिर सिर

तुम बन्धे धीर धीर धीर

तुम तोड़ मेरे से नाता

कहां चल दिए मेरे ाता

जब सुनेगी म अपनी माता

लगेगा तीर तीर तीर

मांगेगा राज विभीषण या

जवाब दूंगा रे

बर्बाद कर गया दुश्मन दु ट

वे पीर पीर पीर

अभी भरत ने मिलने आना

उनको तो मिल कर जाना

मेरी आंख में नहीं पाना

तब तक नीर नीर नीर

तुम बच्चे वीर वीर वीर

सुग्रीव राम से भगवन युद्ध में लड़ना मरना मारना

घायल होना

एक मामूली सी बात है

किंतु स्त्रिय की भांति

रोना-पीटना वाहियात है

आप धैर्य रखो अब

जी को जीवित कराएंगे

और विभीषण जी को

लंका का रा यदिला दिलाएंगे

राम सुग्रीव से राधेश्याम

वनवास मिला था जब म ने

तो ऊबल उठा था भाई यह

भाई की सेवा के लिए

तैयार हुआ था भाई यह

म नौ मां की आ ासे

शाही पोशाक उतारी थी

पर इसने याभाई पर

महल को ठोकर मारी थी

राम से गाना

परदेसिय सेनाअ खयमिलाना

मेरे याभइया तेरा ऐसे में में जाना

सह न सकेगा ये सारा जमाना टेक

युद्ध में तू ना जा मना बार बार किया था रोका था

तुझको

इनकार किया था.

पेज नंबर 159 रामायण154 याइसलिए पहना

तुने फकीरी ये बाणा

मेरे भैया तेरा

पूछेगी माता तेरी याम बताऊगां रास्ता बता दे

मुझे किधर को म जाऊगां

पूछेगा ाताभरत करूं याबहाना

मेरे भइया तेरा

माता ने मुझे उपदेश दिया था

चुमा था माथा तेरा यारकिया था

तीन जा रहे हो तूम अकेला नाआना

मेरे भइया तेरा

चलते समय तूने इरादा किया था साथ निभाने का

वादा किया था

किए हुए वाद को कभी न भुलाना

मेरे भइया तेरा जाना

वन में जब से हम तीन मिले थे तरह तरह के फूल

खले थे

सह नहीं सकता हूं म

इनका मुरझाना

मेरे भइया तेरा जाना

नाटक

राम   पर विलाप कर

हाय अफसोस मेरा रोना धोना चि   लानासब

बेफजुल गया

चूमकर हे

तुम जुबान को तो हिलाओ

और मुझे एक बार

भाई कहकर तो बुलाओ

सीर हिला कर

औ मेरे   यारे

तुझे मेरी अवस्था पर तरस नहीं आता

इस प्रकार यदि किसी बेैरी के पास जाता और

जाकर चि   लाताती कुछ न कुछ तो जरूर बकवास

लेता

औअपतलक गज र   तार

मुझ पर परमेश्वर की मार

शस्त्र को फेंक कर जाओ जाओ चू   हेमें पड़ो तुम

जब समय पर तुम काम ना आए

तो कौन मूर्ख है जो तु   हाराबोझ उठाए फिरे

नहीं नहीं अभी नहीं

भाई का बदला लेकर छोड़ूंगा

और कपटी मेघनाथ का अच्छ तरह अभिमान

तोड़ूंगा

औअत्याचारी मेघनाथ

अब समझ ले तेरा काल

तेरे सिर पर मंडरा रहा है

सुग्रीव राम से भगवन जरा तबीयत को संभालिए

प्रथम तो   की दया से तंदुरुस्त ह

यदि मान भी लो आपका ख्याल दुरुस्त है

फिर रणभूमि में हुआ ही   याकरता है

या तो शत्रु को मारता है या खुद मरता है

फिर जी की ओर से आपका यह मि या

ख्याल है

और ऐसी अवस्था में जीत का मुंह देखना

मुहाल है

राम सुग्रीव से हां भाई ऐसा कौन है जो उपदेश करना

नहीं जानता हो परंतु ऐसा कोई है

जो दूसर का दुख अपने जैसा जानता हो

कल तुम ही बाली के मृतक शरीर पर धाएं मार मार

कर रो रहे थे

परंतु वह समय तुमको याद नहीं हे सुग्रीव

जैसा भाई तो

दुनिया में दीपक लेकर ढूंढने से भी नहीं मिलता

यारे एक बार तो मुंह से कुछ बोलो

यारे

दोहा कोई कहता दीवाना

कोई कहता है सौदाई

म सब से यही कहता हूं ठ क्है भाई

विभीषण राम से भगवन आपको विश्वास है

कि यह रोने धोने से कोई संतोषजनक परिणाम होगा

अथवा जी को खुद आराम होगा

राम विभीषण से हे यारे विभीषण इस बात को कौन

नहीं जानता

पर याकरुं मन ही नहीं मानता

पर आप ही कुछ धीर बधाएं

विभीषण राम से लंका में एक सुषेण वै यविख्यात

नाम का

है अपने

वह औषध पूर्ण जानता है

सब भांति का काम है अपने

मेरा जाना तो ठ कनहीं

जा कर आने में दुविधा है

जो लंका से परिचित हो

वही उसे ला सकता है

राम हनुमान से यारे हनुमान जी इस समय और

कौन जाएगा

और यह कठिन काम किसी के

बस में नहीं आएगा

हनुमान राम जी जैसी आ ाहो प्रभु

पद के अंदर से हनुमान जी का सुषेण वै   यको लाना

सुला देना

राम का गाना

उठ ना जरा ए वै   यजी

बेड़ा मेरा जाता बहा टेक

उठिए जरा कृपा कीजिए तेरे चरण में सिर रखा है
मेरे दिल में चोट लगी दुख मेरे से ना सहा है उठना जरा ऐ वैध

मांगेंगे राज विभीषण   याशीश म दूंगा रे
सीता जी रहेंगी कैद में झूठा मेरा वादा रहा उठना जरा वै   य..

यहां लाने का आपका
यही मतलब है वै   यजी
श्रीराम ने तेरे यूं चरण का अंगूठा गहा उठना वै   य जी ....

पेज नंबर 161 रामायण 156

नाटक

सुषेण वै   यराम से म कहां आ गया हूं
मुझे यहाँ कौन लाया है
म तो लंका में सोया हुआ था

तुम बोलते य नहीं

राम सुषेण वै यसे हे वै यराजजी आप रामा दल

में आए हुए ह

आप डरिए नहीं हमने आपको बुलाया था

मेरे भाई बेहोश है

आप नाड़ी देख दवा बूटी कीजिए

वै यसुषेण राम से राधेश्याम

म वै यदशानन के घर का

किस तरह यहां का काम करूं

गलत होगा यदि बैरी को लंकापति के आराम करूं

जिसमें प्रत्य बुराई है

वह कैसे किया जावे

हे राम आ ।देते हो तो

इस समय किया जावे

राम सुषेण वै यसे जिस हेतु निज राज गया

जिसमें पृत्त देव का मरण हुआ

जिस प्रिय भरत झूठा

सीता यारीका हरण हुआ

उस पर भी मर जाए तो मर जाए

आवाज यही होगी अपनी हां ना किसी का जाए

सुषेण वै यराम से राधेश्याम हे नाथ चर्चा की थी

केवल इस समय परी ाको

अ यथद्दास तो करने आया है स्वामी की सेवा को

प्रभु सचमुच है अवतार

म पाकर हुआ

मेरा जड़ जीवन जड़ शरीर

इन श दसे चैत यहुआ

सुषेण वै य की नाड़ी देखकर

राम सुषेण वै यसे य वै यजी उ मीद्है या

ब कुआशा नहीं

सुषेण वै यराम से अवस्था तो अच्छ है

किंतु जिस औषध की जरूरत है वह मेरे पास नहीं है

राम सुषेण वै यसे वह कौन सी औषधि है

संभव है खोज करने से मिल जाए

सुषेण वै यराम से गाना

ना मेरे बस की बात ना मेरे पास दवाई टेक

कहते मुनि रे मुनि वै यपुकारा

न कोई दीखत वहां जावन हारा

वह तो सात सौ कोस बताई

ना मेरे बस की बात ना मेरे पास दवाई

पेज नंबर 162 रामायण 157

कोई बलि रे तुम ज दीले जाओ

दिन निकलने से पहले रे आओ

देना ना सूरज दिखाई

नाम मेरे बस की.....

वह ऐसी है बुटी ना गोटे से ऊंची

कली-कली रे भवरा रस सींचे

देती है जगती दिखाई

नाम मेरे बस की बात...

सुषेण वै यराम से राधेश्याम सूरज उगने से पहले

ही

मिल जाए जड़ी तो संजीवन है

अ यथअसंभव है उतना

विष ने निज किया तन है

अत्यंत दूर है औषध वह

आ सकती नहीं रात ही में

ऐसा कौन है योद्धा यहां

जो लाए इसे रात ही में

राम हनुमान से गाना   लावणी

हनुमत बोले नैया डोले

तू ही लगा दे पार रे

बूंटी लाओ बचाओ भैया को टेक

न जाने किस बैरी ने ये ऐसा बाण चलाया है

आधी रात बीत जाने को

अब भी होश न आया है

भैया ना बोले बाण विष घोले अब तू ही सुन ले पुकार रे

बूटी लाओ......

तेरा गुण ना भूलो जो

तूने साथ निभाया रे

युग युग में तेरी पूजा रे होगी

तूने ऐसा नाम कमाया रे

ज   दीतैयार हो ले लंका से पार

होले

तेरी र   ।करेगा करतार रे

बूंटी लाओ......

हनुमान सुषेण वै   यसे राधेश्याम

भूतल में हो या नभ में हो

में हो या सागर में हो

लाएगा दास अभी उसको

चाहे हो मके घर में

बतलाओ उसका रंग रूप

किस ठोर हाथ वह आएगी

रघु राई अगर सही है तो

रात रहे आ जाएगी

पेज नंबर 163 रामायण 158

सुषेण वै यहनुमान से राधेश्याम अच्छा बलवीर

बढ़ो आगे

तुम लाओगे औषध वह

में जो ोणगिरीहै

उस पर पाएगी औषध वह

संजीवनी उसको कहते ह

जवाला की भांति चमकती है

यदि भोर तक नहीं आई तो

जान नहीं बच सकती है

हनुमान सुषेन वै यसे या तो बुंटी लेकर ही आऊंगा

नहीं तो तु हें नहीं दिखाऊंगा

रावण का दरबार

रावण गाना सुनने के बाद

रावण सभा से वाह वाह आज तो आनंद आ रहा है

बेटा मेघनाथ तू वास्तव में

बलधामं है को मारना तेरा ही काम था

अब राम अकेला याकरेगा स्त्री और भाई के

वियोग में सर मरेगा हा हा हा हा हा हा

मेघनाथ रावण से अभी याहै देखते जाइए पिताजी

एक एक की छाती को

किस प्रकार तोड़ूंगा

जितने लंका पर चढ़ आए ह

उ हेंएक भी जीवित नहीं छोड़ूंगा

रावण मेघनाथ से य नहीं मुझे तुमसे यही आशा

थी

दोहा युद्ध में करके पराजित

एक दिन राम को

है मुझे विश्वास पुरा

रोशन करेगा मेरे नाम को

दूत रावण से महाराज की जय हो रामा दल में

के रोग का उपचार किया जा रहा है

दूत रावण से हां महाराज संजीवनी बूटी लाने के लिए

हनुमान ोणगिरि पर जा रहा है

यदि हनुमान प्रातकाल से पहले बूटी ले आएगा तो

जीवित हो जाएगा

रावण कालनेमि को याद करना कालनेमि का हाजिर होना

रावण कालनेमि से देखो कालनेमि तुम लंका के

पुराने हितेषी और आ ाकारीहो

इसलिए ज दीजाओ और कपट धोखे का जाल

बछाओ

हनुमान संजीवनी लाने के लिए ोणगिरि पर

जा रहा है

तो मार्ग में पहुंचकर

कोई मायावी जाल फैला

जिससे वह पर ना पहुंचने पाए और सूर्य

निकल आए

कालनेमि रावण से जैसी आ ाहो महाराज

पर्दा गिरना

कालनेमि दंगल से हां ोणाचल पर जाने का रास्ता यही है

म अपनी माया से साधु का भेष बनाकर अपना आसन जमाता हूं

साधु का वेश बनाकर बैठना

कालनेमि भि तकरते हुए राम राम राम राम राम

साधु करुणा का भंडार तू ही निराकार तू ही जीवन का आधार

हनुमान का दंगल से आना मंच पर आकर दंगल की तरफ मुह करना

ओम यास बहुत लग रही है

सामने किसी मुनि का

सुंदर आश्रम है

चलो और वहां जाकर जल पीऊं

कालनेमि हनुमान को आते देखकर जय कौश या जी श्री रामचं की जय संकट मोचन पतित पावन भगवान की जय हो

हनुमान कालनेमि से हाथ जोड़कर प्रणाम मुनिवर

कालनेमि हनुमान जी चिरंजीव रहो क याणहो

हनुमान कालनेमि से मुनिराज आजकल रावण राम
संग्राम हो रहा है उसका यापरिणाम होगा

कालनेमि हनुमान जी हां यह संग्राम म यह ान
ि से शता दीदेख रहा हूं
निसंदेह राम की जीत और दु टका संहार होगा

हनुमान कालनेमि से हो महाराज अच्छा
मुनिवर
मुझे यासलग रही है कुछ जल हो तो मेरी यास
बुझा दीजिए

कालनेमि हनुमान से कमंडल देकर इस में से कुछ
जल है
लो इसे पीकर अपनी यासबुझा और फिर उपदेश
लो

हनुमान कालनेमि से हे मुनिवर इस थोड़े जल से मेरी यास्नहीं बुझेगी

कालनेमि हनुमान से अच्छा तो सामने सरोवर है
उस पर चले जाओ और अपनी यासबुझाओ
परंतु लौट कर आना गुरु और मंत्र लेते जाना

हनुमान का पद के पास पहुंचना डंकनी का पाव पकड़ना

पेज नंबर 165 रामायण 160

हनुमान ह ह मेरे पांव म कया चिपक गया

हनुमान का पांव मारना असली रुप में डंकनी

डंकनी हनुमान से हो राम हनुमान तुम हो

हनुमान डंकनी से तुम कौन हो यहा किस प्रकार आई हो

डंकनी हनुमान से हे नाथ म की अ सरहूं
मुनि के श्राप से डकंनी बनकर इस तालाब में पड़ी हुई थी
आज मुझे आपके चरण छू कर

मेरा क   याणहो गया

दे   खमहाराज यह मुनि नहीं है

यह रावण का भेजा हुआ रा   सहै जो आप के मार्ग में

बाधा डालने के लिए मुनी का भेष बना कर आया है

आप इससे सावधान रहें

और अब म तो अपने लोक में जाती हूं

हनुमान कालनेमि के पास पहुंच कर

कालनेमि हनुमान से आओ हनुमान बैठो म तु   हें

गुरु मंत्र देता हूं

हनुमान कालनेमि से नहीं महाराज पहले गुरु

द   णले लीजिए और फिर उपदेश दीजिए

हनुमान का कालनेमि को मु   कामारना कालनेमि

का हनुमान को कालनेमि का गर्जना

कालनेमि हनुमान जी अरे म तो मर गया दु   टका

साथ दे कर

मूर्छा रामा दल

राम   से उठो भाई गले से लग   दुख सहा नहीं

जाता है

आंख से आंसू बहे मन में संतोष नहीं पाता है

मेरे जीवन के सहारे

मेरी कामनाओं की तस्वीर तुम कहां हो

तु   हारावह सच्चा प्रेम कहां है

सहन संकट किए दुनिया के वास्ते तूने चूने ह फूल

की जगह कांटे मेरे वास्ते

औह रात भी पंख लगाए दौड़ी जा रही है

न जाने इसे   यामौत खा रही है   य   य रात

होती जाती है तो सूर्य देवता तू संसार के वास्ते

प्रकाश लाएगा

परंतु तेरे उदय होते ही   सदा की नींद सो

जाएगा

परमेश्वर के वास्ते कुछ तो यतन बना ले

और थोड़ी ही देर के लिए अपने आपको कहीं छुपा ले

अ   यथआपकी गति का यही हाल रहा तो हनुमान

जी का सही   पर पहुंचना   मुहाल है

पर्दा

हनुमान बूंटी लेकेआना

अयो या

भरत श्यआरंभ हनुमान पहाड़ उठाया ना

भरत मन में यह कोई रा सहै जो पहाड़ उठाए जा

रहा है यह अयो यापर ना डाल दे

पेज नंबर 166 रामायण 161

अब म अपना कुशल बाण मारता हूं

बाण का मारना

हनुमान भरत से हाय राम मुझे माकरना म सही

पर नहीं पहुंच पाउंगा

भरत घबराकर हनुमान जी आप कौन ह

राम का बड़ी भूल हुई

ऐ विधाता याम सारे जीवन

राम से बैर करता रहूंगा

रोकर यदि म मन से प्रभु के प्रति सच्चा यार

रखता हूं

तो आप इस बाण की चोट से मु तहो जाएं

और सारी थकान खो कर राम का हाल सुनाओ

उठो एक बार फिर बोलो

हनुमान भरत से जय कौश यधीरज भगवान श्री रामचं की जय

भरत हनुमान से जय कोटि-कोटि बार बार जय कहो कपि राज तुम कौन हो
यह उठाए कहां जाते हो
हनुमान भरत से कुछ ना पूछो महाराज इस समय रामा दल पर बहुत संकट आया है
मेघनाथ के शि तबाण से
मूर्छित हो गए ह
म उनके लिए संजीवनी ले जा रहा हूं
अब लंका की ओर जा रहा था ए ेतात म कि कंधा नरेश सुग्रीव का मंत्री पवनसुत हनुमान हूं

भरत हनुमान से हे देव में कितना अभागा हूं म ने संसार में ही य लिया
भरत हनुमान से हे कपिराज तु हेंजाने में देर लगेगी इसलिए सहित मेरे बाण पर चढ़ जाओ
और तुरंत लंका में जाकर प्रभु का संकट मिटाओ

हनुमान का बाण पर पांव रखना

हनुमान भरत से नहीं महाराज म आपके प्रताप से बाण समान ही जाऊंगा और प्रभु के वास्ते पवन बनकर जाऊंगा

भरत हनुमान का श्यसमा त

रामा दल

मूर्छा चालू

राम से गाना

नैया तो रे भैया लोट चली मझेदार टेक
नल नील अंगद सुग्रीव तुम य हो बेजार
अपने अपने जाऔ वतन को अवध पति गया हार
नैया तो रे भइया ढुब चली मझदार

विभीषण को दिया राजतिलक और झुठा हुआ करार
निशचर कुल की जीत हुई और हुई हमारी हार
नैया तो रे भइया.....

रघुकुल को दाग लगा और जीने को धि कार

एक औरत के वास्ते भाई का हुआ संघार
नैया तो भैया...

अशोक बाग में जनक दुलारी मर जाएंगी मार

दोन भाई साथ जलेंगे करो चिता अब तैयार

नैया तो भैया.....

दोहा अकेली लकड़ी ना जले ना उजाला हो

भाई मार के राम आज अकेला हो

राम से दोहा राधेश्याम

ही नहीं जब

तो जीने से याकाम

बंधुवरो तुमसे विदा होता है

अब यह राम

इतना करना हम दोन की छातियां मिला देना भाई

एक ही में दोन को कसकर लिपटा देना भाई

यदि चिता बनानी मुश्किल हो तो जल में यहां वहा

देना

जलनिधि की ठंडी लहर में दोन को साथ सुला देना

दोन के रुधिर से इतना लिख देना सागर के तट पर

भाई भाई की यादगार है इसी सागर के मरघट पर

यशवंत सिंह राम आकाश की ओर देख कर

सुग्रीव जी ऐसा प्रतीत होता है सूरज निकलने वाला है

य पूर्व में उजियाला है

ओ ग वीसूर्य जरा ठहर नहीं तो गजब हो जाएगा

सुग्रीव राम से नहीं भगवन ऐसा याअंधेर है सूरज

निकलने में अभी बहुत देर है

राम से रोकर बोलो बोलो कुछ अब

मुंह से बोलो हां म याजानता था कि

वन में भाई का वियोग होगा

यदि म यह जानता तो पिता के वचन को कभी नहीं

मानता

दोहा बुरा बन कर ही जी लेता

सहन करता बुराई को

जगत की गालियां सहता

मगर खोता न भाई को

सुग्रीव राम से हनुमान को आते देख कर

दे खभगवन हनुमान जी चले आ रहे ह और बड़ी

शी तासे कदम बढ़ा रहे ह

हनुमान का पहुंचना सभी वानर प्रस न्होकर

बोलो पवनसुत हनुमान की जय

हनुमान राम से प्रणाम भगवन

राम हनुमान से हो केसरी नंदन तुम हो

म आज तु हेंवरदान देता हूं

कलयुग में तु हारीघर घर में पूजा होगी

वै यसुषेण बूटी लेकर के मुंह में पिसकर

डालना का होश में आना

का खड़ा होना भाई से घले मिलना

आठवां दिन शुरू

पेज नंबर 168 रामायण का पेज163

रावण का दरबार मेघनाथ परहसत मंत्री

रावण मंत्री से महा मंत्री दरबार में गाना पेश करो

मंत्री रावण से जैसी आ ाहो महाराज गाने वाली

अ सरद्दरबार में हाजिर हो

रावण सभा से हा हा हा लंका की सान भी या सान

है

दोहा बन चुके ह दास मेरे सब

रंक से चौपाल तक

जां गड़ी है नीव मेरी

रा   यकी पाताल तक

सामने जो आ गया

फोरन मसल डाला गया

सिर उठाया जिसने

उसका सिर कुचल डाला गया

हा युद्ध भी चलता रहे

और आनंद का दरबार भी लगा रहे

रण के बाजे भीे बजे

पायल की झंकार भी .

वाह संगीत   याजादू है

दूत आकर रावण से महाराज की जय हो

महाराज   की मूर्छा खुल गई है अब शत्रु फिर

युद्ध की तैयारी कर रहे ह

रावण दूत से   याकहा मूर्छा खुल गई

दूत रावण से. हां महाराज

रावण सभा से औ   हो गया सब बना बनाया

काम अब   बगड़ाया

मेघनाथ रावण से पिता जी कुछ परवाह नहीं जिन

बुझाऔ ने उसे मूर्छित किया था वह भुजाएं अब उसे

सुरपुर पहुंचा देंगीे

रावण मेघनाथ से पहले मुझे कुछ सोचने दो सब

लोग जाओ और आराम करो

सबका चले जाना

रावण अकेले हां अब   याकरूं

और आए हुए संकट को कैसे टालू बस बस अब

उचित यही है कि कुंभकर्ण के शयन गृह में जाऊं

और उसे जगा लाऊं

यदि युद्ध भूमि में चला गया तो सबको काल समान

खा जाएगा

पर्दा गिरना

कुंभकरण का महल

रावण मंत्री से महामंत्री आप कुंभकरण को जगाओ

जिस तरह हो सके ज दीजगाओ

महामंत्री रावण से जैसी आ ाहो महाराज

महामंत्री कुंभकरण से महाराज ज दीजागिए

लंकापति तशरीफ ला रहे ह

चाचा कुंभकरण ज दीउठो महाराज आए हुए ह

रावण मंत्री से उसको ढ़ोलक बाज से जगाओ

नहीं जागे तो हाथी उसके नाक में भर दो

कुंभकरण अंगड़ाई लेकर पानी लाओ मदिरा लाओ

खा पीकर डकार ले कर

वह पापी कौन है जिसने मुझे कच्ची नींद से जगाया है

रावण कुंभकरण से हे भाई मुझ पर महान संकट आया है

इसलिए तुझे जगाया है

कुंभकर्ण रावण से कौन रावण

कहो भाई ऐसी याआपत्ति आई जो तु हारीदशा

कितनी मलिन बनाई

रावण कुंभकरण से कुछ ना पूछो भाई

आजकल म संकट में हूं

अयो यके दो राजकुमार ने सूर्पनखा की नाक काट

कर घोर कर डाला

जब खर दूषण बदला लेने गए तो उ हेंभी मार डाला

कुंभकर्ण रावण से यह तो बड़ा हुआ फिर तुमने

याकिया

रावण कुंभकरण से जब राम ने अधिक

कदम उठाया

तो म राम की स्त्री जानकी को चुरा लाया

कुंभकर्ण रावण से राधेश्याम

य गई वहां सूर्पनखा

याकाम भला था जाने का

कोई तो कारण होगा

लड़क से नाक कटाने का

पेज नंबर 170 रामायण 165

इस बे मतलब के झगड़े में

लंका की सत्यानाशी है

भाई अब तिथियां   यागिनते हो अपनी भी पूर्णमासी है

यशवंत सिंह अरे भाई साहब तूने यह बहुत बुरा किया
राज पर कुछ भी   यान्नहीं दिया
जिसे तुम जानकी कहते हो
जगत की जननी जगदंबा है निशाचर का नाश करने वाली सा   ातकालिका है
और स्त्री को चुराना भी अ   याय्है पाप है

रावण कुंभकरण से तो तुम इतने कायर हो गए हो की
भाई के शत्रुओं की बढ़ाई करने लगे हो

कुंभकर्ण रावण से बड़ाई नहीं सच्ची बात है
नारद जी ने मुझे उपदेश दिया था कि जब तुम
परनारी चुरा कर लाओगे
तो रा   स का नाश होगा

रावण कुंभकरण से मालूम होता है कि मांस मदिरा नहीं मिलने पर तु   हारीबुद्धि ठिकाने नहीं आई

मंत्री से मंत्री जी इसे मांस मदिरा में डूबा दो

कुंभकरण खा पीकर रावण से   कर

अरे भाई तू   य घबराता है

देख अब युद्ध में शत्रुओं का काल जाता है

कुंभकरण का जाना

पर्दा गिरना

रामा दल

राम   सुग्रीव अंगद विभीषण.   नल नील

विभीषण राम से भगवन आज के युद्ध को

साधारण युद्ध ना समझीए

बि कएक महा प्रलय की घड़ी है

सुग्रीव विभीषण से आप कुछ चिंता न करें

और मुझे उस के मुकाबले पर जाने की आ ा दीजिए

राम सुग्रीव से आप इस हट को जाने दो और

कुंभकरण से मुझे ही हाथ मिलाने दो

सुग्रीव राम से आ   ख कुंभकरण कोई खुदा तो नहीं

यदि ऐसी अवस्था हुई तो

आप भी हमसे जुदा तो नहीं

पद पर कुंभकरण का ललकारना

कुंभकरण तलवार निकाल कर जरा सामने आओ वह कौन काल का अभिलाषी है मेरी तलवार भी मु तसे यासीहै

सुग्रीव कुंभकरण से जरा आगे आ ताकि तेरी यास बुझाऊं

पेज नंबर 171 रामायण 166

कुंभकरण सुग्रीव से तुभी बोलने को मरता है उ लू कहीं का

सुग्रीव कुंभकर्ण से मरने के लिए तैयार हो जा य यादाअकड़ता है

दोन की लड़ाई सुग्रीव का मूर्छित होना

हनुमान कुंभकरण से ठहर ठहर कहां जाता है

कुंभकरण हनुमान से य अपने काल को बुलाता है यातू भी सुग्रीव के पास पहुंचना चाहता है

हनुमान कुंभकरण से अरे कायर किस करतूत पर इतना अकड़ रहा है

और एठ एठ कर बातें कर रहा है

दोन की लड़ाई हनुमान का मूर्छित होना

अंगद राम से हे भगवन कुंभकरण गजब ढा रहा है

जिस तरफ बढ़ता है मैदान साफ करता जा रहा है

राम अंगद से निसंदेह कुंभकरण एक प्रत्य   काल है

परंतु जो कुछ करना था कर चुका है बि क्कुंभकरण

को अब जिंदा न समझो वास्तव में वह मर चुका है

कुंभकरण राम से आओ मरने वालो े अब जरा

कुंभकरण के मुकाबले पर आओ

इधर उधर ना छिप कर जान बचाओ

राम कुंभकरण से आगे बढ़कर बस खड़ा रह आगे

कहां आता है

कुंभकरण राम से हंसकर छोटी उमर और इतना

साहस

न   हासा बालक और कुंभकरण से युद्ध हा हा हा हा

हा हा हा

दोहा उड़ा है चांद को पकड़ने देखना

चींटी चली है शेर से लड़ने देखना

राम कुंभकरण से अरे अभिमानी इतने अहंकार में य आता है

आगे बढ़ कर हाथ य नहीं

दिखाता है

कुंभकरण राम से हंसकर हाथ तुझे दिखाऊं हाथ

दोहा बच्च का खेल युद्ध का पासार समझ लिया

याकुंभकरण भी कोई कायर समझ लिया

राम कुंभकरण कुंभकरण तु नहीं जानता साहसी

पुरुष कहते नहीं करते ह

दोहा करना कठिन है

कहना जी हेआसान है

कायर की दुनिया में

बस यही एक पहचान है

राम कुंभकरण से कुंभकरण आज म तेरा सारा नशा

उतार दुगां

याद रख युद्ध में तुझे मारूंगा

दोहा कह दिया जो मुंह से

करके उसे दिखाऊंगा

यह मेरा अटल निश्चय है

पुर तुझे पहुंचाऊंगा

कुंभकरण राम से जरा आगे हो भाग जाने का दांव

लगा रहा है याद रख

दोहा म नहीं बच्चा जिसे

घाट सेतु वह काटेगा

बात कितनी भी बना

ना बच कर जिंदा जाएगा

कुंभकरण राम से अच्छा तो संभल बुजदिल जाने ना

पायेगा

राम तीर छोड़कर अरे ओ पापी यम के   वारेचल

कोई रोने भी नहीं आएगा

पर्दा कुंभकरण का सफाया

रावण का जंगी दरबार

गाने के बाद

रावण सभा से युद्ध दिन-प्रतिदिन भयंकर होता जाता है

परंतु हमारा जीतने में नहीं आता है

देखो आज का युद्ध किसके हाथ रहेगा

और कुंभकरण की कहां तक बात रहगीे

दूत रावण से महाराज की जय हो पृ वीराजअंधेरा हो गया बली कुंभकरण भी गहरी नींद सो गया

रावण दूत से च क्कर याकहा कुंभकरण मारा गया

दूत रावण से हां महाराज

रावण में बस बस निसंदेह अब लंका के बुरे दिन आ गए

जो ऐसे-ऐसे योद्धा काल की गोद में समा गए

मेघनाथ रावण से पिता जी चिंता की याबात है

आज समझ लो मैदान हमारे हाथ है

रावण मेघनाथ से नहीं नहीं अब उन पर विजय पाना कठिन है

मेघनाथ रावण से कठिन किस लिए है

याम बलहीन हो गया हूं

यादेवताओं को परास्त करने वाला बल सो गया है

नहीं पिताजी आप घबराएं नहीं

दोहा कसम है आपकी

म आज वह कोतूक दिखाऊंगा

कि एक चार और फिर चार के सो सो बनाऊंगा

समय बतलायेगा उस

राम का परिणाम याहोगा

प्रलय का नाच होगा

आज का संग्राम याहोगा

रावण मेघनाथ से अच्छा बेटा जाओ

युद्ध में वह कौशल दिखाओ

जिससे त्रलोकीत्राहि-त्राहि बोल जाए

और भय के कारण शत्रु की छाती खुल जाए.

पेज नंबर 169 रामायण 164

मेघनाथ रावण से दोहा म मर जाऊंगा कर दूंगा

कमाल हाथ देखेंगे मेरे राम धरती कर दूंगा

लाल रावण हा हा हा हा हा

राम दल

राम सुग्रीव अंगद हनुमान   विभीषण

राम विभीषण से   यारेविभीषण रावण की ओर से

आज सेना का संचालन करने वाला कौन है

विभीषण राम से भगवन आज फिर मेघनाथ लड़ने

आया है

राम विभीषण से तो आने दो मेरा भी हौसला बढ़ा जा

रहा है

राम से हाथ जोड़कर   ाताजी आज के युद्ध

में

मुझे ही जाने दीजिए

राम   से भाई वह रा   सबड़ा कठोर व

परा   मीहै

तु   हारेकाबू में नहीं आएगा

राम से तो बात ही   याहै आपके चरण की

सौगंध खाकर कहता हूं कि

आज उसे   मारूंगा

और शि   तबाण का बदला

भली प्रकार उतारूंगा

ाधमें दोहा रघुकुल की आन है मुझको
धनुष और तीर की सौगंध
कसम माता सुमित्रा कि
मुझे रघुवीर की सौगंध है

लड़ूंगा विशव शक्ति से
ना -पग पीछे हटाऊंगा
यदि यमराज भी होगा तो
वध करके ही आऊंगा

राम से अच्छा ाता
यदि तुमने प्रण ही ठान लिया है
तो जाओ मेरा आशीर्वाद आपके साथ है
मगर एक बात का यान रखना
राधेश्याम सती प्रमिला सलोचना जो मेघनाथ की
नारी है
तिरू भवन में विख्यात सा वी
है वासु की राजकुमारी वह

इस जगह में श्रेणी की
वह पति ता कहलाती है
उनके त की है शक्ति सदा

स्वामी को विजय दिलाती है

ऐसी सतवंती के पति का सिर

अगर भूमि पर आएगा

कपि दल तो किस गिनती में है संसार हो

जाएगा

राम से अच्छा भैया आपका आशीर्वाद मेरे

साथ है

तो विजय के हाथ है

योद्धा मेघनाथ ....युद्धवीर.

मेघनाथ पद पर आओ ऐ मौत के शिकारो

कौन मरने के लिए आया

जरा तो दिखाएं

मेघनाथ से ललकार कर सावधान अरे

कायर अब भी तू सिर पर छा गया

मेघनाथ से अरे मूर्ख पिछली मार को इतनी

ज दीभूल गया जो आज फिर सामने आ गया

दोहा जिसने बालक जानकर

पहले तुझे मारा नहीं

जिसके आगे काल सा

बलवान भी ठहरा नहीं

मेघनाथ से अरे कायर अब तो कुछ सोच

देख मेघनाथ इधर देख इस धनुष

और बाण को देख

फिर वि ष्णु के वरदान को देख

दोहा तेरह तक भूमि की

सैया पर सोया नही

किया भोजन फल का

विजय पाई है निं मर

किया काम को बस में

लगाई चैन को ठोकर

मिटाया अपने जीवन को

चला सं यास के पथ पर

उठाए इतने है

तब कहीं पूरा प्रण होगा

समझले आज निश्चय ही

तेरा पूरी गमन होगा

मेघनाथ से ओम मूर्ख छोकरे ऐसी असंभव बातें ना बना तू नहीं जानता म विकराल का गला तोड़ा है

मेघनाथ से हो अभिमानी तू नहीं जानता कि फूस की डेरी को एक छोटी सी चिंगारी जला देती है

और एक बड़े वृ को एक छोटी सी कु हाड़ीगिरा देती है

मेघनाथ से दोहा भूमि है यहां बच्च की पाठशाला नहीं
युद्ध का मैदान है
खेल का पाला नहीं

मेघनाथ से ोधमें औ रा सजुबान को लगाम दो और वीर की तरह चोट को रोक

मेघनाथ से अच्छा होशियार हो जा मुझ से मरकर ही जाएगा

मेघनाथ से अच्छा होशियार होजा और मरने के लिए तैयार हौजा
मेरे हाथ से आज मर कर ही जाएगा

दोन की लड़ाई मेघनाथ का मारा जाना

ने मेघनाथ का सिर काटना पड़ता

सती सुलोचना का महल साथ में बांदी

सुलोचना अपने मन में हाय मेरा दिल आज बुरी तरह धड़क रहा है और कलेजा आप ही आप फलक रहा

जिस और मेरी ि जाती है

प्राण यारेकी सूरत नजर आती है न जाने युद्ध का यापरिणाम होगा किस किस बेचारे का काम तमाम होगा

सहेली सुलोचना से यारीसुलोचना आज तु हारा मन इस प्रकार य उदास है

सुलोचना सहेली से याबताऊं जब से वह युद्ध में गए ह

तब से मेरी तबीयत कुछ घबरा रही है

सहेली सुलोचना से तुम ही अपने मन को चिंता में डाल रही हो भला हमारे युवराज से मुकाबला करने की किसकी मजाल है

सुलोचना सहेली से यह तु हारीगलती है

किसी की एक स   मान्नहीं चलती है

आज चढ़ती है तो कल डलती है फिर भी छि   न

भि   न्होकर ही टलती है

चौकं कर.. देखना देखना सामने यहां   यावस्तुओं

गिरी

सहेली सुलोचना से हाय हाय यह तो किसी अभागे

की भुजा है

सुलोचना सहेली से जरा पहचानो तो सही यह

किसकी भुजा है   य   बाण इसमें अभी तक चुभा

है

सहेली सुलोचना से   यारीसुलोचना इसके हाथ में तो

शाही अंगूठ है

सुलोचना रोकर हाय-हाय यह तो मेरी ही तकदीर

फूटी है रोना हे

प्राणनाथ कैसे कटा आपका हाथ मेरा मन तो पहले

ही बैठा जा रहा था और युद्ध का परिणाम दूर से नजर

आ रहा था

बताओ प्राणनाथ यह कैसे हुआ...

हाथ का लिखकर बताना

राधेश्याम शेषअवतार है ल मणलालउनके वारा

संघार हुआ

इस बैर भि तसे मुि तहुई

इस रण कारण उद्धार हुआ

धड़ तो लंका के वारेह

शीश सुर ल रामा दल में

आत्मा अभिलाषी विचल रहा

सुख से अंततः के आंचल मे◌ं

सतवंती उसी से

लंका में योतिजगा देना

कहते ह जिसको पति ता

दुनिया को दिखा देना

सुलोचना हाय प्राणनाथ में जरूर जाऊंगी और

आपका सिर लाकर आपके साथ सती हो जाऊंगी

सुलोचना का गाना भुजा हाथ मे लेकर

कैसे बताऊं कैसे सुनाऊं दुखड़ा

मेरे प्राणनाथ

सूरत दिखाओ यह तो बताओ काटा किस जालिम ने

हाथ

आज सुबह से हो रहे सब ही बुरे सगुन मानो दरो

दीवार बरस रहा है खून

मंडला रही चीले अब विले कल को पड़ी है सारी रात

कैसे बताऊ ऐसे सुनाओ

स्वामी किसके आश्रे छोड़ चले मझधार

देखो तुम मेरी तरफ मेरे प्राण आधार

ज   दीन कीजिए विनती सुन लीजिए मुझको भी ले

चलिए साथ कैसे बताऊं कैसे सुनाओ

बैठे-बैठे सुलोचना की गर्दिश ने

घेर मेरी आंखो में हुआ चार ओर अंधेरा

हे प्राण   यार किसके सहारे छोड़ी दुनिया में अनाथ

कैसे बताऊं कैसे सुनाऊं मेरे प्राण नाथ

संबंधी संसार के हो भली भली के मित्र

साजन किस दोष पर छोड़ चले हो प्रीत

संबंधी सारे तुम   बन यार कोई नहीं पूछेगा बात

कैसे बताऊं कैसे सुनाओ

सलोचना का नाटक हां हां मेरे सिर के ताज मेरी

को लाज

मेरे साथ आपके जो वादे थे

सभी फजूल गए और जाते समय मुझे साथ ले जाना भूल गए हे प्राणनाथ थोड़ा धीरे कीजिए और मुझे माता पिता की आ ालेने दीजिए म आपके साथ चलूंगी प्राणनाथ

रावण का महल मंदोदरी सुलोचना

रावण मंत्री से मंत्री आज मेघनाथ ने ही राम का सिर उड़ा दिया होगा
और झगड़ा सदा के लिए मिटा दिया होगा.....

मंत्री रावण से हां महाराज ही

दूत दंगल म से रावण को रोकर महाराज

रावण दूत से य याहुआ
दूत रावण से रो कर महाराज मेघनाथ युद्ध में मारा गया

रावण दूध से दुख में मेघनाथ मारा गया वह भी घोर अति घोर अ याहुआ

दोहा किस तरह खाया आज यह आकाश ने कर दिया है नाश पुत्र मेरा

आज तेरे नाश ने

मंदोदरी रावण से प्राणनाथ यदि आप नाराज ना हो

तो म भी कुछ करूं

रावण मंदोदरी से नहीं नाराज होने की कौन सी बात

है

शायद तु हारीबात से लाभ उठा लूंगा

मंदोदरी रावण से हाथ जोड़कर प्राणनाथ यदि आप

मेरी बात को मानते ह तो

सीता को अब भी रामचं के पास छोड़ आए

जो कुछ बचा है उसी को अपना माने

रावण मंदोदरी से ऐसे कहने से तो अच्छा था कि

तुम भी कुछ ना कहती

और ब कुखामोश ही रहती शौक तुम भी कुछ

धीरज देने की बजाय

मेरे जख्म पर नमक डाल रही हो और ऐसे कायरता

के मुख से निकाल रही हो

अब पृ वीपर से एक एक का काम तमाम होगा

म प्रति ापूर्वक कहता हूं

कल रामचं पुर का कुंभकर्ण और मेघनाथ जैसा परिणाम होगा

मंदोदरी रावण से हे प्राणनाथ आपका यह गलत ख्याल है
जहां तक म देखती हूं
इस युद्ध में विजय पाना मुहाल है
य सच्चाई उनकी तरफ धार ह

रावण मंदोदरी से ोधमें बस बस चुप रहो अधिक कान ना खाओ
इसी मेरे सामने से चली जाओ मुझे तेरे ऐसे उपदेश की जरूरत नहीं
यदि यादा बकवास की तो समझ ले तेरी भी बचने की सूरत नहीं

दंगल में से सुलोचना का गाना इसी सीन पर आहा मेरे करतार यारे सिधारे
छोड़ मुझे मझधार हाय रे मेरे करतार
युद्ध बीच में माता मेरे स्वामी सिधार गए

विधवा कर गए मुझ दु खयाको ना जीती ने मार गए

लुट गए सब सिंगार हाय रे मेरे करतार

हे माता अब इस दासी का रंज आलम गम दूर करो
शीश मंगा दो मेरे पति का यह विनती मंजूर करो
कर दो अब मेरा उद्धार हाय मेरेे करतार

तु हेंयकीन दिलाने को म भुजा साथ में लाई हूं
सती ह उगसाथ पती के निश्चय कर के आई हूं
अब जीना है बेकार हाय रे करतार

सुलोचना का नाटक मंदोदरी से

माताजी मेरे भा यक्षा दीपक ठंडा हो गया
और आपका पुत्र मुझे दोन जहान से खो गया ? परंतु
हे माता
आप तो सब दुख से आजाद हो गए
मगर आप का बुढ़ापा और मेरी जवानी बर्बाद कर
गए ह
माता जी बस आप इतनी कृपा कीजिए
जिस तरह हो सके मेरे पति का सिर मंगवा दीजिए
ऐसा न हो के साथी दूर निकल जाए और दासी
मिलने ही ना पाए

मंदोदरी सुलोचना से सुलोचना को गले लगाकर बेटी

तुझे धैर्य दू या अपने दु खमन को संभालु

जरा मेरी ओर देखो

म भी बतसें कितने गांव लिए बैठ हु

किस पर याअफसोस है अपने ही कम का दोष है

मरने वाला तो मर गया परंतु साथ मरकर किसी ने

याकर लिया

बेटी हि मतके साथ रह

सुलोचना मंदोदरी से रोकर आपकी कृपा तथा

मेहरबानी की मराकुर हूं परंतु आपकी यह आ ा

मानने से मजबूर हूं

माता जी म अपने विचार को कदापि नहीं बदल

सकती

दोहा मोह के धंधो में फंसकर कैसे छोड़ दूं

यह टूटने वाला नहीं संबंध

में कैसे तोड़ दुं

मंदोदरी रावण से प्राणनाथ सुलोचना बड़ी देर से रो

रही है

और मेघनाथ का शीश मगांने के लिए हट कर रही है

रावण मंदोदरी से उसका सिर मंगवा कर   याकरेगी

मंदोदरी रावण से करेगी   यापति के साथ सती होगी

रावण मंदोदरी से पहले तो इसका विचार ही वहीयात है
दूसरा इस समय सिर का मिलना कोई साधारण बात नहीं
जब तक वह एक सिर के बदले सौ ..पचास.. और सिर और न ले लेंगे मेघनाथ का सिर कोई सहज थोड़े ही दे देंगे

सुलोचन रावण से पिता जी आप इस विषय पर कोई चिंता नहीं कीजिए केवल आ   ।दे दीजिए पिताजी म स्वयं जाऊंगी
और अपने पति का सिर ले आऊंगी

रावण सुलोचना से तो यह   य नहीं कहती
म स्वयं जाकर शत्रु के बंधन में फंस जाऊंगी

सुलोचना रावण से पिता जी यह केवल आपका   म है
सुलोचना को कैद करने की किसको परा   महै

रामचं को आपसे हजार शत्रुता तथा लाख कदुरत है

परंतु फिर भी वह सदाचार की मूरत है

मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह इस अवसर पर कदापि

शत्रुता का विचार नहीं करेंगे

रावण सुलोचना से ोधमें यह तु हारीसरासर भूल

और इस विषय पर हट करना ब कुफिजूल है

तो वहां जाते ही कैद हो जाएगी य इसके वारा

उनको सीता के छुटकारे की पूरी उ मीदहो जाएगी

सुलोचना रावण से मान लो यदि ऐसा ही हुआ तो

मेरी जान मेरे हाथ है फिर चिंता करने की कौन सी

बात है

रावण सुलोचना से जब तू हुजत बाजी से मेरी हर

बात काटती है

तो मेरा मगज य चाटती है

जो तेरे मन में आए कर और

मेरी आंख से दूर हो कर मर

सुलोचना का जाना पर्दा गिराना

श्री रामचं जी का क सम सुग्रीव अंगद

हनुमान

राम विभीषण से विभीषण जी रावण भी कितना

हठधम है

इतना विनाश होने के बाद भी

हट नहीं छोड़ता

विभीषण राम से भगवन वह सदा से ऐसा ही

अहंकारी है

हनुमान राम से भगवन रावण की पुत्रवधू हाजिर

होना चाहती है

राम हनुमान से कोई बात नहीं आने दो

सुलोचना राम से प्रणाम भगवन

राम सुलोचना से खुश रहो देवी अपने आने का

कारण कहो

सुलोचना राम से भगवन मुझे पति देव की भुजा ने

मृत्यु का समाचार लिख कर बता दिया है

और मेरा सारा संदेह है मिटा दिया है

अब म सती होना चाहती हुं

और अपने स्वामी का सिर लेने के लिए आप की

शरण में आई हूं

और मेरे पति का वध करने वाले के करना

चाहती हूं

राम से भैया इनको मेघनाथ का

शीश ला कर देदो

और अपनी भी दिखा दो

सुलोचना से की और देखकर

तू जति है

मेरे पति को जितना तेरा ही काम है

सुलोचना सिर को लेकर हांय नाथ कितने हताश हो

रहे हो चेहरा मुरझा गया है

बाल में धूल भर गई है

कितने थके हुए दिखाई देते हो ....

आंचल से सिर् की धूल पौछना..

सुग्रीव राम से भगवन मेरे मन में एक महान शंका है

यदि आ ाहो तो पुंछु

राम सुग्रीव से हां हां सुग्रीव पुछौ

सुग्रीव राम से भगवन या बन्देह और प्राण के

बन्कटी हुई भुजा कुछ लिख सकती है

राम सुग्रीव से हां सुग्रीव पति बड़ी शि तहै

सुग्रीव राम से यदि इतनी शि तहै तो इनके पति

का सिर हसे तो हमारा सद दूर हो

राम सुग्रीव से .....सुलोचना यदि यही इच्छा करेगी

तो हंसेगा

सुलोचना का गाना आ गया परी ाका अवसर हंस दे

मेरे सरकार कैसे

अटकी है नाव किनारे पर हंस दे मेरे सरकार के सर

हंस दीजिए हे नाथ हस दीजिए नहीं तो मेरा विश्वास

कटता है मेरे पति की महिमा कम होती है या

के बाण ने इतना शिथिल कर दिया है

रोकर हंस दीजिए प्राणनाथ

प्रभु के सामने मुझे लि जतन कीजिए

यदि म सेच्चे मन से वचन से आपकी पूजा की है

तो आपको जरूर हंसना पड़ेगा

सिर का हंसना बोलो सती सुलोचना की जय

सुलोचना राम से अच्छा प्रभु अब आ ादीजिए

और पति के करने दीजिए

राम सुलोचना से हो सती सुलोचना तुम

हो निसंदेह

जो स्त्रियां छल कपट छोड़कर सच्चे मन से पति की

सेवा करती है

वह संसार में यश प्रा तकरके भवसागर तैरती ह....

पर्दा...

रावण का दरबार चालू

रावण मंत्री से मंत्री जी कल को सारी सेना को

आ ाजारी करो

कल मुझे राम को करना है

म आज प्रति ाकरता हूं

जब तक राम का सीर काट ना लाऊंगा तब

तक चैन से नहीं बैठूंगा

मंत्री रावण से लंकापति नरेश आप कुछ चिंता न करें

अभी आपके एक बेटा और भी है जो पाताल लोक में

रा यकर रहा है आप उसे शिव मंत्र से उसे यहां बुला

सकते ह

रावण मंत्री से ठ के तुम सब जाओ और मुझे अब शिवमंत्र करने दो

सबका जाना

रावण का मंत्र पढ़ना ओम भूर्भुव   भग देवस्य धीमहि धियो यो न ओम शिव मंत्रजाप आए नमः तमेव माता च पिता त मेव बंधु च सखा तमेव तमेव वि याद्यदरणीमय तमेव तमेव सखे सुखम देव देव ओम

हई रावण अपने पिता रावण से प्रणाम पिता जी
तुमने मुझे किस लिए याद किया है
और अब किसको जीतने का निश्चय किया है
रावण हई रावण से खड़े होकर तुम आ गए बेटा
आओ पधारो
और मेरे दिल की यथासुनाऊ

हई रावण रावण से कहो पिताजी कुशल तो हो ऐसा
 यासंकट आया है
जो मुझे इतनी शी तासे बुलाया है

रावण अहिरावण से उदास होकर याबताऊं बेटा

कुछ समय से अयो यके दो राजकुमार पंचवटी पर आए हुए

एक दिन उन मूख ने तु हारीबुआ शूर्पणखा के नाक कान काट डाले

जब खर-दूषण उसकी सहायता के लिए गए तो उनको भी मार डाला म मेह समाचार पाया तो

राम की स्त्री सीता को चुरा लाया इसी छेड़-छाड़ में

कुंभकरण मेघनाथ कुमार आदि योद्धा मारे गए

इस बदले की भावना ने मुझे याकुलबनाया है

इसीलिए तु हेंबुलाया है

हई रावण रावण से पिताजी और नीति को

छोड़कर कुमार्ग पर चलने में भलाई नहीं है

पिताजी मेरा आपके सामने बोलने का नहीं था

फिर भी म मेह सच्ची बात कही है

रावण अहिरावण से बेटा म नेु हेंउपदेश देने के लिए नहीं

सहायता करने के लिए बुलाया है और बेटा होकर

तुमने यही निभाया है

हई रावण रावण से ऐसा ना कहो पिताजी

म तु हारेलिए प्राण भी दे सकता हूं अच्छा पिताजी

तुम अब बताओ याचाहते हो

रावण हई रावण से है बेटा तु हें देवी का वरदान

ह कि तुम हनुमान के अतिरि तऔर किसी से ना

मारे जाओगे

इसीलिए प्रातकाल संग्राम में चले जाओ

और तथा राम को ठिकाने लगाओं

अहिरावण रावण से इससे तो यही अच्छा है

अब रा त्रमें दोन को चुरा ले जाऊं और देवी के भेंट

चढ़ाऊं जिससे सारा काम बन जाए

और देवी भी खुश हो जाए

रावण हई रावण से हंसकर वाह वाह बेटा वाह

यह और भी सुंदर है

अच्छा आधी रा त्रका समय आने वाला है

इसलिए रामा दल में चले जाओ और मन का भय

मिटाओ

हई रावण रावण से अच्छा पिताजी म जाता हूं

जब तु हेंप्रकाश दिखाई दे तो जान लेना

हई रावण राम को हर कर ले जा रहा ह

रामचं जी का क सम सुग्रीव हनुमान

अंगद

राम विभीषण से यार्विभीषण जी अब तो रावण के

पास रही यागया होगा

या तो जानकी जी को लेकर

रावण शरण में आएगा

या और योद्धाओं की तरह

आप भी मारा जाएगा

विभीषण राम से नहीं भगवन अभी उसके बेटे और

भी ह

और सगे संबंधीय की तरफ भी नजर दौड़ा अएगा

राम विभीषण से याउसके बेटे और भी ह

विभीषण राम से हां भगवन अभी उसके दो और बेटे

बाकी है

एक तो पाताल लोक में रा यकरता है

और दूसरा बहूबली पुर में सा । यकरता है

हनुमान राम से भगवन अभी आधी रात होने को आई है

आपकी याआ ।

राम हनुमान से अच्छा सब आराम करें

हनुमान तुम पहरे पर सावधान रहना

हनुमान राम से भगवन आप निश्चिंत होकर सो जाइए

..... सबका सो जाना आधा पर्दा करना

अहिरावण स्टेज पर आकर

ओहो भीतर कैसे जाऊ

और कौन सी युि तसे राम को चुराऊ .

मेरा शत्रु वानर बड़ी सावधानी से पहरा दे रहा है

और अपने प्रकोप में सब ले रहा है

कुछ सोचकर अब यही उचित है

की विभीषण का भेष बनाऊ

और बंदर को धोखा दे

परकोट में घुस जाऊं

हई रावण की जगह विभीषण का आना

पर्दा खुलना

विभीषण का आना हुआ भवसागर से पार करो

हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम काठ की माला हाथ में लंगड़ा कर चलना

हनुमान का बोलना कौन हो तुम वहीं खड़े रहो आगे कहां आते हो

हई रावण हनुमान की जय हो प्रभु जानकी नाथ की जय हो ....

आगे की लाइट ऑफ करनी है

हनुमान हई रावण से कौन हो भाई आधी रात को रामा दल में   या काम है

हई रावण हनुमान से हनुमान जी आप मुझे जानते नहीं म हूं विभीषण

हनुमान खड़ा होकर हई रावण से   यारेविभीषण जी आप इस समय तक कहां थे

हई रावण हनुमान से हनुमान जी आप मुझे जानते नहीं म हूं विभीषण

<u>हनुमान हई रावण से मुझे कुछ संकोच है</u>

<u>विभीषण की तीन निशानी है</u>

<u>वह आप मुझे दिखाएं और बताएं कि आप कहां से आ रहे ह</u>

हई रावण हनुमान से यारेहनुमान जी आप निशानी देख सकते ह और म समुंदर तट पर सं यक्रने चला गया था

वहां कुछ देर हो गई.....

तीन निशानी पूछना नंबर एक लंगड़ा कर चलना नंबर दो माला में 108 मनके नंबर 3 विभीषण की पर काला तिल था

हनुमान हई रावण से अच्छा यारेविभीषण चले जाइए

क में अहिरावण का बैटरी से दोन को अचेत करना और राम को उठाकर रफूच करहोना

कुछ देर बाद सब का उठना और इधर उधर देखना

हनुमान सुग्रीव से महाराज भगवन कहां है ना ही

जी दिखाई देते ह

सुग्रीव हनुमान से हनुमान जी पहरे पर तो आप ही

थे यरात को कोई आया था

हनुमान सुग्रीव से यबताऊं महाराज रात को और

तो कोई नहीं आया था

केवल विभीषण जी सं यकरके लौटे थे

विभीषण नहीं नहीं म तो यहीं पर था

हनुमान विभीषण से यह आप कैसे कह सकते ह

मै ने आपको जब आधी रात को आऐ तब देखा

है

यही रूप और यही बोली.

विभीषण हनुमान से बस म समझ गया प्रभु को

पाताल का राजा

हई रावण हर कर ले गया

संसार में बस वह इतना चालाक रा सहै

जो मेरा रूप और बोली बोलना जानता है

अंगद विभीषण से उदास होकर

तो अब यहा होगा प्रभु को कैसे ढुडं पाएंगे

विभीषण अंगद से बस जिसमें बल हो वह सीधा

पाताल लोक जाएं और हई रावण को मार कर प्रभु

को छुड़ा लावे

सुग्रीव विभीषण से तो ऐसा काम हनुमान के सिवा

और कोई नहीं कर सकता

हनुमान सुग्रीव से हां हां म ही जाऊंगा और चौदह

भवन और तीन लोको में जहां भी ह व्हीं से खोज

लाऊंगा

सुग्रीव हनुमान से हो केसरी नंदन तुम हो

हनुमान सबसे अच्छा म जाता हूं तुम सब यहां

सावधान रहना

9 दिन शुरू पाताल नगर का वार

राम राम हनुमान का दंगल में से आना और स्टेज

पर का रोकना

हनुमान से कौन है जी इस तरह नगर में घुसा जा रहा है

हनुमान से तू कौन है जो मार्ग म रोडा अटका रहा है

हनुमान से तू जानता नहीं म पवन पुत्र ..हनुमान का पुत्र हूं

हनुमान से हैरान होकर है है याकहा हनुमान का पुत्र तेरा नाम याहै

मकर हनुमान से

हनुमान से अरे मूर्ख ऐसे खोटे वचन य बोलता है
मेरे में भी पुत्र नहीं है

हनुमान से तो याआप ही हनुमान है

हनुमान से हां पवन पुत्र हनुमान म ही हूं और तूने ऐसी झूठ बात य बनाई

हनुमान से पिताजी यह झूठ बात नहीं है

म ब कुल कह रहा हूं

सुनिए जिसमें आप लंका को जला कर समुंदर के ऊपर से उड़ते हुए जा रहे थे

उस समय आप के शरीर में से पसीना टपक कर समंदर में जा गिरा और उसे एक मछली ने निगल लिया

बस उसी के से म ने पाया और फिर हई रावण की सेवा के लिए पाताल लोक चला आया

हनुमान से हे पुत्तर देर होने से काम बगड़़ाएगा इसीलिए मुझे तू जाने दे

हनुमान से नहीं पिताजी म विश्वासघात नहीं कर सकता आप वापिस लौट जाइए

म कदापि भीतर नहीं जाने दूंगा

हनुमान से अरे हट मेरा रास्ता छोड़ दीवार की तरह य अड़ा खड़ा है

हनुमान से आगे अकड़कर नहीं महाराज यह नहीं हो सकता या तो मुझे मल युद्ध में हराना होगा

नहीं तो वापिस जाना होगा

हनुमान से अच्छा तो आ पहले तेरा बल ही देख लु

दोन का ही मल युद्ध होना

का हार जाना मकर को रस्सी से बांध कर आगे प्रवेश करना.... पर्दा उठना ....

देवी का भवन

भवन में हनुमान का बैठ जाना

हई रावण मंत्री से मंत्री जी अब देवी को खुश करने के लिए सब पुजारिय को बुलाया जाए

मंत्री हई रावण से जैसी आ ाहो महाराज

हई रावण मंत्री से जाओ उन दोन तपस्विय को ज दीले आओ देवी भेट लेने के लिए बड़ी देर से खुश है

मंत्री हई रावण से जैसी आ ाहो महाराज

राम को लाना पद पर

हई रावण मंत्री से मंत्री इन से पूछ लिया जाए कुछ खाना हो या किसी से मिलना हो या किसी को

बुलाना हो तो यह कार्य हम कर सकते ह अब इनका आखरी है

मंत्री राम से तु हेंकुछ खाना है या किसी को बुलाना है तो हम उसे भुला सकते ह
और आपकी इच्छा पूरी कर सकते है

राम मंत्री से ना मुझे कुछ खाना है ना किसी को बुलाना
बस आप मेरी तीन आवाज मेरे छोटे भाई भरत को लगा दीजिए.

मंत्री का आवाज लगाना कोई भरत लाल आयो या का रहने वाला हाजिर हो
आज तु हारेभाई मरते समय याद कर रहे ह

तीन आवाज देना इसी तरह

मंत्री से तु हेंकुछ खाना हो या किसी को भुलाना हो तो हम आपकी इच्छा पूरी कर सकते है

मंत्री से मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं
आप तीन आवाज हनुमान को लगा दीजिए

मंत्री का आवाज लगाना कोई हनुमान मेरी आवाज सुनता हो तो हाजिर हो

आपको मरते समय याद कर रहे ह

तीन आवाज इसी तरह लगाना

तीसरी आवाज पर हनुमान का बाहर आना गरज कर बोलो सियापति रामचं की जय

हई रावण हनुमान से कौन हो तुम

हनुमान हई रावण से तेरा काल औ दु ट

हई रावण हनुमान से चल हट मेरे कार्य में वि न्ना डालं

हनुमान हई रावण से औ दु त्पापी चंडाल

लात मारकर अब में डेरा डाला

दोन की लड़ाई हई रावण का मारे जाना

राम को कंधे पर बैठाकर ले जाना

रावण का दरबार

रावण मंत्री से हंसकर रा क्रे प्रकाश से सिद्ध होता की

हई रावण उन दोन तपस्विय को चुरा कर ले गया

और सारी वानर सेना को धोखा दे गया

हंसकर वाह मेरे बेटे वाह वाह.... .

दोहा राम तो है चीज या

काल भी भयभीत हो

जिसके ऐसे बेटे हो

य नहीं उनकी जीत हो हाहाहाहाहाहा

दूत रावण से महाराज की जय हो श्रीमान हो गया

रावण दूत से याहुआ य इतने घबरा रहे हो

दूत रावण से महाराज आपका बेटा हई रावण

हनुमान के हाथ मारा गया

रावण दूत से बड़ा हुआ

दोहा अफसोस आरजुओं की

बस्ती उजड़ गई

कैसी बनी थी बात

बनकर बगड़ाई

उदास होना

मंत्री रावण से महाराज शांति कीजिए इतने निराश न होइए

रावण मंत्री से महामंत्री जी अब किस बात पर शांति करूं और कैसे धीर धरू

मंत्री रावण से महाराज जरा विचार न कीजिए आपका पुत्तर बली नारायण तक

बहबलीपुर में रा यकर रहा है
जिसे आपने ने पैदा होते ही
समुं में बहा दिया था
रावण मंत्री से शाबाश मंत्रीवर खूब याद दिलाया और
एंन मौके पर याद दिलाया
अच्छा तुम ज दीजाओ
और उसे सब हाल सुनाकर
ज दीबुला लाओ

मंत्री रावण से जैसी आ ाहो महाराज

नारायण तक दरबार

नारायणतक मंत्री से महामंत्री दरबार में गाने वाली

पेश करो .

मंत्री नारायणतक से जो आ ामहाराज

गाने वालीे दरबार में हाजिर हो

नारायणतक गाना सुनकर

मेरी धडकनो ने कंपा दिया है

लोक और सुर धाम को

जानते ह सारे आज नारायणतक के नाम को

मंत्री नारायणतक से महाराज की जय हो

लंका से एक दूत आया है

जो आपके नाम संदेश लाया है

मंत्री नारायणतक से कुछ नहीं पूछो महाराज आज

लंका पर बड़ी आपत्ति आई है

शत्रुओं की सेना चार ओर से मंडरा रही है

नारायणतक दूत से ऐसा कौन है हीऐ का अंधा है

जिसने पर युद्ध करने की ठानी है

दूत नारायणतक से महाराज

राम और दोन अयो यक्रे राजकुमारो ने

बढ़ा ही कर डाला

और लंका के सारे योद्धाओं को

मार डाला

इसलिए हमें तु हारीसहायता की जरूरत है

इसीलिए महाराज आप हमारे साथ चलें

नारायणतक दूत से अछा दो राजकुमार का इतना

साहस की किसी का भी भय ना खाऐ

अच्छा मै इसी चलता हूं

दोहा कौन है जो आ गए

तगं अपनी जान से

नासमझ बाजी लगा बैठे

अपने प्राणो से

मौत से टकराएगा तो

नाश होता जाएगा

सामने जो आ गया

भूमि पर सोता जाएगा

रामा दल सुग्रीव विभीषण राम हनुमान

अंगद

विभीषण राम से महाराज की जय हो

है प्रभु रावण का पुत्र नारायण तक

लड़ने के लिए आ रहा है

शायद रावण उसे बुला कर लाया है

राम विभीषण से हैरान होकर यारावण का कोई

पुत्तर नारायण तक भी है भी है

विभीषण राम से है भगवन आजकल वह बहबलीपुर

का राजा है और बड़ा परा मीयोद्धा है

राम हनुमान से अच्छा यारेहनुमान जी तुम

सहित चले जाओ और मार्ग में उसका

अहंकार मिटाओ

हनुमान राम से जैसी आ ाहो प्रभु दोन का लड़ाई

में जाना

नारायणतक मंत्री से हनुमान को देखकर मंत्री जी

यह कौन है जो सामने से अकड़ता हुआ आ रहा है

मंत्री नारायणतक से महाराज यह

हनुमान नाम का एक बंदर है और यह बड़ा वीर है

ईसी ने एक बार लंका को जलाया था

और हईरावण को मारकर दोन भाइय को बचाया है

नारायण तक मंत्री से हंसकर हा हा हा अब अच्छा

हुआ पहले मुहूर्त पर ही शिकार मिल गया

हनुमान नारायणतक से और दु   टइतना   य उछल

रहा है देखता हूं तुझे कौन बचाता है

दोन की लड़ाई हनुमान का बेहोश होना

नारायण तक से बस बस वो कायर   य

इतनी बातें बना रहा है यदि वीर है तो

य नहीं दिखाता

नारायण तक   से अरे मूर्ख यह वह मेघनाथ

नहीं जो तु   हारेधोखे में आ जाएगा

दोहा चाहता है जी तेरा जाने को यम के धाम को

छोड़ जाएगा यहां रोता हुआ राम को

नारायणतक बस बस जो अ   यायअब

जीवन की आस छोड़ दे

दोहा खेर थी जब तक तुझे

रावण ने बुलाया ना था

जी रहा था तब तलक

सामने तू आया नहीं था

दोन की लड़ाई का मूर्छित होना

सुग्रीव नारायण तक से वो कायर यातो अब बच

कर जाएगा

रावण को बुला तेरी लाश उठाकर ले जाएगा

नारायण तक सुग्रीव से अब सामने आ गया है तो

अपना कुछ परा मदिखा

दोहा तू तो चीज ही याहै

जब योद्धा मारे जाते ह

इसलिए दुनिया से कैसे सुरमा जाते ह

दोन की लड़ाई सुग्रीव का राम के पास पहुंचना

सुग्रीव राम से भगवन आज नारायण तक ने तो बड़ा

ही कर रखा है

राम सुग्रीव से यारेसुग्रीव घबराओ नहीं म ही उस दु क्ा अभिमान तोड़ूंगा

राम से हां भैया उस दु क्ा ज दीसंहार कीजिए
और वानर सेना की शांति का उपाय कीजिए
नहीं तो वो दुस्ट सबको साहस हीन कर देगा

राम सबसे तुम घबराओ मत म अभी उस पापी का सिर काट कर दिखाता हूं

राम का लड़ाई में जाना अंदर से नारद मुनि का आना

नारद नारायण नारायण नारायण नारायण

राम नारद से प्रणाम मु नीव्र आइए मुनि जी पधारिए
नारद राम से नारायण नारायण नमस्कार भगवन कहिए इतने रा ज्ञक याविचार हो रहा है
राम नारद से याबताएं मुनि वर कई दिन से युद्ध हो रहा है
परंतु रावण का बेटा नारायण तक मरने में नहीं आता है

नारद राम से यह इस तरह से नहीं मरेगा इसे मा

का वरदान है इसलिए यह एक ही उपाय से मर

सकता है

राम नारद से रहे याउपाय है मुनिवर

नारद राम से सुनिए भगवन कथा एक समय रावण

के रा यमें 72 रा सपैदा हुए

तो रावण ने अपने गुरु शु ाचार्यको बुलाकर

शगुन पूछा

शु ाचार्यने कहा कि इस के बालक मुलो से

हुए यदि घर में रहेंगे तो अपने पिताओं का

नाश कर देंगे

यह सुनते ही रावण ने सबको समुंदर में डलवा दिया

परंतु वह बालक वटवृ के सहारे पलने लगे

उ ह बड़े होने पर म्मा का तप किया तो

म्मा ने प्रस न्होकर उ हें बहबलीपुर में बसा

दिया

उ ह रावण के पुत्र नारायनतक को राजा बना

दिया उ हीं के साथ उसी जगह सुग्रीव का बेटा भी

तप कर रहा था

एक दिन नारायणतक ने ददीबल को खूब मारा

तो ददीबल ने बदला लेने के लिए म्मी का तप किया

तो म्ने खुश होकर वरदान दिया कि जाओ

तु हारेहाथ से नारायण तक की मृत्यु होगी

हे भगवन आप सुग्रीव के बेटे ददी बल को बुलाएं और

इस रा सको ठिकाने लगाएं

राम नारद से परंतु हे मुनिवर अब ददीबल रहता कहां है

नारद राम से भगवन वह धौलागिरी पर आप का भजन कर रहा है

राम हनुमान से यारेहनुमान जी आप ज दीजाएं और धौलागिरि से ददीबल को ले आए

हनुमान राम से जैसी आ ाहो भगवन

हनुमान का ददीबल को बाहर की तरफ़ से लेके आना

ददी बल राम से चरण में गिरकर

कृपासिंधु भगवन की जय हो

राम ददीबल से चिरंजीव रहो ददीबल

ददीबल सुग्रीव से प्रणाम पिता जी

सुग्रीव ददी बल से चिरंजीव रहो पुत्तर कहो बेटा
कुशल से तो हो

ददीबल सुग्रीव से हां पिताजी प्रभु का अनुग्रह और
आपका आशीर्वाद है
सुग्रीव ददीबल से हे बेटा तुम जानते ही हो कि
आजकल नारायण तक से युद्ध चल रहा है
वह तु हारेहाथ ही मारा जाएगा

ददीबल सुग्रीव से पिता जी आप फ़ि ना करें म उस
दु टको कदापि नहीं छोड़ूंगा

युद्धभूमी नारायण तक और ददीबल

नारायण रामा दल गरज कर आओ सिंग के शिकार
अपनी अपनी गुफाओं से निकल कर आओ

दोहा जी चुके बहुत
अब प्राण की र ा छोड़ दो
नाश का दिन आ गया
जीने की आशा छोड़ दो

ददीबल नारायण तक से   यार मित्र नारायण तक कहो आनंद से तो हो

नारायणतक ददीबल से कोन ददीबल कहो तुम यहां कहां

ददीबल नारायण तक से म   सुना है कि आप रावण का   ले कर तुम भी भगवन से बैर करने चले आए

नारायण तक ददी बल से   यार दधीबल हम दुश्मन से प्रीत नहीं किया करते और ना बैरी का कभी मान लिया करते
यह रीती भी तुमने ही निकाली है जो अपने बाली के शत्रु कोअपनी   आबरु बेच डाली है

ददी बल नारायणतक से अरे मुर्ख तेरी नीति कूल का मान नहीं कूल नाश करने वाली है

दोहा रखकर लंका की आशाओं को रोने से बचा
तू बचा सकता है तो कुल का नाश होने से बचा

नारायणतक ददीबल से

बस बस म समझ गया कि तु मेरी नरमी से नहीं मानेगा

मेरे हाथ को देगा

दोहा इस परम शि ाका फल सिखाता हूं तुझे
देख अब भूमि की स ्यार सुलाता हूं तुझे

ददी बल नारायण तक से अच्छा यदि तेरी यही इच्छा है तो
आ शि ाके वारा नहीं मानता तो संग्राम के वारा अपने बुरे कम का फल पा

दोन की लड़ाई नारायण तक का मारा जाना इसी सीन पर

राम ददीबल से हो ददीबल तुम हो तुम ने बड़ी वीरता का काम किया और सब की चिंता को हर लिया है

पर्दा बंद

रावण का दरबार

रावण मंत्री से मंत्री दरबार में गाना पेश किया जाए जिससे हमारा रंग जमीन और दिल की कली खली जाए

मंत्री रावण से जैसी आ ाहो महाराज

गाने वाली बुलाकर और गाना सुन कर

रावण मंत्री से याामंत्री वर आज बड़ा खुशी का दिन है

आज मेरा बेटा नारायण तक लड़ाई में गया है राम और का सिर काटेगा हा हा हा

दूत रावण से महाराज की जय हो नारायण तक लड़ाई में मारा गया

रावण दूत से याबकते हो तु हारीजबान ठिकाने नहीं है

दूत रावण से म सच कह रहा हूं महाराज

रावण दिल में बड़ा ही हुआ है ऐसे ऐसे यि त लड़ाई में मारे गए अफसोस

रावण मंत्री से महामंत्री सताकी इसी समय सेना को तैयार करो

म देखता हूं वह तपस्वी के बच्चे कितने गहरे पानी में है

मंत्री रावण से जैसी आ ाहो महाराज

रावण का लड़ाई में जाना

रामा दल

राम सुग्रीव हनुमत
विभीषण अंगद जामवंत

सुग्रीव राम से भगवन आज तो रावण समय लड़ाई के लिए आया है इसीलिए बादल सा छा रहा है

राम सुग्रीव से यारसुग्रीव कोई चिंता की बात नहीं आ खरावण कोई खुदा तो नहीं

रावण ललकार कर जरा सामने आओ आज तुझम किस की मौत की बारी है

हनुमान रावण से खबरदार होजा य इतना उछलता है

रावण हनुमान से बुज दिल होशियार हो जा य इतना अकड़ता है

हनुमान रावण से तू भी मरने के लिए तैयार हो जा दोन की मल युद्ध से लड़ाई

रावण ने हनुमान को मु   कामारना हनुमान का जमीन पर हाथ टिकना

हनुमान का रावण के मु   कामारना रावण का पीछा जमीन पर टिकना

हनुमान का हनुमान का बेहोश होना

रावण से संभल जा अब तेरे काल का संदेश आ गया

रावण   से आ गया मुझे भी अफसोस था कि तू मेघनाथ को मार कर जिंदा चला गया

रावण से बाण छोड़कर मेघनाथ को तो तूने रो लिया लेकिन तुझे कौन रोएगा

रावण   से वो होशियार हो जा

रावण से वोअधम मरने को तैयार हो जा

दोन   की लड़ाई   का मूर्छित होकर गिरना

सुग्रीव रावण से औ बेईमान   य शेर की तरह विफर रहा है तुझे पता नहीं तेरे सामने सुग्रीव अड़ रहा ह

रावण सुग्रीव से हा हा यह दूसरे तीस मारखा बोले बाप ने मारी मेंढकी .बेटा तीरंदाज अपनी स्त्री के लिए सिर घूमता रहा अब अंगुली के खून लगा कर शहीद में शामिल होना चाहता ह भुजदील कहीं का

सुग्रीव रावण से अधिक बक बक न लगा वीर की तरह मुकाबले पर आ

दोन की लड़ाई सुग्रीव का मूर्छित होना

रावण का एक तरफ होना

विभीषण रावण से भगवन युद्ध में बड़ा घमासान हो रहा है

जिस और रावण का हाथ घूमता है सब को किए बगैर नहीं रहता है

राम विभीषण से यार्विभीषण रावण एक प्रत्य काल है

अब वह सिर पर कफन बांध कर आया है

मगर अब रावण को जितनी देर जिंदा रहना था रह लिया

अब यह सुरपुर की हवा जरूर खाएगा

राम विभीषण का लड़ाई में जाना

रावण राम से गरज कर आओ तपस्वी आज म तेरे

खून से अपने बेट का बदला लूंगा

दोहा बाघ कर जान छिपने से

बच सकती नहीं

आज बचाएे तुझे

ऐसी कोई शि तनहीं

राम-रावण से हे रावण तू इतनी भूल कर रहा है

यदि किसी से भी नहीं डरता तो मृत्यु के   से

तो डर

दोहा नाश होने से तू अपने को बचा सकता नहीं

जान ले रावण की

ओर को मिटा सकता नहीं

राम का गाना रावण से मिलमा दशानन हो

होशियार अब जाएगा मारा

रावण तपस्वी को हो होशियार आ गया काल तु   हारा

राम वीपर जी साधो अपनी ि   याको

सूत समझाने   त्रयको

चुरा रघुकुल की नार वंश किया

सारा़ाााााााा

रावण जो विप्रो की राजदुलारी

कह उ हमहतारी

तेरा याथा अधिकार नाक कर डाला

राम मांगे थी कामदेव की भि ा

इस हेत देई थी शि ा

कह सूत्र को भरतार आप तने थी धारा़ाााा

रावण बहना को कुटिल बताते

और अपना दोस् छिपाते

जान तुझे बदकार पिता ने घर से टारा़ाााााा

राम अब वाद विवाद मिटाओ

ले शस्त्र युद्ध में आओ

करूं म तेरा उद्धार हो भव नील से पारा़ाााा

रावण म युद्ध करू डट डट के

नहीं भागू रण से हटके

खुला मु तका वाराकोई न रोकन हारा़ाा

रामायण पेज 188

रावण राम से नाटक हे तपस्वी तु मुझे या ान

सिखाता है

अरे मूर्ख देख म सेब देवताओं की बगाड़ी

के देवता भी मेरी इच्छा से अपना पेट पालते ह

राम-रावण से वो हठधम अब वो दिन जा चुके और

विनाश के देवता तेरी   दबा चुके

हो पापी होशियार हो जा

म यह पहला बाण तुझे   ।   मप्रणामझकर चरण में

नमस्कार करता हूं

रावण राम से तू भी होशियार हो जा और मरने के

लिए तैयार हो जा

दोन की लड़ाई रावण का नहीं मरना

सुग्रीव राम से भगवन ज   दी   कीजिए

राम सुग्रीव से   याकरूं सुग्रीव इस दु   के जितने

सीस काटता हूं उतने ही   हो जाते ह

विभीषण राम से भगवन इसने कई बार शीश काट

काट कर भगवान शंकर का पूजन किया है इस तरह

नहीं मर सकता

राम विभीषण से तो अब फिर   याकरना चाहिए

विभीषण राम से सुनिए भगवन

दोहा इस तरह यह नहीं मर सकता किसी हथियार से
तीर से बछ भाला ढाल से और तलवार से
नाभि में है इसके अमृत कुंड जानना चाहिए
यह मरेगा तब इसे पहले सुखाना चाहिए
राम विभीषण से ओहो यह भेद अब अ नबाणसे
इस कुंड को सुखाता हूं और भूमि का नाश मिटाता हूं

दोन की लड़ाई रावण का बेहोश होना

राम भैया य यपिरावण से हमारी तकरार थी फिर भी पुराना तजुब कार था आप इनके पास जाओ और उपदेश ले लाभ उठाओ

राम से जी जैसी आ ाहो भगवन

रावण के सिर की तरफ खड़े होना

रावण से लंकेश हमारी तु हारीजो दुश्मनी थी वह समा त्हो गई अब हमें उपदेश देकर कृतार्थ करें रावण चुप

राम से भैया नीति का उ लंघनकर के उपदेश कैसे पा सकते हो गुरु का निरादर कर के लाभ कैसे उठा सकते हो
जाओ चरण की ओर खड़े हो कर पुकारो

राम से बहुत अच्छा भगवन

रावण से पैर की तरफ खड़े होकर महात्मन मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिए कोई शि । दीजिए

रावण से आंखें खोलकर वीर तुम स यअपने ।नसे जगत का क याणकरते हो किंतु मेरा अनुभव करके मेरा स मानकरते हो तो अच्छा सुनो

रावण का दोहा सिखाना ।नतुमको
दीप सूरज को दिखाना
तु हारी ।नशि तको
वेद ने बखाना
सुनना सीख अपन की
न यातनीति पर
महा कुल स मानखोना
की जड़ कटाना है
समझना बल अधिक अपमान सदा अभिमान में रहना
यह अपने आप पैर पर कु हाड़ीचलाना है
बुरा है काम काम छोड़ देता कल पर

भंवर में बीच के खुद अपनी नौका को गिराना है

रावण से हो ानके पुंज रावण तुम

हो

रावण से अच्छा व भैया विभीषण

याभेगवन म तु हारेकहे में आता तो आज यह

दिन नहीं देखना पड़ता भगवन अब बोला नहीं जाता

प्राण पखेरू उड़ना चाहते ह अच्छा हाय राम राम राम

विदा

रावण का समा त्होना

जय श्रीराम जय श्रीराम जय श्रीराम

प्रदीप कुमार घोड़ेला अनिल सिंह काटीवाल और सुनील हौदखासिया